યુગવીર આચાર્ય

શ્રી વિજયવલ્લભસૂરિજી

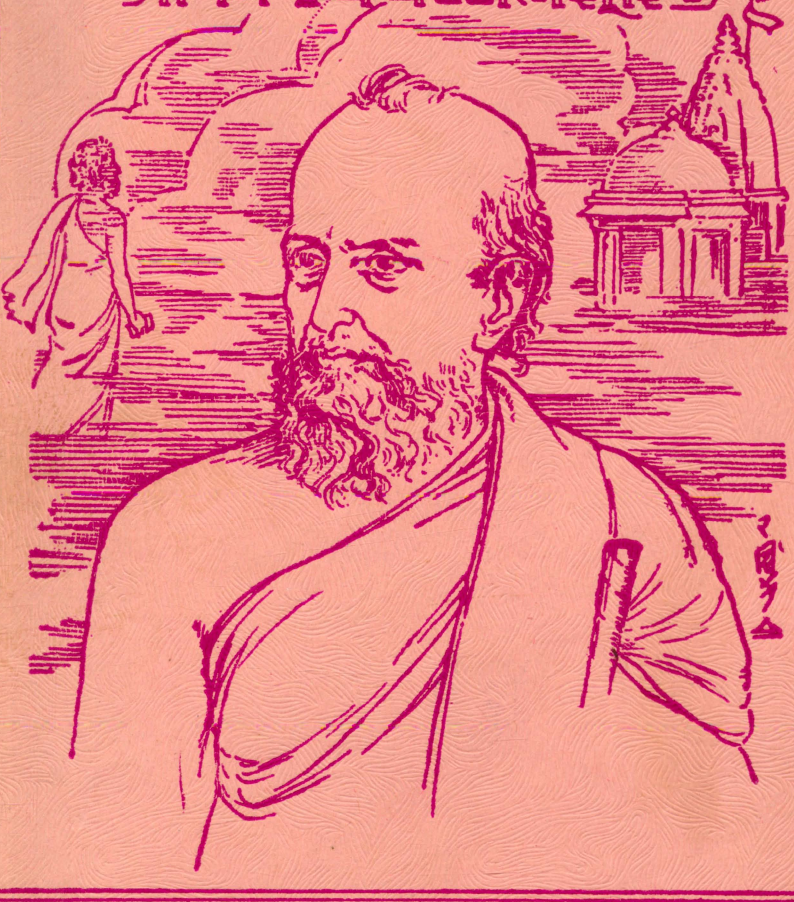

મહુવાકર

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

समाज की काया पलट करनी है?

जैन समाज के दानवीरों का धर्म है कि लक्ष्मी की चंचलता समज कर समाज कल्याण के काम करते रहें—

विश्वविद्यालय एक एसा विद्या-विहार बनेगा जिससे विद्वानों, वक्ताओं, पंडितों, कार्यकर्ताओं, समाज सेवकों और साहित्यकारों की वृद्धि होगी। कोलेज, समृद्ध ज्ञानमन्दिर, पुरातत्त्व-मन्दिर, साहित्य प्रकाशन और संशोधन आदिसे विश्वविद्यालय विश्वमें ज्ञान का प्रकाश फैला कर जैन धर्म का विजय-ध्वज लहरायेगा।

वल्लभ-वाणी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

युगवीर आचार्य

भाग ४

शासन प्रभावक पंजाब केशरी समाज कल्याण साधक

आचार्य श्री विजय वल्लभसूरीश्वरजी

की

हिन्दी पत्रधारा और सन्मान–पत्रों

: संपादक :

फुलचंद हरिचंद दोशी

महुवाकर

नियामक : श्री यशोविजयजी जैन गुरुकुल : पालीताणा

: प्रकाशक :

श्री आत्मानंद जैन सभा : बम्बई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

: प्रकाशक :

श्री जगजीवनदास शीवलाल शाह

श्री केशवलाल दलीचंद शाह

मानद् मंत्रीओ,

आत्मानन्द जैन महासभा–बम्बई

आत्मा सं. ६१

वीर सं. २४८२

मूल्य : २–८–०

चारों भागका रु. १०

: मुद्रक :

महेता अमरचंद बेचरदास

श्री बहादुरसिंहजी प्रीं. प्रेस

पालीताणा (सौराष्ट्र)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शांतमूर्ति आचार्यश्री—
विजयसमुद्रसूरीश्वरजी महाराज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

❀ अर्पण ❀

अनन्य गुरुभक्त सेवामूर्ति आचार्य प्रवर

श्री विजय समुद्रसूरीश्वरजी

परम पूज्य गुरुदेव की जो सेवा आपश्रीने जीवन भर
की है स्मरणीय रहेगी। आपने गुरुदेव के संदेश को
अपनाया है और आखीरी संदेश का पालन करने
लिये प्राणप्यारा पंजाब को पल्लवित करने के लिये
जा रहे हैं। कच्छ, जामनगर, जूनागढ होकर
तीर्थाधिराज शत्रुंजय में श्री प्रसन्नचंदजी
कोचरने गुरुभक्ति निमित्त जो श्रीपार्श्व
वल्लभ–विहार का निर्माण किया है
उसकी प्रतिष्ठाके लीये पधारे हैं,
में आपका परम प्रभावक
प्राणप्यारा गुरुदेव की
हिन्दी पत्रधारा का
संदर्भ आपके
करकमल में
समर्पित
करता
हूँ।

फूलचंद हरिचंद दोशी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

युगवीरनी जीवन-प्रभा

ना

विशेष तेज किरणो

तैयार थाय छे.

पांचमो भाग : बीकानेरथी मुंबईना समाज, शिक्षण, साहित्य अने धर्म उद्योतना कार्योनी यशगाथा

२५००-३००० पृष्ठोने आवरी लेती

जीवन-गाथा

ने

पाने पाने

संघ, समाज, शिक्षण, साहित्य, कर्मण्यता,
सेवा, धर्मोद्योत, संगठनना क्रान्तिकारी

अमर संदेश

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शा. जसराजजी धनरुपजी : बम्बई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शा. सरदारमलजी मगनीरामजी : बम्बई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आ मु ख

महुआकर श्रीयुत भाई फूलचन्दजी दोशी, नियामक श्री यशोविजयजी जैन गुरुकुल पालीताना ने जैनाचार्य श्री विजयवल्लभ सूरिजी महाराज की जीवनप्रभा लिख कर प्रकाशित की है और आपके पत्रों का संग्रह किया है। गुजराती पत्रों का एक भाग प्रकाशित हो चुका है। यह चौथा भाग हिन्दी पत्रों का है। आचार्यश्री के महत्वशाली पत्रों का संग्रह करना आवश्यक काम है, और भाई फूलचन्दजी इस काम के लिए योग्य व्यक्ति है। आप श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला में आरम्भ में छ साल सेवा कर चुके हैं और श्री आत्मानन्द जैन महासभा पंजाब के उत्साही सदस्य रह चुके हैं। उनका जीवन जैन शिक्षण संस्थाओं की सेवा में व्यतीत हुआ है। आचार्यश्री से उनका विशेष सम्पर्क रहा है। आप परम भक्त और कर्तव्य परायण विद्वान, समाज सेवक और वक्ता हैं। इस लिए आशा की जाती है कि वह पत्र संग्रह के कामको भली प्रकार सम्पूर्ण कर सकेंगे। ताकि यह अमूल्य सम्पत्ति सदाके लिए सुरक्षित रहे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन धर्मभूषण पंजाब केसरी जैनाचार्य श्री विजयवल्लभ-सूरिजी महाराज एक प्रसिद्ध विद्वान, उच्च कोटि के विचारक, वक्ता और लेखक हुए हैं। उनका कार्यक्षेत्र कश्मीर से दक्षिण तक और बम्बई से कलकत्ता तक विस्तृत था। आचार्यश्री का जन्म बडौदा में विक्रम संवत् १९२७ कार्तिक सुदि दूज को हुआ। दीक्षा राधनपुर में विक्रम संवत् १९४३ वैशाख शुद १३ को हुई। आचार्य पद लाहौर में विक्रम संवत् १९८१ मागशर शुद ५ को हुआ। स्वर्गवास बम्बई में विक्रम संवत् २०१० भादरवा वद १० को हुआ। इस प्रकार चौरासी (८४) वर्ष की आयु में आपने ६७ वर्ष अखण्ड दीक्षा एक आदर्श जैन मुनि की पाली। आपका तप और त्याग, शीतल स्वभाव, नम्रता, गम्भीरता, धीरता और वीरता प्रशंसनीय थे। आप गुरुभक्ति और विश्व प्रेम की मूर्त्ति थे। जैनधर्म का प्रकाश, जैन साहित्य का लोक भाषा में प्रचार, सामाजिक संगठन और निर्धन विद्यार्थियों की उंची से उंची शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध करना आपका श्रेष्ठ ध्येय था। फलस्वरूप आपके प्रयत्न से सैंकडो विद्यार्थी जैन तथा जैनेतर उंची शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक बना रहे हैं और कई एक तो भारत देश और जैन शासन की अच्छी सेवा बजा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आचार्यश्री की सेवा अनुपम है। आप श्री महावीर जैन विद्यालय बम्बई, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा, जैन बालाश्रम उम्भीदपुर, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कालिज अम्बाला, शहर, श्री आत्मानन्द जैन कालिज मालेरकोटला पेप्सु, के संस्थापक हैं। इनके अतिरिक्त आपके उपदेश से अम्बाला, मालेर-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोटला, लुधियाना आदि में हाईस्कूल, कई छोटे बडे गुरुकुल, पाठशालाएं, कन्याशालाएं, पुस्तकालय और वाचनालय देश में सर्वत्र जारी हुए हैं। आपश्री आत्मानन्द जैन महासभा के प्राण थे। इन तमाम संस्थाओं के समबन्ध में प्रतिदिन आपको बहुत से उपयोगी पत्र आते थे। जिन के उत्तर आप अवश्य लिखते थे। आपकी जीवन कथा, सत्य और अहिंसा का संदेश, विद्यार्थियों से सहानुभूति, शिक्षण संस्थाओं का संचालन, साधु समाज के संगठन के लिए बडौदा और अहमदाबाद के मुनि सम्मेलन के लिए प्रयत्न और देश जाति और समाज के लिए किए गए रचनात्मक कार्य आचार्यश्री के पत्रों से विदित होते हैं।

पूज्य आचार्यश्री के उपयोगी पत्रों की संख्या सैकडों की नहीं हजारों की होगी। यदि उन का संग्रह हो सके तो वह न केवल आचार्यश्रीजी के जीवन पर पूरा प्रकाश डाले अपितु उनके आधार पर जैन समाज का कम से कम साठ वर्ष का धार्मिक, सामाजिक, साहित्यक तथा शिक्षण विषयक (educational) इतिहास लिखा जा सकता है! उन के पत्र देश भर में बिखरे हुए हैं। और उन की स्थापित की हुई अनेक संस्थाओं, पुस्तक भण्डारों, उपाश्रयों और अन्य धार्मिक संस्थाओं से प्राप्त हो सकती है। कई महत्व पूर्ण पत्र जैन धर्म के विद्वानों, मुनिराजों और भक्त श्रावकों के पास हैं। उन सब पत्रों को एकत्रित कर के सिलसिलेवार प्रकाशित करना समय और साहस का काम है।

इस पुस्तक में केवल सन् १९३४ ईस्वी से सन् १९४२ ईस्वी तक के लिखे हुए एक सौ बीस (१२०) पत्र हैं। अधिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संख्या ऐसे पत्रों की हैं जो गुरुकुल गुजरांवाला, जैन कालिज अम्बाला और श्री आत्मानन्द जैन महासभा के समबन्ध में लिखे गए हैं। कइ पत्र विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता के विषय में भी हैं। इन के पढने से विदित होता है कि आचार्य श्री प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता का स्वयं ध्यान रखते थे। और प्रेरणा कर के उन्हे आर्थिक सहायता दिलाते थे। यद्यपि आप गुरुकूल के कुलपति और कालिजों तथा हाईस्कूलों के संस्थापक थे, वह प्रबन्ध कर्त्ताओंको स्वतन्त्र विचारधारा रखने की सम्मति देते थे और समय २ पर लाभ अलाभ का पूरा परिचय देते थे। इन पत्रों के पढने से यह भी स्पष्ट है कि वह पंजाब के जैनी मात्र से पूरी जानकारी रखते थे। संस्थाओं से दूर रहते हुए मी उन की कठिनाइयों को समझते थे और उनको निवारण करने के प्रयत्नशील रहते थे। विद्यार्थिओं तथा कार्यकर्त्ताओं को सदा उत्साहित करते थे। अध्यापकों का वेतन तक उन के ध्यान में रहता था। आत्म शताब्दी को सफल बनाने के लिए उन्हों ने जो पत्र व्यवहार किया वह उनकी गुरुभक्ति, शासन उन्नति तथा साहित्य सेवा की मुख बोलती तस्वीर है। आचार्यश्री को देशभर में जो मान और सन्मान प्राप्त हुआ उसका पारावार नहीं। राष्ट्र सभाओं, म्युनिसिपिल कमीटी (Municipal Committees) व्यापार मण्डलों और प्रसिद्ध संस्थाओ की ओर से जो मान-पत्र स्थान २ पर उनकी भेंट किए गए उन के कुछ नमूने भी भाई फूलचन्दजी ने इस पुस्तक में सम्मलित किए हैं। आशा है कि पाठकगण इस से लाभ उठाएंगे और आचार्यश्री के उत्कृष्ट चरित्रसे उनके अनेक गुणों को ग्रहण करेंगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीयुत फुलचन्दभाई ने पत्रो को संपादित (Edit) करने का जो बीडा उठाया है उस में उनको पूरी सफलता चाहता हूं। आशा है कि वह आचार्यश्री के पत्रों के आधार पर एक शताद्बी का जैन इतिहास लिखने की चेष्टा करेंगे।

झीरा
२०१२ अक्षय तृतीया

बाबुराम जैन
M. A. LL. B. प्लीडर
प्रधान,
श्री आत्मानन्द जैन महासभा, पंजाब

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

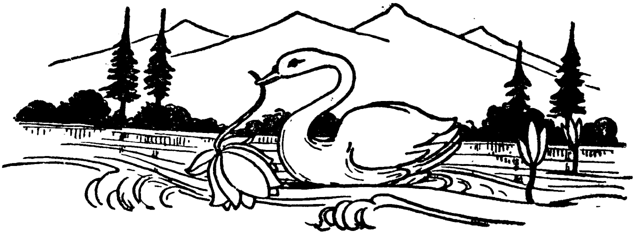

संपादकीय वक्तव्य

युगवीर आचार्य का तीसरा भाग प्रकाशित होने के बाद आज चार वर्ष बाद चोथा भाग प्रकाशित होता है। पहेले दो भागो में आचार्यश्रीजी की जीवन प्रभाकी यशोगाथा है। तीसरे भाग में गुजराती पत्रधारा दी गईथी–चोथे भाग में आचार्यश्री की हिन्दी पत्रधारा और आचार्यश्रीजी को पंजाब–मारवाड–गुजरातसे जो सन्मानदर्शक अभिनन्दन पत्रादि मिले हैं उनमेसे जितने भी मिल सके दीये हैं।

कुछ सन्मान पत्रों तो उर्दू भाषा में थे-उन का हिन्दी कराने में और प्रूफ में कुछ भूलें रह गइ होगी-उर्दू भाषा भाषी क्षमा करें।

गुरुदेव तो बंबई में समाजसेवा का प्रचंड यज्ञ जगा करके अपनी बुलंद प्रभावशाली सुधाभरी वाणी द्वारा आखरी संदेश दे कर स्वर्गवासी बने और बंबई के हजारों–लाखों स्त्री–पुरुषोने आपको भव्य श्रद्धांजली दी।

गुरुदेव का कार्य पूरा हुआ–अब हमारा गुरुदेव के शिष्यों-भक्तों–संस्थाओं और समाज के नेताओं का कर्तव्य है की गुरु-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देव का संदेश गांव-गांव, शहेर-शहेर, मंदिर-मंदिर, उपाश्रय-उपाश्रय, संस्था-संस्था और मंडल-मंडल में पहुंचा कर समाज का उत्कर्ष साधे, संगठन के लिये भरसक प्रयत्न करें साथ ही शिक्षण और साहित्य प्रचार द्वारा समाज की काया पलट करें।

पांचमा भाग के लिये साहित्य देख रहा हुं और छठ्ठा भाग का मसाला भी पडा है। श्री आत्मानंद जैन सभाके उत्साही कार्यकरों की भावना मूर्तिमंत करनेका प्रयत्न करुंगा।

आचार्यश्री के कार्यको पूरा करने में हम गुरुमंदिर तो बनवाते हैं लेकिन समाज का समुद्धार और नवनिर्माण का कार्य करने के लिये स्मृति-मंदिर के साथ साथ रचनात्मक कार्यक्रम कब रखा जायगा। समाज का उत्थान करने का और समाज द्वारा भारत का कल्याण साधने का विचार हमें करना चाहिये।

चोथा भागका आमुख गुरुदेव के परम भक्त सेवाप्रिय जैन महासभा पंजाब और आत्मानंद जैन कोलेज के प्रधान झीरा निवासी श्रीमान् लाला बाबुरामजी जैन M. A LL- B. एडवोकेटने लिख कर मेरे पर बडा ही उपकार किया है।

समयज्ञ, समाज उद्धार की धगश से प्रज्वलित, संगठन के प्रेमी और मध्यम वर्ग के उत्कर्ष के हामी, धर्मउद्योत के धुरंधर क्रान्तिदर्शी आचार्यश्री की पत्रधारा समाज के अग्रगण्य कार्यकरों और नवयुवकोंको प्रेरणा देकर समाज कल्याण का मार्गदर्शन देवें।

महावीर जयंति
पालीताणा

फुलचंद हरिचंद दोशी
महुवाकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

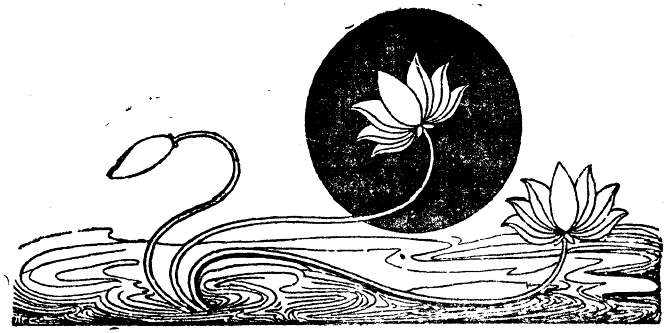

श्री आत्मानंद जैन सभा : बम्बई

परिचय

स्थापना—सं. १९९७ चैत्र शुदि १

उद्देश—जैन समाज में सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक साहित्य का प्रचार और प्रकाशन. जैन धर्मके प्रचार के लिये संभाषण योजना, जैन सेवाभावी कार्यकरों को तैयार करना और जैन महापुरुषों और त्यागी महात्माओं की जयंति मनाना।

सभ्य का प्रकार—१ मुरब्बी वर्ग रु. ५०१)
२ आजीवन सभ्य २०१) प्रथम वर्ग।
१०१) द्वितीय वर्ग।
३ सामान्य सभासद वार्षिक रु. ६)
,, रु. ३)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शा. हजारीमलजी ताराचंदजी सांकळचन्दजी : बम्बई

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

शेठश्री वाडीलाल चत्रभुज : बम्बई

शेठश्री हरखचंद वीरचंद : बम्बई

Ac. Gunratnasuri MS
Gun Aradhak Trust

सभाके प्रकाशनों

१ आत्मानंद द्वासंप्रति
२ धर्मवीर उपाध्याय
३ जैन दर्शन
४ युगवीर आचार्य भा. १
५ प्रभाविक पुरुषो भा. २
६ युगवीर आचार्य भा. २
७ प्रभाविक पुरुषो भा. ३
८ कपूरविजयजी लेख संग्रह
९ युगवीर आचार्य भा. ३
१० वल्लभ वाणी
११ स्तवनादि संग्रह
१२ वल्लभसूरि हीरक महोत्सव अंक
१३ जैन तत्त्वादर्श

सं. २००० की सालसे प्रति वर्ष एक मननीय पुस्तक प्रत्येक सभ्यको भेट देनेका ठराव किया है और आज तक उपरोक्त पुस्तकें भेट दी गई हैं।

सभाकी तरफसे जैन तत्त्वादर्श भाग २, युगवीर आचार्य भा. ४ और शत्रुंजय महात्म्य आदि प्रकाशित हो रहे हैं।

युगवीर आचार्य भाग ५ और ६ के प्रकाशन की योजना पूज्यपाद् स्वर्गस्थ आचार्य प्रवर श्री विजयवल्लभसूरीजी के गृहस्थ भक्तोंकी सहायतासे प्रकाशित करने की योजना श्री रतनचंद चुनीलाल दालीया, श्री जेसंगलाल लल्लुभाई झवेरी और श्री मंगलदास लल्लुभाई घडीयाली और मंत्रीओंकी समिति को दी गई है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सभा साहित्य प्रकाशन और अन्य प्रवृत्तिओं के साथ साथ साधर्मी सेवाका कार्यको तन-मनसे मदद करती है साथ ही साधर्मिक सेवा संघ और वल्लभ स्मारक नीधि दोनों के खजानची का कार्य प्रशस्य रितिसे हो रहा है। संस्था ट्रस्ट एक्ट के नियमानुसार चलती है और रजीस्टर हूई है।

सभाकी विधविध प्रवृत्तियां—विद्वान मुनिराजों के संभाषण, महापुरुषों की जयंती की योजना, निबन्ध लेखन प्रवृत्ति और साहित्य प्रकाशन द्वारा जैन समाज और धर्मकी यथाशक्ति सेवा कर रही है।

सभासद—सभामें ६ पेट्रन १३० आजीवन सभ्यों और १२५ सामान्य सभ्यों हैं। वार्षिक उत्सव के प्रसंग पर आंगी, पूजा, समूह भोजन और संमेलन का रसप्रद कार्यक्रम की योजना की जाती है।

संवत २०१२ की कार्यवाही समिति

प्रमुख : श्री रतनचंद चुनीलाल दालीया
उप-प्रमुख : श्री नानचंद रायचंद झवेरी
खजानची : श्री जेसंगलाल लल्लुभाई झवेरी
मंत्री : श्री जगजीवन शीवलाल शाह
,, : श्री केशवलाल दलीचंद शाह

और अन्य १४ सभासदों

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

जैन समाज और खासकर युगवीर आचार्य श्री विजयवल्लभ-सूरिजी के भक्तजनों और मारवाडी बन्धुओंको प्रार्थना है कि सभाके प्रति प्रेमभाव प्रदर्शित करके हिन्दी जैन साहित्य का भी प्रचार करने में तन, मन, धनसे सहायता करें।

ज्ञानकी प्रभावना का पुण्य कम नहीं है।

गुलाल वाडी,
घाटनी चाल
बम्बई ४
चैत्र शु. २

संघ सेवक,
जगजीवन शीवलाल शाह
केशवलाल दलीचंद शाह
मानद् मंत्री, श्री आत्मानंद जैन सभा बम्बई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धन्यवाद

सहायकों की शुभ नामावली

२५१)	शेठश्री	वाडीलाल चत्रभुज	बम्बई
२५१)	,,	हरखचंद वीरचंद	,,
२५१)	,,	जसराजजी धनरुपजी	,,
२५१)	,,	सरदारमलजी मगनीरामजी	,,
२५१)	,,	हजारीमलजी ताराचंदजी सांकलचंदजी	,,
२५१)	,,	जवाहरलालजी सुखलालजी ललवाणी	पूना
१०१)	,,	इन्द्रचन्द्रजी ढड्ढा	बीकानेर
१०१)	,,	नवलाजी गुलाजी	बम्बई

श्री आत्मानन्द जैन सभा बम्बई, युगवीर आचार्य भाग ४ (हिन्दी) के सहायकों का आभार प्रदर्शित करती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

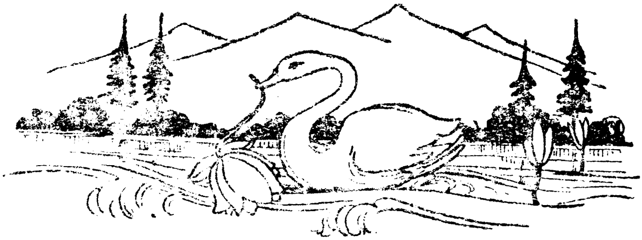

युगवीर की पत्रधारा

पंजाब गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६०-३८ (१) १८-६-३४

अहमदावाद वल्लभवि. आदि का धर्मलाभ

श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल के पत्र मासिक रिपोर्ट आदि मिला। हाल मालुम हुआ। २४-२५ जूनमें होनेवाली मिटिंग का एजंडा मिला। कारवाई होने पर इत्तिला देने से पत्ता लगेगा। विनीत कक्षा का विद्यार्थी गंगाप्रसाद को यदि यहां हमारे पास भेज दिया जाय तो उसके लिये ऐसा प्रबंध किया जा सकता है कि वह गुरुकुल के लायक एक अच्छा प्रखर विद्वान् बन सके। खर्च का प्रबंध जहांतक हो सकेगा यहां से किया जायगा। यदि न हो सका तो फिर गुरुकुलको करना होगा। सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जबकि विद्यार्थी बहुत ही कम रह गये है तो यदि कमिटि की राय होवे और सब प्रकार अनुकूलता हो सके तो गुरुमहाराज के समाधिमंदिरमें गुरुकुल को लेजाने का प्रबंध कर लिया जाय। इतिशम्।

★

(२) २८-६-३४ अहमदाबाद

डाकका समय हो जाने से ४५-४६ नंबर के दो पेज भेज दिये गये थे। उसके आगेका समाचार दिया जाता है।

गुरुकुल फिलहाल जहां है वहां ही रखना कमिटि को ठीक लगा, अच्छी बात है।

गवर्नरने के लिये हमको लिखा गया सो ठीक है परंतु प्रथम इस बातका खुलासा हो जाना चाहिये कि गवर्नर के जिम्मे क्या क्या काम होवेंगे? गवर्नर शब्द इस देशमें किसी भी संस्था में न होने से सबको नया मालुम होता है तो क्या इस नामके स्थान पर कोई अन्य प्रचलित नाम रखने में किसी प्रकार बाधा आसकती है? हमारी समझमें गवर्नर से मतलब अधिष्ठाता का होना चाहिये और वह प्रतिष्ठित विश्वासपात्र होना चाहिये। अन्य अन्य देशके अपरिचित आदमियोंसे यह कैसा बन सकता है? हा, यदि इसमें अधिक पढ़े लिखेकी जरूरत न होवे और अनुभवी आदमीसे काम लिया जा सकता होवे तो हमारी रायमें लाला मानकचंदजीको अधिष्ठाता बनाया जावे। प्रमुख तो आप है ही। अधिष्ठाता भी यही सही। रोज कमसे कम दो घंटा गुरुकुलमें जाया करे और जांच परताल करते रहें। बाकी लिखा-पढ़ी दिनरातकी देखरेखके लिये बतौर आसीस्टंट के बाबू जस-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वंतराय जैन देहलीको खर्च पूरता पगार नियत करके रखलिया जाय तो फिलहाल कितनीक सहूलियत हो सकती है। बाबूजीसे आप सब परिचित है, इस लिये अधिक विचार करने की जरूरत नही है। फिर किसी योग्य आदमी के मिल जाने पर लालाजीको आराम दिया जायगा मगर फिलहाल जब काम माथे आ पडा है तो इतना हौंसला तो लालाजीको करना ही चाहिये।

बाबू जसवंतरायके होनेसे धार्मिक क्रियाकांड, दर्शन, पूजा, सामायिकादिमें सुविधा होगी, धार्मिक अभ्यास, धार्मिक भाषणादि की भी कुछ सुविधा रहेगी। प्रचारार्थ गुरुकुलका मासिक या पाक्षिक पत्रिका का काम भी कि जिसकी खास जरूरत हैं कर सकेंगे।

प्रीन्सीपाल के स्थान पर हेडमास्तर तजवीज किया जाय, जो पढाई के काम के अलावा और भी काममें फुरसतके वक्त मददगार होवे। हम ऐसे एक ग्रेज्युएट जैनकी तलायशमें है कि जो हेडमास्तरी के साथ २ गुरुकुलकी तरक्की में भी अपना हाथ बढाते रहा करे। इसी तरह एक अनुभवी हाउस मास्तर जैनकी भी हम खोज कर रहे है जो कि हमारी इच्छानुसार बडे प्रेमसे विद्यार्थीयोंका उत्साह बढाता रहे। बस फिर बाकी का स्टाफ आपकी मरजी आवे वैसा रख लेवे। गुरुकुलकी प्रगति श्री संघ पंजाबके आधीन है मगर श्री संघ पंजाब गुरुमहाराजके नामका ख्याल रखकर तनमनधनसे गुरुकुलकी सेवाको तत्पर हो जायगा और अपने बालकों को भेजता रहेगा यानी गुरुकुलमें दाखल करेगा तो गुरुकुलकी प्रगति जरूर २ होगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम् ।

२४६०-३९ (३) अहमदावाद ६-७-३४

वल्लभवि. आदि की तर्फ से श्री बिनौली सुश्रावक बाबू कीर्त्तिप्रसादजी सपरिवार योग्य धर्मलाभ। ३-७-३४ का पत्र मिला। हाल मालुम हुआ। शेठ विट्ठलदासकी बाबत आपको और भाई फूलचंदको कुछ अधिक परिचय है। यदि आप थोडीसी हिम्मत करे और फूलचंदभाईको साथमें लेकर वहां जावे तो काम ठीक होजाने का संभव है। आप गुरुकुल के हितचिंतक है, इस लिये आपको लिखा जाता है। लाला मानकचंदजी को आपने लिख दिया अच्छा किया। यहांसे भी उनको आज लिख दिया है। इतने दूसरा सफर वह कर सके या नहीं यह कहा नही जासकता, फिर भी उनके साथ आपका जाना तो हम जरूरी समजते हैं, क्यों की आपके और उनके दोनों के रूबरू सेठ रणछोडभाई के समक्ष सेठ लालजीभाई आदि की बातचित हुई थी। इस लिये हम समझते है आपकी हाजरी जरुर होनी चाहिये। हमारा चौमासा इस वर्ष का यहां ही होनेवाला है। आप गुरुकुल के इस परमार्थ के काम के लिये बम्बई पधारेंगे तब आपका यहां पधारना होगा। उस वक्त रूबरूमें सब खुलासा होजायगा। लाला श्रीचंदजी आदि सब बाई भाई को धर्मलाभ। बडौत और सरधना का ख्याल रखते रहेना। उन सबको धर्मलाभ।

★

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६०–३९ (४) अहमदाबाद ६–७–३४

वल्लभवि० आदिकी तर्फसे श्री गुजरांवाला सुश्रावक लाला मानकचंदजी सर्व परिवार योग्य धर्मलाभ। आपका पत्र प्रथम आया था जिसमें आपने माह सितंबरमें आनेका इशारा किया है परंतु आज बाबू कीर्तिप्रसादजीका पत्र आया हें जिसमें शेठ विट्ठलदासजीकी गुरुकुलकी रकम बाबत लिखा है ओर यह भी लिखा है की लाला मानकचंदजी को भी हमने पत्र दिया है, तो अब आपने क्या निश्चय कीया? हमने तो बाबू कीर्तिप्रसादजी को लिख दिया है की आपको भी लालाजी के साथ जाना चाहिये क्यों की यह मामला आपके और लालाजी के सामने हो चुका है। भाई फूलचन्दजीको भी साथमें ले जाना, सो आप जिस वक्त जाने को तैयार होवे बाबू कीर्तिप्रसादजी को लिख देवें कि हम जाते हैं। आप हमको दील्ही मिलें क्योंकी आपको इस कार्य के लिए हमारें साथमें बम्बई चलना होगा। यदि आप इसी वक्त न जा सकते हो तो सेठ रणछोडभाई को लिख देवें कि हम इस वक्त नहीं आ सकते है परंतु अमुक समय आ पहूंचेगे आपने जरूर ख्याल रखना। आप खुद जानते है बडी रकम है। जितना होसके जलदी ही पहूंचना चाहिये। सबको धर्मलाभ।

★

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६०–३९ (५) अहमदाबाद ८–७–३४

वल्लभवि० आदिकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ।

४–७–३४ का ११२२ नंबरका पत्र मिला। हाल मालूम हुआ। विद्यार्थी गंगाप्रसादकी बाबत समझ लिया। बाबू हंसराज का पत्र आया है, उनके लिखे मुजिब वह उनके साथ गया है तो कोई बात नहीं। बनारस में ही अभ्यास कराया जायगा। गवर्नर की बाबत लाला माणकचन्दजी का कहना योग्य है परंतु सेवाभावी गवर्नर जैसा चाहते हों मिलना मुश्किल है। अवल तो जैन समाजमें ऐसा आदमी ही निकलना मुश्किल है और यदि कोई निकल भी आवे तो वह काम करनेको तैयार न होगा। कभी तैयार होगा तो वह आपके या हमारे विचारों के साथ मिलता रहे यह भी संभव नहीं। जैनेतर मिले तो वह श्रीयुत बाबू कीर्तिप्रसादजी की तरह ऑनररी काम कीस प्रकार कर सकेंगे ? इन सब विचारों को देखते हुए फिलहाल कामचलाउ गवर्नर के स्थानपर यदि कमिटिकी राय होवे तो हमारी रायमें बाबू जसवंतराय जैनी दील्हीको कायम करना योग्य हैं। जब अपनी इच्छानुसार सर्व काम करनेवाला योग्य अधिष्ठाता कमिटि को मिलजावे तब उनको कायम करके बाबू जसवंतरायको मुक्त करदेना। इसमें इनकी ल्याकत का अनुभव मिलेगा। यदि काम बराबर हो सकता होवे और वह सेवाभावसे ओनररी काम करने को कमिटि की इच्छानुसार तैयार होवे कमिटिको योग्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लगे बदलने की कोइ जरूरत न होगी, अन्यथा अन्य योग्य आदमी के मिलने पर कमिटि का अखतियार होगा, परंतु हाल तुरतमें काम चला लेना हम ठीक समझते है। आप पत्र देकर बाबु जसवंतराय को पूछ तो लेवें, वह काम करने को तैयार भी है या कि नहीं यदि वह करने की कुछ भी हिम्मत रखते होंगे हां करेगे वरना साफ जवाब देवेंगे। हां यदि आपको कोइ और का ख्याल होवे, किसीका जवाब आया होवे, कमिटि को योग्य लगे जलदी कायम कर लेना योग्य है, परंतु यह जरूर ख्याल रखना कि जबतक गुरुकुल की ठीक ठीक व्यवस्था न होवे तबतक खास गुरुभक्त किसी पंजाबी श्रावक के और किसी देश के आदमी को एकदम रखने का साहस नहीं कर लेना। इसका खुलासा आपके मिलने पर रूबरू होजायगा।

हमने जिन दो आदमियों के लिये इशारा किया था वह सरकारीं नौकर हैं। उनकी हमेशह की नौकरी छुडाना हम ठीक नहीं समझते। इसलिए आपके उधर जो अर्जियें आई हो या आवें उनमें से योग्यतानुसार पास कर लेवें। केवल अर्जियों के भरुसे भी नही रहना। अपने को मालूम होवे तो उनको आप भी सूचना देकर पूछ लेना चाहिये। हमारे ख्याल में तीन आदमी गुरु महाराज के सेवक ग्रेज्युएट हेडमास्तरो का काम कर सकते हैं। १ नारोवाल के लाला फग्गुमल्ल का पुत्र बाबू हंसराज। २ होशियारपुर के मास्तर ताराचंद ३ अंबाला सीटी श्री आत्मानंद जैन हाइस्कूल के बाबु चन्द्रसेन खंडेरवाल। तीनोंही ट्रेईन्ड होने से अनुभवी है और इन तीनों ही पर अपना हक्क भी है क्यों कि तीनों ही स्वर्गवासी गुरुदेवके भक्त है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विद्यार्थीयों के प्रवेश के लिए भरचक प्रयत्न की जरूरत है और इसके लिए हमारा श्रीसंघ पंजाब को संदेश पहुंचाने की सूचना हमारे ध्यान में है। भाई फूलचन्दजीको कुछ दिन सारे पंजाब में दौरा कराये जाना हमारे ख्याल में है और इसके बारेमें हम फूलचन्दभाई को लिखकर पता मंगवाकर आपको पता देवेंगे, परंतु हमारा ख्याल है गवर्नर-अधिष्ठाता और हेड-मास्तरका स्थान निश्चित हो लेवें, बादमें मेनेजिंग कमिटि के सर्व मेम्बरों के दस्तखत सहित सूचना पत्र बांटे जावे और हमारा संदेश लेकर फूलचन्दभाई का दौरा किया जावे तो संभव है श्रीसंघ पंजाब को असर अच्छा होवेगा। श्रीसंघ पंजाब का ध्यान गुरुकुल प्रति होगा और वह अपने बच्चों को दाखल करना मन पर लेवेगा तभ ही गुरुकुल ठीक पर चलेगा। इधर उधर के बच्चों से गुरुकुल निभना मुश्कल है और न ऐसी जरूरत है। विशेष खुलासा रूबरू में होजायगा। आप एक दिन नियत करके लिख भेजना। सब को धर्मलाभ।

सेठ विट्ठलदासजी की बाबत जो जो कागजात लिखत वगैरह आप साथ में लेते आवें या यहां भेज देवें। किराया पांच साल तक प्रतिवर्ष दो हजार के हिसाब से दील्ही में देना स्वीकार किया था। इसका खुलासा जिस रिपोर्ट में छपा होवे। दो वर्ष चार हजार की रकम किराया के खाते आई हुई जमा हुई होवे वह नामा। पांच हजार जो उनकी मारफत विआजू चलता हैं उनका विआज आया हुआ जमा हुआ होवे वह नामा वगैरह जो जो सबूत गुरुकुल में होवे साथ में ले आना या यहां भेज देना हम देखकर रणछोडभाईको भेज देवेंगे या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यहां तैयार रखेंगे। आप बम्बई जाते हुए साथ में लेजावें। आपको एक दफा बम्बई जाना तो जरूर ही पडेगा। यह समाचार धर्मलाभ के साथ लाला मानकचंदजी को मालूम कर देवें।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

(६)

अहमदाबाद रतनपोल उजमबाई धर्मशाला २३-७-३४

वल्लभविजय आदि २० की तर्फसे अमृतसर सुश्रावक लाला मोहनलाल वकील सपरिवार योग्य धर्मलाभ। १८-७-१९५४ का पत्र आपका मिला। हाल मालूम हुवा। यहां सुखसाता है। धर्मध्यानमें उद्यम रखना। सबको धर्मलाभ कहना।

आपका लिखना बिलकुल ठीक है। १८-२० लडकोंके लिए इतना खर्च करना मुनासिब नहीं, परंतु इसका उपाय भी तो कोई नजर नही आता। गुजरांवाले अपना लडकोंको पढाने के हकमें आगेही नहीं है अगर होते तो गुजरांवालाकी अपनी वसती के हिसाबसे वहां आजतक कितनेही ग्रेज्युएट निकल आते और वह गुरुकुलका सारा ही काम रीतिसर संभाल लेते। आप देखते ही है अंबालावाले कैसा अपना काम चलाये जाते हैं? हमारी रायमें जबतक काम करनेवाले और करानेवाले कमरबस्ता नहीं हो लेते तबतक काम का होना दुशवार है।

अधिष्ठाता जैसा हम चाहते है आपकी कमिटि को पसंद नहीं और कमिटि चाहती है वैसा मिलता नहीं या मिलना

२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुश्किल है, ऐसी हालतमें क्या करना? आप और कमिटि विचार करलेवें। प्रीन्सीपाल के लिए बाबू दयालचंदजीने एक आदमीका नाम गुजरांवाला लिखा है। आदमी बहुत ही लायक लिखते हैं मगर पगार ज्यादा मालुम देता है। बाकी आपके रूबरूमें बातचित का खुलासा हो जायगा। सब को धर्मलाभ।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६०-३९ (७) अहमदाबाद २३-७-३४

वल्लभ वि० आदिकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब-गुजरांवाला-धर्मलाभ। १६-७-३४ का पत्र मिला। हाल मालूम हुआ। हमने अपने ८-७-३४ के पत्रमें प्रथम से ही सूचित कीया है की "इधर उधर के बच्चोंसे गुरुकुल निभाना मुश्किल है" गुरुकुल पंजाब के लिये खोला गया है। पंजाब के ही जैन लडके गुरुकुलमें तैयार होने चाहिये। श्रीसंघ गुजरांवाला अपने बच्चोंको गुरुकुलमें न भेजेंगे तबतक पंजाबका और श्रीसंघ अपने बच्चोंको भेजे इस वक्तकी परिस्थिति देखते संभव नहीं।

जबकि श्रीसंघ गुजरांवाला गुरुकुल को गुजरांवाला में ही रखना चाहता है और श्रीसंघने गुरुकुल का काम अपने हाथ में लिया है तो सबसे पहेले गुजरांवाला श्रीसंघका फरज है। गुरुकुल को अपने लडकों से भरदेवें बाद में दो चार आदमी बतौर डेप्युटेशन के सारे पंजाब में दौरा करके लडके और धनसे गुरुकुलको भर देवें तभी श्री गुजरांवालाके श्रीसंघका बोल-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वाला होगा, वरन जो इस वक्त यह समझ रहे हैं की हमारे विना या अमुक के विना या गुजरांवालामें गुरुकुलकी तरक्की कभी न होगी। उनको खुश होने का और अपनी बात आगे-लाने का मौक्या आ मिलेगा। इस लीये इस वक्त अपनी बातको कायम और पुखता करने की तनमनधनसे गुरुकुल के कामको हाथमें लेना श्रीसंघ गुजरांवालाका जरुरी फरज समझा जाता है।

जिस योग्यतावाले अधिष्ठाताके लीये आपने लीखा है इधर से तो ऐसा अधिष्ठाता मिलना मुश्किल है। कहीं आपके उधर मिलजावें तो ताज्जुब नहीं मगर जैन तो ऐसा मिलनेका संभव नहीं और जैनेतर से आपकी इच्छानुसार काम होने का भी संभव नहीं। जैन होने पर भी बाबू कीर्तिप्रसादजीसे आपका आपसमें मेल नहीं मिलता था तो जैनेतरसे कैसे मन मिलेगा? और जो गवर्नरकी हेसियतसे काम करेगा वह और किसीके दबावमें रहे यह तो नामुकीन सी बात है! अच्छा आप तज-वीज तो करें, मिलने पर सब पता लग जायगा।

आप हर एक बातके जवाबमें यही लिखते हैं कि कमिटि की राय नहीं, सो यह कमिटि केवल लोकल या मेनेजींग? लोकलमें भी अमुक व्यक्ति या सबकी सब लोकल कमिटि? हमारी राय में तो गवर्नर और प्रीन्सीपाल या हेडमास्तर की पसंदगी और मंजूरी मेनेजींग कमिटि के अखतियार में होना चाहिये।

भाई फूलचंदजी से जो काम लेना चाहते है वह काम श्रीसंघ गुजरांवाला के डेप्युटेशन से जितना अच्छा और सुगम रीति से होगा, फूलचंदभाई अकेले से होने का संभव नहीं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हां डेप्यूटेशन के साथ में तो फूलचंदभाई जरुर कामयाब हो सकेंगे। रसीद नं. १४३९ की पहूंचादी गई हैं। सब विद्यार्थी एवं कार्यकर्त्ताओं को धर्मलाभ।

मांडल का विद्यार्थी यहां आया था। प्राईवेट अभ्यास करके मेट्रिक की परिक्षा बनारस में देकर आगे को जैन फिलॉसॉफी का अभ्यास बनारस विश्वविद्यालय में करने की भावना बतलाई है सो आगे पर विचार होजायगा।

लायब्रेरी

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६०-३९ (८) १३-१०-३४

अहमदाबाद, रतनपोल

वल्लभवि० आदि की तर्फ से श्री अमृतसर सुश्रावक बूबा मोहनलाल वकील जैन एडवोकेट हाईकोर्ट योग्य धर्मलाभ। ११-१०-३४ का पत्र मिला। हाल मालुम हुआ। यहां सुख-साता है। धर्मध्यान में उद्यम रखना। मोतीलाल चूनीलाल पन्नालाल आदि सबको धर्मलाभ कहना।

११-१०-३४ का गुरुकूलका पत्र आज ही मिला है। विद्यार्थी की संख्या ३६ की लीखी है। गवर्नर उधरका ही कोई मिल जावे ऐसा प्रयत्न करना। इधर का उधर काम न आयगा और मिलना भी मुश्किल है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गूजरांवाला का काम ठीक हो गया और लाहोर का हो जायगा सो अच्छी बात है। जंडियाला और अंबाला के लिए लिखा सो आपका फरज है। अपने से बन आवे उतना किसी का काम कर देना अपनी लायकी है। अपने को अगर अगला कुछ भी लायक समझता हैं तभी वह अपने पास कहता है, ईस लिये अपनी लायकी का काम करना ही चाहिये।

अमृतसर की लायब्रेरी का खुलवाना खुशी की बात हैं। यदि आपके लिखे मुजिब कार्य होगा तो उमीद है अमृतसर में एक गुरुमहाराज के नाम का डंका बज जायगा और साथ में आपका भी नाम हो जायगा। यदि हमकों पहेले पता मिल जायगा तो उस वक्त धन्यवाद का तार दिलवा देंगे।

जैन विद्यालय

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-३९ (९) मकरपुरा, ता. २८-११-३४

वल्लभवि० की तर्फसे श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा की कमिटि के सर्व मेंबरों योग्य धर्मलाभ।

बडोदासे आज विहार कीया है। बम्बई जा रहे हैं। माघ सुदि दशमी की वहां प्रतिष्ठा है इस लिए माघ सुदि पंचमी तक पहुंचने का विचार है।

यहां आये बाद दशमीका मैला याद आनेसे यह पत्र लिखा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आशा है आप सरदारों ने विद्यालयका निरीक्षण किया होगा और हेड मास्तरजी जिनको हमारे रूबरू में श्रीयुत हिम्मतलालजी और श्रीयुत निहालचंदजीने श्रीयुत सुमेरमल्लजी मुता और वकील साहिब श्रीयुत जालमचंदजी की मारफत कोशीश कराकर पसंद कीये हैं उनकी आज तक की कार्यवाही से आपको जरूर संतोष हुआ होगा।

आपने खूब विचार करके आगे का प्रबंध करना, एकदम उतावलसे कोई काम न कर बैठना। ऐसा न हो जावे कि बना हूआ काम बिगड जावे और फिरसे सारी मिहनत नयी करनी पडे। इसका मतलब यह कि हमारे सुननेमें आया है की कमिटिमें कीतनीक अदलबदली होनेवाली है जिनमें हेड-मास्तरजीके लिए भी विचार भी होनेवाला है–ध्यानमें रहे। हैडमास्तर बदलने में आप को बडा भारी नुकसान उठाना पडेगा। जमा–जमाया विद्यालय ऊठ न जाय इस बात का पूरा ख्याल कर लेना। ऐसा पुराणा अनुभवी मास्तर मिलना दुर्लभ हो जाता है। कम पगार का आदमी काम भी कम ही कर सकता है। इस लिए हमारी राय में तो यदि हैडमास्तर के लिए विचार कमिटि में आवे तो इस माफिक होना ठीक है। यदि हैडमास्तरजी का आज पर्यंत का काम संतोषजनक होवे और आप सरदार अपने विद्यालय की प्रगति चाहते हों तो हैडमास्तरजी के साथ जो तीन साल की बोली हुई हैं वह हमेश के लिए कायमी कर दी जावे ताकि मास्तर भी निश्चित होकर आप का विद्यालय अपना लेवे और विद्यालय की बेहतरी में ही दत्तचित्त हो जावे। विद्यालय की उन्नति के साथ आप सबकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन्नति की शासनदेवसे प्रार्थना करते हुए इस पत्रको समाप्त किया जाता है। सबको धर्मलाभ। द. व. वि.

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१–३९ (१०) मीयागाम २–१–४६

वल्लभवि० की तर्फसे श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल योग्य धर्मलाभ। आप के पत्र २४–११–३४ का १७–१२–३४ का और २१–१२–३४ का मिले। समाचार मालुम हूआ। विद्यार्थी बढ रहे है खुशी की बात है। कमिटि का और गुरुकुल का कार्य सुचारु रूपसे चल रहा हें यह भी अच्छी बात है।

धार्मिक अध्यापक के लिए जो बातचीत लिखा पढी चल रही थी उस के बारे में समझिए वह यहां श्रीसंघ की संस्थामें काम कर रहा हैं। स्वयं आनेका उत्साह बतलाता हैं परंतु यहां का श्रीसंघ उसको मुक्त नहीं करता हैं–बलकि हमको भी श्रीसंघ यह कहता है कि हमारी संस्था का काम बिगडे ऐसा करना आप को योग्य नहीं है। इस कारण अब आप उस अध्यापक की आशा छोड देवें और जैसे चलता है वैसे ही अभी काम किये जायँ। अब कभी कोई और मिलेगा आपको पता दिया जायगा। हम इस बात का जहांतक हो सकेगा ख्याल रखेंगे। इमारत के लिए जब तक हमारा पंजाब में आना न हो लेवे तब तक स्थगित रहना ही ठीक समझा जाता है। सर्व विद्यार्थीगण व कार्यकर्ता गण को धर्मलाभ। हम विहार में हैं इस लिए अभी कोई किसम की लिखा पढ़ी हमारे साथ न करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शताब्दि अंक

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-३९ (११) १३-३-५५

बम्बई पायधौनी पोष्ट नं. ३
श्री गौडीजीका उपाश्रय.

वल्लभवि० की तर्फसे श्री बनारस पंडित हंसराजजी योग्य धर्मलाभ। कार्ड मिला हाल मालुम हुआ। शान्तिलाल को आपकी और गंगाप्रसादको पंडित सुखलालजी की मारफत मदद मिलने का प्रबंध किया है। १९९३ चैत्र सुदि १ को श्री गुरुदेव की शताब्दि होनेवाली है इसका ख्याल तो तुमको और पंडित सुखलालजी को जरूर ही होगा. आशा है आप और पंडित सुखलालजी शताब्दि के निमित्त श्री गुरुदेव की बाबत कोई न कोई निबंध जरूर तैयार करेंगे। आपकी तर्फसे एक हिन्दी में और एक अंग्रेजी में, और पंडितजी की तर्फसे संस्कृत मागधी और हिन्दी एवं पृथक विषय के जुदी जुदी भाषा के निबंध की तैयारी होनी चाहिये और वह पर्युषण के लगभग आखीर में दीवाली तक में तैयार होना चाहिये ताकि स्मारक अंक तरीके जो पुस्तक तैयार करना चाहते है उसमें स्थान प्राप्त हो सके। विशेष में गुरुकुल के विद्यार्थी जो वहां पढते हैं उनकी भी तैयारी होवे जो शताब्दि के उत्सव प्रसंग में आपके साथ हाजर होकर गुरुकुल का प्रभाव जनता पर पडे ऐसा नमूना पेश होवे। पंडितजीको धर्मलाभ के साथ कह देवें की आपके पत्रका परमार्थ ठीक समझमें नहीं आता। आप खुलासा स्पष्ट शब्दोंमें लिखें कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप क्या चाहते हैं ? रामचंद्रको धर्मलाभ के साथ कह देना महावीर विद्यालय में बी. ए. के बादके विद्यार्थी प्रविष्ट नहीं हो सकते। एम. ए. के लिए तो काशी ही ठीक है और वकालतके लिए दील्ही ठीक है बम्बई में खर्चा अधिक लगेगा। धर्मसंग्रहणी की तलायश में हैं मिलने पर पहुंच जायगी। तत्त्वार्थजीका द्वितीय भाग मंगवाया जरूर है, पता मिलने पर भेजजा जायगा।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६१-३९ (१२) १३-३-३५

श्री मुंबइ पायधौनी पोष्ट नं. ३
श्री गोडीजीका उपाश्रय

वल्लभवि० की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ। ६-३-३५ का पत्र मिला हाल मालूम हुआ। आप लोग गुरुकुल का कार्य सुचारु रूपसे कर रहे है खुशीकी बात है। जबतक हमारा पंजाब पहूंचना नहीं होता आशा की जाती है, आप इसी तरह कार्य किये जावें—

१ बजट खर्च आमदनी के मुताबिक होना अच्छा है। यह तो आप अच्छी तरह समझते हैं कि नई आवक कमती होती जाती है।

२ वार्षिक उत्सव करनेसे यदि कोई मतलब सिद्ध होता हो तो करना अत्यावश्यक है बाकी नाहक गुरुकुल को खर्चे में उतारने की क्या जरूरत है ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३ विद्यार्थीयों की सारी जिन्दगी का जुमेवार गुरुकूल नहीं है विनीत के बाद उनके वाली अगर चाहते हो कि और तालीम गुरुकुल में ही लेवें तो खर्चा वह देवें और प्रबंध बाकायदह गुरुकुल करें। विनीत तक का खर्चा गूरुकुल बरदास्त करता है यही गनीमत है।

आपको यह तो ख्याल होगा कि १९९३ चैत्र सुदि १ को स्वर्गवासी गुरुदेव की शताब्दी होनेवाली हैं उस मौक्ये पर गुरुकुल के विद्यार्थीयों की हाजरी होना जरूरी समझा जाता है इस लिए आपको अभीसे सूचना दी जाती है कि विद्यार्थीयों को तैयार करें।

यह तो हम समझते हैं कि और और बातों में तो जरूर ही हुशियार होंगे परंतु हम धार्मिक बातों में हुशियार होना चाहते है. अभी एक सालसे कुछ अधिक टाईम है इतने अरसेमें सामायिक, देवपूजा, चैत्यवन्दन, प्रतिक्रमणादि क्रियाओं में खूब हुशियार सबके सब विद्यार्थी होजाने चाहिये हमारी रायमें यह काम बाबू जसवंतराय जैनीसे यदि वह चाहें तो एक साल के लिये ओनररी आप ले सकते हैं।

ध्यान में रखना यही यानी शताब्दि का मौक्या गुरुकुल के लिए पूरा पूरा इमतिहान का समय है यदि इस परीक्षाके मौक्ये पर उत्तीर्ण हो गया तो गुरुकुल का बोलबाला समझ लेना इत्यलम् सब को धर्मलाभ। द. वल्लभविजय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-३९ (१३) २५-४-३५

बम्बई ३ पायधोनी, गोडीजीका उपाश्रय

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ।

पत्र, मासिक प्रगतिपत्र आदि सब पत्र पहुंचे हैं। परीक्षा पत्र तैयार करा कर फिरोजपुर रजिष्टर्ड करा दिया गया है। जो सूचना देनी योग्य समझी गई देदी है। परीक्षा किस महिनेकी किस तारीख को होगी ?

श्री स्वामिजी महाराज आदि साधु तथा माणिक्यश्री आदि साध्वियां गुजरांवाला पधार गये। साध्वियांजी श्री गुरुकुल में पधारी वगैरह समाचार लिखे मालुम हुआ। गुरुकुल का जलसा मुलतवी रहा लिखा ज्ञात हुआ। यदि गुरुकुल के जलसे के विचार के लिए नई मिटींग होवे तो प्रमुख अपने भाईयोंमेंसे ही किसीका चुनाव होवे। विनीत परीक्षा में कितने विद्यार्थी बैठनेवाले हैं ? उनका नाम पिता का नाम स्थानका नाम वगैरह यदि हरकत न समझी जावें तो लिख भेजने के साथ ही गुरुकुलके वर्त्तमान विद्यार्थीयों के गाम, पिता के नाम, गाम के नाम, उमर कितना समय हुआ गुरुकुल में आये, कहां से अभ्यास शुरू किया, गुरुकुल में आये बाद कितना अभ्यास हूआ, आजकाल क्या अभ्यास चलता है ? सब खुलासा लिखना। सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन महासभा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-४०　　　　(१४)　　　　२४-९-३२

बम्बई

वल्लभवि० की तर्फसे । श्री अमृतसर

श्री आत्मानंद जैन महासभा के सभ्यो योग्य धर्मलाभ ।

महासभा की शिथिलता दूर करने के विचार से आप एकत्रित हुए हैं खुशी की बात है, महासभा क्या वस्तु है जो समझता है वह तो इसकी जरूरत ही समझता हैं ईस लिए इसकी बाबत लिखने की जरूरत नहीं है ।

तकरारी कोई भी बात जिस को समाज न चाहती हो या जो समाज के उचित न हो उस को स्थान न देना महासभा का फरज समझना चाहिये ? महासभा का जो काम होवे उस पर सब को अभिमान होना चाहिये और यह तब हो सकता है जब महासभा चारोंओर दृष्टि डालकर पूर्ण विचार के साथ काम करें । हम को महासभा का इस लिये प्रेम या अभिमान है कि स्वर्गवासी गुरुदेव का इस के साथ नाम है और स्वर्गवासी उपाध्याय श्री सोहनविजयजी की कायम की हूई है जो कि हमारे ही शिष्य थे । इससे भी अधिक महासभा को हम श्रीसंघ पंजाब का संगठन समझते है, मतलब महासभा को हम पंजाब का श्रीसंघ समझते है यानि महासभा का जो ठहराव वह श्रीसंघ पंजाब का ही ठहराव समझा जाता है इस लिए श्रीसंघ पंजाज के स्थानापन्न श्री आत्मानंद जैन महासभा को वह कार्य करना योग्य है

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

जिसमें श्रीसंघ पंजाब और स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानंदसूरि प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी महाराज के शुभ नाम को शोभा देने वाला होवे।

१ जहां कहीं किसी धर्मकार्य में जरूरत पडे संघबल तरी-केसे सहायता पहुंचानी महासभा का काम है।

२ कहीं आपस में कुसंपसा मालुम होवे, दो चार योग्य सभासद वहां जाकर आपसमें समाधान कराने की कोशीस करें।

३ समाज के योग्य अनुकूल रीति रीवाज में देशकालानुसार किसी तरह धर्म में बाध न आवे सुधारा करना महासभा का काम है।

४ किसीने किसी रीति रीवाज में किसी समय आपखुदीसे या किसी की प्रेरणासे या किसी तरह भी बिगाड किया होवे तो उसको शांतिसे समझाना और ठिकाने लाना महासभा का काम है।

५ श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल, पंजाब श्रीसंघ की खास उन्नति के लिए ही खोला गया है यह आपसे छिपा हुआ नहीं है। आपका यानी श्री आत्मानंद जैन महासभा का फरज है गुरुकुल कमिटि को साथ देकर गुरुकुल की उन्नति का ध्यान रखें।

६ कितनेक भाईयों का ख्याल है कि जबतक गुरुकुल की अपनी बिल्डींग तैयार न होगी तबतक उन्नति में संशय है सो उनका ख्याल सच्चा है इसी लिए गुरुकुल कमिटि की तरफसे आये हुए लाला मानकचंदजी, वकील अनंतरामजी और लाला ज्ञानचंदजी गुजरांवाला तथा लाला मोहनलाल वकील अमृतसर, और लाला सदासुखराय अंबाला के रूबरू हमने अपना स्पष्ट

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विचार रख दिया है कि—शुरूसे ही हमारा विचार गुरुमहाराज के चरणों में ही है।

यद्यपि आप लोगों का एक विचार न होनेसे हमने एक दफा ऐसा लिखा हमको याद आता है कि, जबतक हम पंजाब न आवे तबतक बिल्डींग का विचार स्थगित रखें। उस वक्त हमारा विचार बहुत ही जलदी पंजाब में पहुंचने का था ओर हमको यह भी निश्चय था कि—हमारे पंजाब में पहूंचने पर कुल श्रीसंघ पंजाब का विचार हमारे विचार के साथ मिल जायगा। बात भी खरी है यदि हम अपने धारे विचार में सफल हो जाते तो आप देख लेते सारे पंजाब में विचर कर हम आज गुजरांवाला में चौमासा किये स्वर्गवासी गुरुदेव की शताब्दि का काम करते हुए नजर आते। परंतु फरसना जोरावरकि शताब्दि का काम हमको इस देशमें करना पडा।

यदि पंजाब में शताब्दि होती तो उस मौक्ये पर आये हुए इस देशके भाइयोंको गुरुकुल की बिल्डींग तैयार हुई हुई श्रीसंघ पंजाब दिखा देता। खैर अब भी आप श्रीसंघ पंजाब शताब्दि के मौक्ये पर इधर गुजरात देशमें पधारे तब गुरुकुल बिल्डींग का काम शूरू कर के ही पधारें ताकि श्रीसंघ पंजाब का प्रभाव अच्छा पडे।

७ शताब्दि प्रायः पाटन शहेरमें होगी ऐसी हमारी मान्यता है, क्यों कि १०८ श्री प्रवर्त्तकजी महाराज श्री कांतिविजयजी वहां बिराजमान है। भले कहीं भी होवे, जहां कहीं होगी आये गये भाईयोंकी योग्य सेवाभक्ति उस शहर के श्रीसंघ के जिम्मे होगी। अपने जिम्मेतो श्री गुरुदेव की शताब्दि की यादगार है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिसके लिए उपदेशद्वारा एक फंड जारी कराया है उस फंड की फिलहाल कामचलाउ एक कमिटि भी कायम हुई है, जो फंड चंदा एकत्रित करके बैंकमें जमा करा रही है।

फंडमें एक व्यक्ति-भाई हो चाहे बाई हो उसके नाम एकसो एकसे ज्यादाह रकम नहीं लिखी जाती। यदि किसी श्रद्धालु गुरुभक्त की अधिक इच्छा होवे तो वह अपने परिवारमेंसे जुदे जुदे नाम लिखवाने की उदारता दिखला सकता है। इसकी बाबत मुनिश्री चरणविजयजीने खास पंजाब के श्रीसंघके नाम एक संदेश छपवाकर भेजा है उसमें सारा खुलासा किया हुआ है। वह संदेश के कागज ट्रेक्ट रूपमें लाला मोहनलाल वकील के नाम भेजे गये हैं। उनको श्रीसंघ पंजाबके हरएक शहर व देहातोंमें पहुंचाना और फंड उघराने का काम महासभा की मारफत किया जावे तो आशा है काम बहुत ही जलदी हो जायगा। बस हमारा यही संदेश श्री आत्मानंद जैन महासभा के और श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल हर दो जलसों के लिए समझ लेना और सर्व श्रीसंघ पंजाब को धर्मलाभ पहुचा देना। हमारा हाथ दुःखनेसे ज्यादाह लिखा नहीं जाता। इतना भी तीन दिन में लिखा है। वल्लभविजय का धर्मलाभ। ता. २६-९-१९३५

वीर निर्वाण

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-४० (१५) १०-१०-३५

बम्बई पायधोनी गौडीजीका उपाश्रय

वल्लभवि० की तर्फसे—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री कलकत्ता यतिजी श्रीयुत सूर्यमल्लजी योग्य—सुखसाताके साथ मालूम होवे आपके पत्रोंकी प्राप्ति सूचक कार्ड दिया गया था मिल गया होगा।

आपने दीपमालिका की बाबत पूछा सो २८-२९-३०-३१ अंक में लिखे पाठानुसार आप स्वयं समझ सकते है। निर्वाण कल्याणक के रोज ही दीपोत्सव मनाना युक्ति युक्त है. जैन पर्व होने पर भी सार्वजनिक पर्व होजाने से कितनाक लौकिक व्यवहार भी संमिलित हो गया प्रतीत होता है अत एव वहीपूजनादिक लौकिक व्यवहाराश्रित कार्य कभी कभी लौकिक वृत्त्यनुसार किया जाता है जैसा कि इस वर्ष चतुर्दशीको दीपोत्सव वहीपूजन पंचांगों में लिखे मुजिब होगा। परंतु हमारी समज मुजिब निर्वाण कल्याणक तो अमावास्या को ही मनाना योग्य है। क्यों कि प्रभुके नींर्वाण के समय अमावास्या का २९ वा मुहूर्त, स्वाति नक्षत्र, नागकरण आदि का संबंध है और यह सब अमावास्याको मिलते है चतुर्दशी को नहीं इस लिए निर्वाण कल्याणक का छट्ठ करना चतुर्दशी अमावास्या का हमको योग्य मालूम देता है त्रयोदशी चतुर्दशी का नहीं।

लौकिक व्यवहार देखादेखी मिष्टान्नादि का प्रचार हो गया मालूम है जैनों के लिए अवश्य नहीं है। दीपालिकादि पर्वणि सुखभक्षिकादि करणे मिथ्यात्वमारंभो वेति प्रश्नोऽत्रोत्तरम्—आरम्भो लगतीति ज्ञातमस्ति, नतु मिथ्यात्वमिति २२५। सेनप्रश्न पत्र ७० उल्लास ३ ॥ अथैषुदिनेषु (चतुर्दशी, अमावास्या, प्रतिपदा) मध्ये एकोपवासेन सहस्रगुणं पुण्यं स्यात्, अष्टमतपसा कोटिगुणं पुण्यं स्यात्, यतो यत्र दिनेषु सर्वेजनाः पञ्चेन्द्रिय सुखाभिलाषिणो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जायन्ते, महान्ति कर्मबन्ध कारणानि रचयन्ति, भोगोत्सुका भवन्ति च अतस्तत्त्यागिना परमार्थज्ञाना महान् लाभो भवत्येव। अथवा चतुर्दश्याममावास्यायां च षोडश प्रहरानुपवासौ विधाय चन्दना क्षत पूजाभिः कोटि पुष्प सहिताभिः श्रीवीरादि जिनान् पञ्चचत्वारिंशत्सिद्धान्तांश्च पूजयेत् इत्यादि—

उपदेश प्रासाद स्तंभ १४ पत्र ७७ का पाठ ध्यान में लेनेसे श्रावकों का दीपालि का कृत्य प्रतीत होता है।

आज काल भी प्रायः बहुत श्रावक श्राविकायें उपवास छट्ठ अट्ठमादि करते हैं, कितने पूजा पढाते हैं, तीनों दीनों में प्रभु दर्शन किये विना तो कोइक ही अभागा रह जाता होगा।

पाटण शहर में तो ज्ञानपंचमी तक दुकाने बंध रहती हैं और सारे शहर के श्री जिनमंदिरों की श्री चतुर्विध संघ मिलकर चैत्यपरिपाटी करते हैं।

आपके उधर क्या क्या कारावाही होती है उसका हमको परिचय नहीं है। बाकी इधर तो प्रायः इन दिनोंमें लौकिक प्रवृत्तिकी अपेक्षा जैनों में धार्मिक प्रवृत्ति अधिक देखने में आती है. हां भोजनादि सामग्री प्रायः अन्य दिनोंकी अपेक्षा जरूर चढते नंबर की देखने में आती है। अन्य लोक चाहे दीपोत्सव को कैसे ही माने। परंतु जैन मात्र तो दीपोत्सव को प्रभु श्री महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक का महोत्सव ही मानते है और आनन्द मनाते है।

प्राचीन मन्दिरजी का जहांतक बन आवे जिर्णोद्धार होना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

योग्य समझा जाता है परंतु उसकी पूजा आदि का प्रबंध भी साथ में ही होना ठीक है। वल्लभवि०

दीपमालिका

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-४० (१६) १८-१०-३५

बम्बई पायधोनी ३

वल्लभवि० की तर्फसे श्री कलकत्ता

यतिजी श्री सूर्यमल्लजी योग्य—

सुखशाता के साथ मालूम होवे आप का प्रेम-पत्र मिला आनंद हूआ। आप के पत्रसे प्रतीत हुआ कि प्रथम किसी समय आपने हमारा अभिप्राय दीपालिका संबन्धी मंगवाया था जो आप के पास पहुंच चुका है तो फिर यह नया प्राणायाम किस लिए कराया गया? आप उसीसे संतोष मना लेते तो इस वक्त हमको कष्ट न उठाना पडता। अस्तु! इस निमित्त धर्मस्नेह में वृद्धि हुई। बाकी हमारा जो अभिप्राय प्रथम आया है और सब के साथ मिलता है वही अभिप्राय अब भी समज लेना। असल बात तो यह है कि कुछ आप के लिखने में फरक रहा। कुछ हमारे समजने में फरक रहा। आपने लिखा कि—"दीपमालिका पर्व कबसे प्रचलित हुआ वीर निर्वाणसे पहले या पीछे"। इत्यादि। इस विषय में जितने पाठ इस समय उपलब्ध हुए आपको लिख भेजें, जिन का मतलब वीरप्रभु के निर्वाण निमित्त

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ही दीपालि का पर्वोत्सव की प्रवृत्ति समझनी. यदि वीरनिर्वाणसे पहेले दीपालिका की प्रवृत्ति होती तो "गह्मसे भावुज्जोए दव्वुज्जोअं करिस्सामो" यह कैसे कहा जाता ? इस पाठसे साफ सिद्ध होता है कि प्रभुके निर्वाण के बाद दीप प्रकट किये गये। क्यों कि प्रभु के निर्वाण कल्याणक की तिथि अमावास्या मानी गई इस लिए दीवाली भी अमावास्या को मानी गई।

इस पूर्वोक्त विचारसे हमने समझा आप दीवाली प्रवृत्ति जानना चाहते है उस मुजिब हमने अपना अभिप्राय बतला दिया। यदि आप का ऐसा लेख होता कि दीवाली किस रोज माननी तो उसका सीधा और सरल थोडे में ही जवाब लिख दिया जाता कि पूर्वाचार्यों के उल्लेखानुसार लोक जिस रोज मनावें उसी रोज माननी. आशा है आप ठीक २ समन्वय कर लेवेंगे। अब के वर्ष दीवाली का यहां पंडितों में कुछ भेदसा प्रतीत होता है। मुंबई समाचार का लेख आप को ज्ञात होने के लिए भेजा गया है। इति धर्मस्नेह में वृद्धि रक्खें। द. वल्लभवि०

आपके यहां पर्युषण में बोली जाती स्वप्नों की और पालने की बोलियों का द्रव्य किस किस खाते में लिया जाता है। कितनेक साधुओं का ख्याल है और वह यही जोर दे रहे हैं कि देवद्रव्य में ही इसका उपयोग होवे अन्य में नहीं। हमारा अपना विचार है कि, "इसका किसी शास्त्रमें उल्लेख न होनेसे और जुदे जुदे स्थानों में जुदा जुदा रीवाज देखने सुनने में आनेसे वहां वहां के श्रीसंघ का अखतियार है वह चाहे देवद्रव्य में उपयोग करें चाहे ज्ञान में करें और चाहे साधारण में करें अपनी २ जरूरत के मूजिब स्थानीय संघ अपना निर्णय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर लेवें और उस माफिक वर्त्तें। समयानुसार उसमें परिवर्त्तन भी कर सके परंतु केवल देवद्रव्य में ही उपयोग होवे अन्य में नहीं ऐसा हमारा खुद का अभिप्राय नहीं है। आप अपना अभिप्राय यदि योग्य समझें तो लिख देवें। ईति शुभम्। द. व. वि.

गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१–४० (१७) १९–१०–३५

बम्बई

वल्लभ वि० की तर्फसे श्री बिनौली सुश्रावक बाबू कीर्ति-प्रसाद परिवार योग्य धर्मलाभ। आपका १५–१०–३२ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ। आप का पहला पत्र भी मिला था उसमें आपने वीरसेन-मामन के आनेका जिक्र लिखा था एक तो उनके आने की प्रतीक्षा बनी रही दूसरा जेठ सुदिमें वर्षाके कारण चीकनी भूमि पर पांव फिसल जानेसे एक ही पासेभर गिर पडनेसे बाजू दब गया इस कारण लिखा नहीं जाता। अभी तक दर्द हो रहा है परंतु आगेसे कुछ ठीक है। आप के पत्र में नाराजगी पढकर और जरूरी समाचार समझ कर यह पत्र कष्टसे भी लिखना पडा है। नाराज ईस शब्दको तो आगे लाना ही नहीं। रहा अंबाला का मामला सो हमने तो समझ लिया यदि आप दोनों तर्फ की कारवाई देख सुन लेवेंगे तो आपको खुद पता लग जायगा। हमने गत वर्ष अहमदाबादसे अंबालावालों को सलाह दी थी यदि वह उस पर कायम रहतेतो उसीवक्त

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सफाई हो जाती। लाला मानकचंदजी आदि यहां आये थे उस वक्त एक दिन पहले अंबालावाले जो कई रोज से यहां आये हुए थे रवाना हो गये उनको कहा भी गया। यदि रह जाते तो संभव था रूबरू कुछ हो जाता परंतु भावीभाव। अब भी यदि आप जैसे चार आदमी दिल पर लेवें तो सब कुछ ठीक हो सकता है। आप जरूर प्रयास करें यह काम आप जैसे सद्गृहस्थों के करने का है साधुओं का नहीं। तो भी आप के पत्रानुसार जलसा गुरुकुल तक हमने मंत्री अनंतराम वकील को मुलतवी रखने की सूचना कर दी है। गुरुकुल का जलसा शायद दीसंबर की आखरी में होगा उसके पहले २ सब बातचित करके जलसा के मौक्ये पर निपटारा करा देना। आपकी हाजरी होने आप सब भाईयों को अच्छी तरह समझा सकेंगे। अव्वल तो श्री हस्तिनापुरजी के मेले पर ही आप ठीकठाक कर लेवें।

सद्गत सेठ विट्ठलदासजी की बाबत काम करनेवाला कोई नजर नहीं आता। अपने तो उसीमें संतोष मनाये बैठे हैं जो वह अपनी जींदगी में कर गये हैं। संभव है ५ और ६ जो बकाया है वह मिल जावें। हाल तो ट्रस्टियों में विचार भेद के कारण अदालती कारवाई चल रही है हम इसी प्रयत्न में हैं किसी तरह आपसमें समझ लेवें।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६१-४० (१८) २०-१०-३५

गौडीजीका उपाश्रय पायधोनी, बम्बई पो० ३

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री अंबाला। श्री आत्मानन्द जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सभा योग्य धर्मलाभ। एक पत्र जीवणचंद धर्मचंद ज्हौरी की मारफत लिखवाया है पहुंच गया होगा। श्री आत्मानन्द जैन हाईस्कूल के हेडमास्तर की बाबत लिखा है सो हाईस्कूल के कार्यकर्त्ता को दे दिया होगा। वहां जो मास्तर है उनकी बाबत कुछ शिकायत सुनने में आती है। अगर ऐसा होवे और आपसमें श्रीसंघमें वैमनस्य होता होवे तो खाली आग्रह किये जाना अच्छा नहीं हैं। यह आदमी जिसके लिए लिखा गया है अच्छा होशियार और कुछ धर्म का प्रेमी मालूम देता है इस लिए तुम को लिखा जाता है स्कूल के कार्यकर्त्ताओं को मालुम कर देवें।

ब्रह्मचारीजी शंकरलाल को धर्मलाभ के साथ कह देवें पत्र तुमारा मिला था परंतु पंजाब का काम महासभाने उठा लिया इस लिए तुम को लिखा नहीं है। इस के साथ एक पत्र भेजा जाता है नानकचंद के नाम का है अंबाला की छाप है मालुम देता है ऊपर लिखे शास्त्री हरुक इन्द्रसेन के है इस लिए यह पत्र धर्मलाभ के साथ उनको दे देवें नानकचंद तीन रोज हूए यहांसे पंजाब को रवाना हो गया है। सर्व श्रीसंघको धर्मलाभ।

शताब्दि

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१–४० (१९) २२–१०–३५

बम्बई

वल्लभवि० की तर्फसे श्री आत्मानंद जैन महासभा पंजाब धर्मलाभ के साथ मालुम होवे दशटिकटां अंबाला शहर लगी हुई एक पत्र मिला जिसके वजन अधिक होनेसे यहां लगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फाजलका के मंदिर की बाबत समझ लिया इतने काम के लिए महासभा इतने दूर तक सिपारिश करे इससे तो पंजाबसे ही दो तीन मंदिरों से प्रबंध हो जाना मुनाशिब है, पांच सौ जीरा पांच सौ अंबाला और पांच सौ गुजरांवाला देना चाहे तो दे सकते है। जैसे फाजलका के भाई अमृतसर आये थे वैसे यदि वह यहां आजाते तो पंद्रा सौ उनके हो जाते। अब तो पंजाब के ही मंदिरो से यह रकम पूर्ण कर दी जावें तो अच्छा है, सौ सौ, दोसौ दोसौ, तीन सौ तीन सौ भी एक एक मंदिरजी से देवें तो पांच सात मंदिरों से काम बन जा सकता है, और हमारी राय में ऐसा में होना मुनासिब है।

शताब्दि के लिए उद्यम अच्छा हो रहा है यह यश महासभाको है परंतु हमारी रायमें महासभा की तर्फसे अमुक नाम कायम किये जावें और उनके नाम श्री आत्मान्द जैन शताब्दि का किसी बैंकमें खाता खोल दिया जाय ताकि किसीके दिलमें किसी किसमका शक पैदा न होवे और जलदी काम बन जावे। हमने अपनी तर्फसे सब सब जागा के लिए पत्र तैयार करवाये है दो चार रोजमें रवाना हो जायेंगे कवियोंसे कविता मंगवाना उत्तम कार्य है।

श्री जैन तत्त्वादर्शके छपवानेके लिए एक दफा जंडियालामें जिक्र हुआ था, कुछ रकम जमा हुई लाला खरायतीराम लक्ष्मणदास के यहां है. महासभा की तर्फसे श्रीसंघ जंडियालाके नाम पत्र लिख कर लाला टेकचंद की मारफत रकम लाहौर पहुंचाई जावे तो ठीक है। पुस्तक की प्रस्तावना में जंडियाला की रकम का परिचय देना खास ध्यान में रखना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नकोदर में सतियोंके उपदेशसे जो शताब्दि फंडके लिए जुदे २ शहेरों की दर्शनार्थ गई श्राविकायों की तरफसे रकम एहठी हुई है वह लाला रलारामजी के पास है। नकौदर मै फंडके लिए जाना होवे उस वक्त सतियांजीसे सब नाम वार वेरवाकी तपसील समझ कर रकमको फंडमें शामिल कर लेनी।

मास्तर भागमल्ल के नाम श्री आत्मानंद जैन सभा अंबाला सीटी की मारफत एक लफाफा भेजा था जिसका जिक्र तुमारें पत्र में आया है परंतु उस पत्रकी पहूंच मास्तरकी तर्फसे या सभाकी तर्फसे नहीं आई क्या कारण? मालाबंध काव्यकी बाबत क्या प्रबंध किया गया है? यदि मास्तर भागमल्लने या सभाने अभी तक कुछ भी न किया हो तो अब महासभा को वह जरूर करना चाहिये। पत्र उर्दूमें न लिखा करो तुमको शास्त्री (हिन्दी) आती है। यदि जैसे उर्दुमें हमें दिक्कत आती है वैसे तुमको हिंदी में आती हो तो मास्तर भागमल्लसे या किसी औरसे लिखवाया करो सब को धर्मलाभ।

२२-१०-३५ को शुरू किया, २३-१०-३४ को समाप्त करके रवाना किया हैं। २४ को भागमल्लके पत्रमें एक पत्र भेजा है। २३-१०-१९३५ द. वल्लभवि०

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२०) १९९२ भाईदूज
बम्बई

वल्लभवि० की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब धर्मलाभ। पत्र मिला हाल मालूम हुआ। अवसर आने पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शक्य होगा तो खुलासा होजायगा अन्यथा कमिटि का काम कमिटिने ही करना है। अस्तु! समय बलवान् है।

श्रीयुत ज्हौरी रणछोडभाई को इस वक्त कुछ भी कहना योग्य नहीं है। समय अच्छा आने पर आशा है वह इतनी छोटीसी बात का जरूर प्रतिपालन करेंगे। हाल तुम अपनी तर्फसे काम किये जाओ। विहार के समय अवसर होगा कहा जायगा। श्रीयुत सेठ हेमचंद अमरचंद मांगरोलवाला की सुपुत्री श्रीमती मैना बहिनने अपने भाई श्रीयुत सेठ नवीनचंद हेमचंद के साथ सादडी मारवाड दर्शनार्थ आई हुइ थी, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल को पांचसौ की मदद कही थी उस वक्त उनको हजारके लिए कहा गया था सो वह रकम उन्होंने भेज दी है पहुंचने पर रसीदमय धन्यवाद के भेज देनी और पक्कीवारी की तारीख मंगवा लेनी।

सद्‌गत सेठ प्रागजीभाई धर्मशी की धर्मपत्नी नवलबहिनने एक पक्कीवारी देनी स्वीकार करली है वह भी कुछ अरसे में पहूंच जायगी। सबको धर्मलाभ। २९-१०-१९३५

सूचना

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-४२ (२१) ५-११-३५

बम्बई-पायधूनी, पोष्ट नं. ३

गौडीजीका उपाश्रय

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री अजीमगंज सुश्रावक बाबू

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

साहिब श्रीयुत निर्मलकुमारसिंह नवलखा योग्य धर्मलाभ।

पत्र आपका मिला हाल मालूम हुवा। अपने पंडितके लिए लिखा सो हमारी समझ में (पंजाब) जीरा ZIRA जिला फिरोजपुर निवासी बाबू हंसराज जैन एम. ए. नवलखा वीसा ओसवाल आपकी इच्छानुसार करने के लायक है। यदि आप योग्य समझे तो बनारस भदैनी घाट स्याद्वाद महाविद्यालय के पते पर उनको पत्र देकर अपने पास बुलाकर रूबरू में बातचित कर लेवें। वह उत्साही और सेवाभावी बालब्रह्मचारी है। आपकी तरह सादगी पसंद खादीधारी है। अति लोभ तो क्या संतोषी नजर आते है। हमने उनको समाचार दे दिये हैं. अब आपकी इच्छा। जरूरत समझे तो पत्र लिख देवें. आगरावाले बाबू दयालचंदजी ज्हौरी उनको अच्छी तरह जानते हैं. आपका विचार बहुत ही सुंदर है परंतु एक बात जरूर ध्यानमें रखनी। जो भी कुछ भाषान्तर आदि कार्य कराया जावे उसको सही सही कराने के लिए एक दो या तीन विद्वानों की समिति जरूर बना लेवें। इतिशम्।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२२) १३-११-३५

बम्बई, पायधोनी, गौडीजीका उपाश्रय

वल्लभवि० की तर्फसे श्री गुजरांवाला श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब योग्य धर्मलाभ। ५-११-३५ का लफाफा मय नकलों के मिला। अजब लीला है। हम क्या जवाब देवें अक-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लमें नहीं आता। भावी प्रबल है। हितकारी तो हमेशह हित ही किया करते है चाहे अगला हित माने चाहे न माने। परन्तु आखीर हितकारी ही काम आते हैं। यहांसे जिसकी पक्कोवा-रीकी रकम पहुंच गई है उसका नाम और तिथि इस मुजिब लिखने की है।

“ बम्बई कोट में रहनेवाले मांगरोल काठियावाड निवासी सेठ नरोत्तमदास जगजीवनदास की धर्मपत्नी श्राविका श्रीमति मैंनाबाईने अपने स्वर्गस्थ पतिदेव के स्मरणार्थ वैशाख शुक्ला सप्तमी तिथि की पक्कीवारी ग्रहण की है। ” सबको धर्मलाभ।

ग्रंथमाला

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६२–४० (२३) १६–११–३५

बम्बई

वल्लभवि० की तर्फसे श्री अंबाला–दफतर श्री आत्मानन्द जैन महासभा योग्य धर्मलाभ। तुमारे सब पत्र मिले। समाचार मालुम हुआ। काव्यमालाबंध के लिए खुलासा किया गया है। और वह मसाला मास्तर भागमल्ल को भेज दिया गया है उनसे दरियाफत करके हमारे खुलासे के लिए उनकी सलाहसे काम करना। जिस कामके लिए जो कोई वाकफियत रखता हो उनकी सलाहसे काम करना योग्य है। तुमने अपने पत्रमें और दो बातें लिखी है, एक तो—श्री आत्मारामजी वचनामृत यह काम साधुसे न हो सकेगा। यदि पंडित हंसराजजो चाहें तो जरूर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर सकेंगे परंतु पंडितजी को श्री जैन तत्त्वादर्शके लिए हंसराज एम. ए. जीरा निवासी के साथ वास्ते मदद के कायम किये है ऐसा होने पर भी उनसे पूछ लिया जाय। यदि वह हिम्मत करें तो ठीक वरना किसी और मौक्ये पर सही परंतु यह काम पंडितजी जैसा और किसीसे होवे इस वक्त तो ध्यान में नहीं आता। हा भाई श्री हंसराज एम. ए. ने किसी श्रावकका नाम लिखाया वह काशीमें रहता है भाईश्री हंसराजजीसे दरियाफत कर लेवें. बाबू जसवंतराय जैन देहलीवाले भी यदि मन पर लेवें तो जरूर थोडा बहूता कर सकते हैं तुम खुलासावार उनको लिख दो कि महाराजने इस काम के लिए आपका नाम लिखा है और तुमारा पत्र आनेसे हमभी बाबु जसवंतरायको लिख देवेंगे।

दूसरा काम—श्री आत्मारामजी महाराज की स्तुती। सो यह काम उधर के पंडित लोक बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं। मास्तर भागमल्ल और चांदनमल्लसे पता मिल सकता है। यदि तुमारे ख्याल में आवे तो गुरुकुल का विद्यार्थी रामकुमार मास्तर भागमल्ल के पास आठ दश रोज रहकर करें तो कर सकता है। सबसे ठीक तो कस्तलावाला लाला कन्हैयालाल है. उनको यह काम सौप दो। वह गुरुभक्त है. जंडियालासे पता आगया होगा, न आया हो तो लाला टेकचंद को लिखना क्यों कि वह रकम जैन तत्त्वादर्श के लिए उन्ही के पास है।

साध्वी श्री देवश्री आदि के उपदेशसे एकठी हुई श्राविका वर्गकी रकम ग्यारह सौ की, नकोदरवाली तुमको पहूंच गई होगी। लाला रत्नचंद श्री आत्मानन्द जैन महासभा के खजानचीका ध्यान इस बात पर जरूर लाना कि यह रकम शताब्दि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फंडकी समझने की है न कि जैन तत्त्वादर्श की। इस लिए जैसी और रकम पंजाब श्री संघ की शताब्दि फंडमें जमा होगी उसी तरह इस को भी जमा करनी होगी। इसमें जिसकी पूरी रकम होवे उसका नाम मेंबर कमिटिमें दाखल करना होगा इस लिए श्री देवश्रीजी को लिख कर सब नाम मंगवा लेना। कितनीक गुप्त रकम भी विना नाम की इसमें होगी सो वह रकम श्री देवश्रीजी की इच्छानुसार श्री जैन तत्त्वादर्शमें डाल देनी। इसके लिए देवश्रीजी को लिखने की जरूरत होगी तो तुमारा पत्र आनेसे लिख दिया जायगा।

हमारा विहार आज १६-११-३५ को गोडीजीसे हो चुका है तो भी फिलहाल इस पत्र का जवाब इसी पते पर देना। हम जहां होंगे पत्र मिल जायगा। सबको धर्मलाभ।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२४) २१-११-३५

बम्बई पायधोनी, गौडीजीका उपाश्रय

वल्लभवि० की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब। गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ। प्रथम २९-१०-३५ के पत्रमें सूचना की हुई पक्कीवारी श्रीमती नवलबहिनने देदी है जिसका चेक पहुंचा होगा या पहुंच जायगा। पहुंचने पर मय धन्यवाद के पहुंच देनी। पहूंच हमारे पत्रमें ही भेज देनी उनको पहूंचा दी जायगी। वारी इस प्रकार लिख लेनी—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"स्वर्गस्थ सेठ प्रागजीभाई धर्मशी पोरबंदर निवासी की धर्मपत्नी श्रीमति नवलबहिनने अपने सद्गत पति के स्मरणार्थ मगसिर वदि गुजराती कार्त्तिक वदि ११ तिथिकी पक्कीवारी श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब को दी है" हमने विहार तो कर दिया था परंतु एक साधुकी तबियत नरम होनेसे ठहरना पडा है इस लिए पत्र यहां ही देना। श्रीयुत हेडमास्तर साहिब का लेख स्मारक अंक के लिए मिल गया है। श्रीयुत पंडितजी साहिब मथुराप्रसादजी के लेखकी प्रतीक्षा हो रही है। सबको धर्मलाभ।

खुलासा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२५) बम्बई २२-११-३५

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री गुजरांवाला १०८ श्री स्वामी सुमतिविजयजी। पं. विद्यावि० विचारवि० उपेंद्रवि० योग्य वन्दनानुवन्दना सुखसाता। श्री गुरुकुल की मारफत पत्र मिला होगा। आज दो बातोंका खास जुलासा आपसे होगा। इस लिए यह दूसरा पत्र लिखना पडता है। मेडता में एक सुप्रसिद्ध यतिजी थे उनके साथ बातचित होते हुए उन्होंने खुश होकर श्री गुरुदेव स्वर्गवासी जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि आत्मारामजी महाराज को कितनीक विद्यायें दी ऐसा सुननेमें आया है तो उस यति का नाम आपको याद होवे तो जरूर लिख भेजना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री वीरचंद राघवजी गांधी को चीकागो की धर्मपरिषद्में श्री गुरुदेव के प्रतिनिधि तरीके भेजा था उस वक्त एक चोपानिया अंग्रेजी का आया था उसके मुखपृष्ट ऊपर आठ खुरसियां पर आठ आदमी बैठे हुए नजर आते है जिनमें एक खुरसी पर श्री गुरुदेव का फोट्ट विराजमान है, उसका फोट्ट भी अपने उतवाया था उस फोट्ट की इस वक्त खास जरूरत है। हमारे पास था परंतु वह कहां रखा गया याद नहीं आता। यदि आपके पास या कहीं और और जगा इसकी नक़ल आपके ख्याल में होवे तो जरूर तपास करके रजिष्टर्डद्वारा हमको पहुंचा देवें। उसकी नकल उतरवाकर आपको वापिस पहुंचा दिया जायगा। सर्व श्रीसंघ गुजरांवाला को धर्मलाभ। साध्वियांजी को सुखसाता।

विशेष श्री स्वामीजी महाराज योग्य विज्ञप्ति है कि आप अपना अकेले का फोट्ट इस वक्त का होवे तो। यदि न होवे तो नया उतरवा कर जलदी पहुंचा देवें।

सर्व धर्म परिषद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२६) २१-४-३६

वल्लभवि० की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक प्रोफेसर बाबू बनारसीदास जैन M. A. योग्य धर्मलाभ वैशाख कृष्ण नवमी १६-४-३६ का पत्र मिला हाल मालूम हुवा। बम्बई अहमदाबादसे कोई जवाब आज तक आया नहीं है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपने पासपोर्ट और जहाज के कमरे के लिए लिख दिया अच्छा किया। श्रीयुत लालन लिखते हैं कि–" विश्वपरिषद में प्रतीनिधि तरीके हाजर रहें उसको आधे किराये में टिकिट मिल सकती है ताकि जाने आने का किराया ५२० रुपया लगता है ऐसा बम्बईसे एक मित्र लिखता है"। इसका पत्ता हमने बम्बईसे मंगवाया है यदि यह सत्य है तो और भी अच्छा.

लंडनसे हमारे पास कोई प्रोग्राम नहीं आया। भाई श्री लालनने हमको इस बातका पता दिया है जिस तरह स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी महाराजने मरहुम गांधी वीरचंद राघवजी बार-एट-लो को चीकागो विश्वपरिषद में भेजा था इसी तरह लंडन में आपकी तरफसे जैन प्रतीनीधि जाना चाहिये ताकि गुरु महाराज के कार्य की पुष्टि होवे. इस परसे हमने आपको लिखा है आपने हिम्मत करी खुशी की बात है। परंतु १८–४–२६ के जैन ज्योतीके अंक में पेज २७७ कोलम १ में " सर्व धर्म परि-षद लंडन " इस हेडिंग के नीचे लिखा है कि—

લંડન સર્વ ધર્મ પરિષદ (વર્લ્ડ ફેલોશીપ ઓફ ફેઇથ) નું બીજું અધિવેશન તા. ૩ જી થી ૧૭ જુલાઇ સુધી મલશે. મહારાજા સયાજીરાવ ગાયકવાડ પણ આ પ્રસંગે હાજરી આપવાના છે. જૈનોને સ્થાન ન આપવા બદલ સૌએ પોતાનો વિરોધ જાહેર કરવો જોઇએ. સર્વ ધર્મ પરિષદના મંત્રીનું સરનામું નીચે મુજબ છે.

Mr. Arthur Jak man No, 17 Belford Square
London W. C. I.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके लिए लिखा पढी हो रही है आपने भी लंडन हर्बर्ट वॉरन को लिखा है खुलासा आजायगा।

सुंदरलाल यात्रा करके आ गये होंगे उनको धर्मलाभ के साथ कहना श्री जैन तत्वादर्शका कुल खर्चा कितना आया उसका हिसाब और पुस्तककी व्यवस्था कैसे होगी।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६२-४० (२७) ३४-४-३६

Miyagam (B. B. C. I- R.)
C/o. Zaverchand Nanchand B. A.

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन महासभा योग्य धर्मलाभ। आपको पता होगा कि लंडन में सर्वधर्म परिषद् होनेवाली है हमारी इच्छा है कि, जैसे गुरुदेवके समय में श्री गुरुदेवने चीकागो में श्री वीरचंद गांधी को भेजा था इसी तरह अबके भी जैन प्रतिनिधि भेजकर श्री गुरुमहाराज के नाम को रोशन किया जायगा। यकीन है कि महासभा हमारे साथ इत्तिफाक राय होगी। मतलब यह है कि जहां तक हो सकेगा हम इधर कोसिस करेंगे. मगर किसीने इमदाद न दी तो फिर इस काम को महासभाने करना होगा।

उमीद है यात्रा करके सब राजीखुशी पहूंच गये होंगे लाला वसंतमल्लजी साढोरावाला कैसा भाग्यवान् पूनम की यात्रा करके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एकम को वहां तीर्थभूमि में ही स्वर्गवास हो गये, धन्य है ऐसा मौक्या किसी भाग्यवान को ही मिलता है। सबको धर्मलाभ।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२८) २५-४-३६

वल्लभवि० की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक प्रोफेसर बाबू बनारसीदासजी एम. ए. जोग धर्मलाभ। २१-४-५६ का पत्र मिला होगा। सर्वधर्म परिषद् की कार्यवाही की एक छोटीसी किताब मिली है जो भेजी जाती है उमीद है इससे आपको वहां जो काम जिस तरकीबसे लेनेका है माल्रूम हो जायगा।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (२९) मीयागाम ७-५-३६

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन महासभा पंजाब। अंबाला शहर। धर्मलाभ। २८-४-३६ और ४-५-३६ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ। श्री गुरुदेव की जन्मशताब्दि पर आया हुआ कुल श्रीसंघ पंजाब श्री शत्रुंजयादि तीर्थों की यात्रा करके सकुशल अपने २ स्थान में पहुंच गया लिखा खुशी की बात है। प्रतिनिधि लंदन भेजने के लिए प्रयत्न हो रहा है। महासभाने लिखा पढी शुरू की है अच्छी बात है। हमारी समझ में प्रोफेसर बनारसीदास जैन एम. ए. पी. एच. डी. (लंदन) लुधीआना निवासी जो आजकल लाहौर ओरियंटल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कालेज कृश्ननगर में प्रोफेसर हैं। ईस कामके लिए योग्य है। हमने उनके साथ लिखा पढी शुरू की है उन्होंने स्वीकार करके अपनी योग्य तैयारी भी शुरू कर दी है। अब आप उनको लिखकर या रूबरू में दरियाफत कर लें और उनके योग्य सब प्रबंध कर लेवें। गुजरांवाला लिखा जायगा। फिलहाल आप इस कामके लिए इंतजाम करें। श्री जैन तत्त्वादर्श का कुल कितना खर्च आया। मदद के सिवाथ शताब्दि फंडमें से कितना लिया गया और कितना बाकी है। कहां रखना किस तरह रखना इसका विचार बम्बईवालों के साथ मारफत श्री बाबूराम जैन एम. ए. एल. एल. बी. के किया जायगा।

पदवियों की बाबत हमारी समझ के मुताबिक मौक्या देखकर किया गया है. सब जागा समाचार पहुंच गया है जैन आदि छापेमें भी छपा गया है अब महासभा की तर्फसे चाहे लिखों चाहे न लिखो। पंजाब में खबर पहुंचाने के लिए महासभा को यहां के श्रीसंघ की मारफत इस विचारसे इशारा कराया गया था कि सब जागा जुदा २ तार दिलाने के बजाय एक महासभा को सूचना दे दी जाय महासभा, पंजाब के लिए सरक्यूलर जारि कर देगी। सबको धर्मलाभ।

महासभा का फरज समजा जाता है कि वह हमारी सूचनाकी मुआफ़क पंजाब में एक सरक्यूलर जारी कर देवें कि— श्री ललितवि० कस्तूरवि० उमंगवि० और विद्यावि० को आचार्य पदवीसे विभूषित किये गये हैं उसकी खुशाली में अपनी सहुलियत के मुताबिक एक रोज श्री मंदिरजी में पूजा विगैरह का आनन्द मनावें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेवा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४० (३०)

बडौदा–घडियाली पोल, जानी शेरी.

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री बीनौली। २७–५–३६ सुश्रावक बाबू कीर्तिप्रसादजी बी. ए. एल. एल. बी. गवर्नर श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब योग्य धर्मलाभ। शताब्दि के बाद देढ महिनेसे कुछ अधिक मियागाम, करजन, सुरवाडा, दरापुरा पादरा आदि स्थानों में विचर कर २५–५–३५ को सुखसाता के साथ वापिस यहां आना हुआ है. चौमासा यहां ही होने का संभव है. कितनी दफा पत्र लिखना चाहा परंतु रह गया. आज खास निमित्त के मिलनेसे लिखना ही पडा।

वीर सन्देशके १० मई के अंकमें "आल इण्डिया जैन एसोसियेशन" शीर्षक लेख पढा जिसमें आपका शुभ नाम पढ कर पत्र लिखना याद आगया सबसे पहिले तो आप थोडेसे थोडा यानी कमसे कम दो तीन पेजका भी एक सुंदर लेख हिन्दी में या अंग्रेजी में जलदीसे जलदी लिखकर मय अपने फोटू के यहां भेज देवें क्यों कि स्मारक अंक अब करीब २ तैयार हो चुका हैं उसमें देना होगा. हमारी रायमें स्वर्गवासी गुरुदेव का और आपके कुटुंब का परिचय यावत् आप गुरुकुल की सेवा करते रहें यह समाचार आपके लेखमें होना चाहिये।

जो सात प्रस्ताव पास किये है बहूत ही जरूरी हैं परंतु

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अमलमें आवें तब। क्यों कि बडे आदमियों को कुछ दरकार नहीं होता और नाही उनको फुरसत मिलती है।

इसमें शक नहीं जिन २ महाशयों के नाम छापेमें लिखे गये है यदि इन की जैन धर्म के लिए जिगर की लागनी होगी तो धारे मुजिब काम बहुत ही जलदी कर सकेंगे। क्यों कि सबके सब प्रतिष्ठित है. यदि येह सद्गृहस्थ फुरसत निकालकर जुदे २ स्थानों में दौरा करें तो यकीन है बहूत सारी जनता ईनको साथ देगी। बशरते कि जैन धर्म के मूल सिद्धांतकी किसी तरह भी हानि न होने पावे।

एक बात और भी ध्यान में रखनी इस प्रकार की क्रांति यदि होगी तो उसी देशमें होगी। हां फिर धीरे धीरे इदर भी हो सकेगी। आप आर्यसमाज की प्रगति की तर्फ दृष्टि डालिए। इसमें एक ही बात विचारने की है। जितनी कट्टर वाडाबंधिये इस देशमें है अन्यत्र प्रायः इतनी नहीं। अस्तु! शासनदेवसे यही प्रार्थना है कि आप जैसी सेवाभावी व्यक्तियें बाहर आवें और जैन धर्मकी सत्यता फैलावें।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१–४१ (३१) ३०–५–३५

बडौदा घडियाली पोल, जानी शेरी

वल्लभवि० की तर्फसे लाहौर प्रोफेसर श्रीयुत बनारसीदासजी एम. ए. जोग धर्मलाभ। बहुत अरसा हुआ आपका कोई पत्र मिला नहीं उमीद है आपने अपनी तैयारी कर रखी होगो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अंबाला महासभासे जो पत्र गया था उसका जवाब आगया है महासभाने फिर दुबारा लिखा है उसकी नकल भी इसके साथ है अब दिन बहुत ही थोडे रहे हैं आप अपनी तैयारी कर लेवें। संभव है प्रतीनिधित्व भी वहां जाने पर मिल जावे। किस रोज रवाना होकर किस रोज यहां आना होगा और किस रोज बम्बई जाना होगा और किस तारीख को स्टीमर में चढना होगा? आगे बम्बई का पत्ता आप को लिखा था आधे किराये के लिए सों अब तो मेम्बरी का टिकट आ गया है आप उनसे लिखा पढी कर सकते हैं महासभा को भी लिख दिया है। पत्र का जवाब जल्दी ही देना।

सांत्वना

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (३२) ३-६-३६

बडौदा घडियाली पोल, जानी शेरी

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री बिनौली सुश्रावक बूबा कीर्त्तिप्रसादजी वकील सपरिहार योग्य धर्मलाभ। ३१-५-३५ का लिखा १ जून १९३६ का रवाना हुआ आपका पत्र आज ३-६-३६ को मिला। हाल मालूम हुआ। यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना। धार्मिक कार्यों में हमारा हमेशां सहयोग ही है. आप जब चाहे हमारा योग्य सहयोग ले सकते हैं, हम यथाशक्ति योग्य सहयोग देने को तैयार है लाला वीरसेन के दिलगिरि के समाचार मालुम हुए

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप जानते हैं कालके आगे किसीका भी जोर नहीं है दो दिन आगे पीछे सबके लिए यह मार्ग जारी है इस लिए यथाशक्ति दानपुण्यादि धर्मकृत्योंसे अपने आप को सावधान करना योग्य है। लाला श्रीचंदजी को बडा भारी आघात हुआ होगा। हमारी तरफसे धर्मलाभ के साथ उनको सांत्वन देना। जीव अपने २ कर्मानुसार सुख दुःख भोगता है। जितना जिसका संबंध होता है पूरा करके विदा हो जाता हैं। सबर-संतोष के सिवा और कोई उपाय नहीं है। चिंता फिकर-आर्त्तध्यान के करनेसे कर्म-बंध के सिवा और कोई लाभ नहीं इस लिए गई बात को भूल कर प्रभु स्मरण आदि जो बन आवे धर्मकृत्य करनेमें ही ख्याल रखना। अलवर में ८०० सालका पुराना जिनमंदिर निकला लिखा सो खुशी की बात है इनके लिए कोशिश का करना आप जैसे सेवाभावी धाराशास्त्रियों का ही काम है। अलवरसे हमारे पास पत्र था हमने श्रीयुत ढढाजी को वह पत्र इस इरादासे भेजा है कि वह योगिराज की सलाहसे कुछ कोशिश करें। उनका जवाब आगया हैं मैं आबूजी जाकर अर्ज करूंगा फिर खुलासा दूंगा। युं तो अलवर और दील्ही के भाईयोंने अलवर राज्य में लिखा पढ़ी शुरू की है परंतु आप समझते हैं रिया-स्तोंके मामले सीधे उतर जावे तो लहेर कर देवें।

आकोला जिलाके वारसी तकली गांवमें २६ जैन मूर्त्तियां ईसाकी मृत्युसे ७०० वर्ष पहिले की जमीनमेंसे नीकली है आपने लिखा सो बडी खुशी की बात है। इसके लिए पत्र लिखकर हम पता मंगावेंगे परंतु कोशिश करने का काम तो आप जैसों का हैं। यदि आल इंडिया जैन एशोसियेसन या उनके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चुनन्दा मेम्बर इश कार्यको हाथ में लेवें तो उमीद है बहुत ही जलदी काम याबी हासल हो सकती है। क्यों कि सबके सब सद्गृहस्थ प्रतिष्ठित और साक्षर हैं साथ में परमार्थ के साथ समाज में इन सद्गृहस्थ मेंम्बरों का अच्छा प्रभाव पड जायगा और समाज उनके कार्यको सादर स्वीकारने को भी तैयार हो जायगा ऐसा हमारा मानना है. इधरके या उधरके भाई तभी प्रयत्न कर सकते हैं जब कि उनको कोई प्रेरणा करनेवाला होवे। कितनेही को तो खबर तक भी न होगी कि कहां क्या हो सकता है। आकोला तरफ की बात हमने भी आपके लिख-नेसे ही मालूम की है। आप अपनेसे बने परमार्थ का काम किये जावें अंतमें सबने अपना ही किया पाना हैं। सबको धर्म-लाभ। आप लेख भेज देवें ब्लाक गुरुकुलसे मंगवा लिया जायगा।

सन्मान

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (३३) ४-६-३६

बडौदा घडियाली पोल जानी सेरी

विजयवल्लभसूरि आदिकी तरफसे श्री कलकत्ता सुश्रावक श्रीयुत सुमेरमल्लजी सुराणा सपरिवार योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुजसाता है हमारा चौमासा यहां ही होगा। आचार्य श्री विजयललितसूरि अहमदाबाद के श्रीसंघ की विनतीको मान देकर चौमासा के लिए उधर जा रहे है आज उनके पत्र मुजिब वसो गाममें होंगे कलको मातर सुमतिनाथस्वामी साचा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देवके दर्शन करेंगे। वहांसे खेडा जावेंगे संभव है वहां दो चार रोज मुकाम करेंगे। वदि ११ को अहमदाबाद पहुंचने का विचार है इस लिए यदि पत्र देना हो तो नगरसेठ बालाभाई की मारफत खेडा (Kaira) जिला अहमदाबाद देना बादमें शा. मगनलाल हरजीवनदास फोटूवाला की मारफत–अहमदाबाद, पांचकुवा के पते पर देना।

विशेष—रोयल एसियाटिक सोसायटी ओफ बंगाल कलकत्ता की ओफीस में दरियाफत किया जावे और अगर डाक्तर ए. एफ. रुडोल्फ होर्नल कि जिन्होंने उपवास के दशांगसूत्र अंग्रेजी अनुवाद सहित छपवाया है और जो सन १८८८ में इस सोसायटि के सेक्रेटरी थे, इनका फोटु यदि मिल जावे तो जरूर मिहनत करके जलदी पहुंचा देवें श्री गुरुदेव के स्मारक अंकमें देना है। यदि आपसे न बन आये तो श्रीयुत पूरणचंद नाहर वकील को धर्मलाभ के साथ कह देवें।

जैन काव्य

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६२–४१ (३४) ७–६–३६

बडौदा घडियाली पोल, जानी शेरी

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री आत्मानन्द जैन महासभा योग्य धर्मलाभ। अंबालाशहर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३-६-३६ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ जैसे तुमारे विचार ढ़ीले हो गये वैसे प्रोफेसरजी के भी ढ़ीले हो गये हैं हमारे विचार भी तो ढीले हो जावे इसमें आश्चर्य ही क्या। परंतु जरा सबर ! पंडित लालन मंगलवार ९-६-३६ को यहां आते हें उनके आये बांद् निश्चित होगा। येह् आगे गये हूए हे इनको सभासद तरीके आमंत्रण भी मिला हूआ है उधर कईयां के साथ इनकी मुलाकात भी है जैन प्रतिनिधि का स्वीकार हो चूका है जिसमें बाबू चंपतरायजी कायम किये गये सुना गया है यदि लालन जा पहुंचेंगे तो उनके स्थान पर एक दो दफा लालन को भी प्रतिनिधि तरीके जागा मिल जायगी। जो टीकट तुमने मंगवाया है वह इनके काम आ जायगा। तुमने टीकट यहां भेज देना साथमें महासभा की ओरसे एक पत्र भी लिख भेजना जिसमें नाम की जागा खाली रखकर जो कुछ लिखना मुनासिब होवे लिख देना लालन जावेंगे तो उनका नाम लिखा जायगा वरन जिस किसीको टीकट भेजा जायगा उस महाशय का नाम लिख दिया जायगा गरज किसी न किसी तरह गुरुमहारज के नामके साथ महासभा का नाम तो प्रसिद्ध हो ही जायगा। श्री गुरुदेव के नामके आगे दाम कोई बडी चीज नहीं है और श्री गुरुदेव के नामको रोशन करना महासभा पंजाब का ही काम है।

योगाभोगानुगामी काव्यका रजिष्टर्ड भेजा गया है जैसा आया हमने शास्त्रीजी मिलने को आये थे हाथोहाथ दे दिया था, क्यों कि हमारा देखने के लिए अधिकार न था इस लिए हमने देखा नहीं। श्रीयुत हीरानंदजी देखकर दे गये वैसे का बैसा पेक करके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भेजा गया है पहूंच गया होगा। जब कि हमने देखा ही नहीं तो राय कैसे दे सके ? परंतु शास्त्रीजीने जो कुछ लिखा होगा ठीक ही होगा। अब औरो को देखा कर जलदी ही जाहिर होजाना चाहिये। हमने तुमको जो भेजा था वह तुमको भेजनेसे पहेले सारा ही देखकर भेजा था वह हमको पसंद आनेसे ही भेजा था बलकि उसका पहला कुछ हिस्सा स्मारक अंकमें भी हमने पहुंचा दिया है। हमारी समज में कई वर्षोंसे येह शास्त्री जैन साधुओं को पढाते है इस लिए श्रीयुत हीरानंदजी, पंडित हंस-राजजी, मास्तर भागमल्लजी आदि की तरह कितना ही जैन दर्श-नका इनको परिचय है इस लिए औरोंके लिखे अर्थ विना देखे भी अनुमान कर सकतें है कि, जैन धर्मके लिहाजसे जितनी कामयाबी इनको हो सकती हैं औरोंको नहीं। आजकाल येही शास्त्रीजी अपने पास यहां साधु-साध्वियोंको पढानेका काम करते हैं, आदमी अच्छे सज्जन मालूम देते हैं। यदि इनका नाम आजायगा तो इन्हींसे हिन्दी अनुवाद भी कराया जा सकता है, परंतु हिन्दी अनुवाद के संशोधन में संभव है पंडित हंसराजजी या मास्तर भागमल्लजी के सहयोग की जरूरत पडे. क्यों कि पंडितों का हिन्दी कुछ प्राचीन आदत के आधीन होता है।

भले ! सढौरेवालेने इन्कार किया उनकी इच्छा ! परंतु संभव है देख कर इच्छा हो भी जावे अन्यथा और भग्यवान घने है। लाला बनारसीदासको धर्मलाभ के साथ पूछ लेना उनको जुदा भी पत्र दिया है लाला गंगारामजी का नाम ठीक शोभा देगा।

अज्ञान तिमिर भास्कर के लिए सुंदरलाल का पत्र आनेसे मालुम होगा उस पर फिर निर्णय किया जायगा। स्मारकअंकमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देने के लिए महासभा के प्रमुख मंत्री और खजानची के फोटू पहूंचा देने, साथ में क्रांतिकारी जैनाचार्य के रचयिता बाबूराम जैन वकील एम. ए. एल. एल, बी. जीरा निवासी का फोटु भी भेज देना. मरहूम बाबू गोपीचंदजीका भी फोटु भेज देना। सबको धर्मलाभ।

सर्वधर्म परिषद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (३५) १२-६-३६

बडौदा घडियाली पोल जानी सेरी

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे सुश्रावक श्रीयुत ढढाजी योग्य धर्मलाभ पत्र आपका मिला जो श्री विजयललितसूरिजी को भंडारीजी संपतराजजी के हाथ भेज दिया है आप जानकर खुश होंगे कि आप की इच्छानुसार पंडित लालनको सर्वधर्म परिषद लंडन भेजा गया है।

कल तारीख ११-६-३६ को यहां सभा हुइ थी जिसमें पंडित लालन का भाषण हुआ था सबने खुशी मनाई फोटु लिया गया रातको बम्बई विदा हूआ। यदि होसका तो कल १३-६-३६ की स्टीमर में रवाना हो जावेंगे वरन २०-६-३६ को रवाना होकर ३-७-३६ को लंडन पहूंच जावेंगे। मीयागामसे आपने श्री आत्मानंद जैन महासभा को लिखा था उसकी सफलता समझिए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अलवर की बाबत याद होगी।

आचार्य श्री विजयललितसूरि विजयलाभसूरि आदि एकादशी सोमवार १५-६-३६ को अहमदाबाद पहुंच जावेंगे और आचार्य श्री विजयकस्तूरसूरि मियागाम चौमासा के लिए यहांसे विहार करेंगे। सबको धर्मलाभ।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (३६) १३-६-३६

बडौदा घडियाली पोल, जानी शेरी

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे। श्री अंबाला शहर श्री आत्मानन्द जैन महासभा योग्य धर्मलाभ। ११-६-३६ का पत्र मिला। पंडित लालन यहां १०-६-३६ की रातको आये ११-६-३६ सुबह बातचित हुई। चार बजेको सभा ठहराई। छै बजे सभा का काम समाप्त हुआ। रातको बम्बई को रवाना हुए। अगर मौक्या मिल गया तो आजकी स्टीमर में रवाना हो गये होंगे। वरन २०-६-३६ की स्टीमर में रवाना होकर ३-७-३६ की लंडन जा उतरेंगे। टीकट उनको पहुंचा दिया जायगा। एक पत्र यहांसे दिया गया है जिसकी नकल भेजी जाती है इसके मुताबिक लिखा पढी होवे ताकि एकता बनी रहे। मतलब कि तुमारा हमारा एक ही अभिप्राय उनको मालुम होवे, कहीं गलतफहमी न हो जावे कि यह और यह जुदे होंगे।

२ योगाभोगानुयामी के लिए नतीजा आने पर बात।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३ अब बनारसीदासजी को क्या पूछना रहा ? तुमारे कागजात जो हमने उनको भेजे थे वह तुमको भेज देनेको लिख दिया है।

४ अज्ञानतिमिर भास्कर के लिए हम तुमारे विचारके साथ मिलते हैं।

५ बम्बईसे पत्र आवे उसकी नकल हमको भेज देनी और उनको लिख देना कि आपका पत्र महाराजको भेजा गया है उनकी आज्ञा और उनके उपदेशसे यह काम हुआ है अब भी उनकी इच्छानुसार किया जायगा।

६ गुजरांवाला के लिए अभी खामोश।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२–४१ (३७) बडौदा २०–६–३६

विजयवल्लभसूरि की तरफसे अंबाला श्री आत्मानंद जैन महासभा पंजाब योग्य धर्मलाभ १७–६–३६ का पत्र १८ को रवाना होकर आज २० को हमको मिला हाल मालुम हुआ। आजरोज लालन विलायत को विदाय हो गये होंगे कल १९ को बम्बई में उनकी विदायगी का जलसा था। तुमारा भेजा टिकट उनको पहूंचा दिया है। बाकी तुमारे लिखे मुजिब कारवाईसे बुधवार और शनीवार को हवाईडाक जाती है शनी तो आज हो गया अब बुधवार लिया जायगा। बम्बई के पत्रका जवाब ठीक दिया गया। यहांसे अभी जवाब देनेकी जरूरत नहीं है। जब उनका पत्र आगया देखा जायगा। सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके साथ पटियाला का पत्र है महासभा की तरफसे तह-किकात होनी जरूरी है, हमने उनको लिख दिया है, कोई फिकर नहीं करना हमारे पंजाब में आने पर आपकी इच्छानुसार सब कुछ कर दिया जायगा फिलहाल मौजूदा मूर्त्तियोंसे अपना काम चला लेना महासभा को हमने लिखा है उमीद है कोई भाई आपके पास आयगा उनको दरियाफत कर देना। सो तुमने ध्यान में ले लेना। समाने के मार्ग का क्षेत्र है।

योजना

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (३८) बडौदा २०-७-३६

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री गुजरांवाला सुश्रावक लाला छोटालाल (लालशाश) कपूरचंद प्रथिराज आदि सर्व परिवार धर्मलाभ। दिलगिरि का समाचार तो दे चुके हैं। अब तो आनंद समाचारसे मतलब है। आचार्य श्री विजयविद्यासूरि का लिखा १०८ श्री स्वामीजी महाराज श्री सुमतिविजयजी का पत्र आया जिसमें लाला मानकचंदजी के समाचार के साथ लालाजी की और तुमारी उदारता का परिचय दिया कि दशहजार का धर्मार्थ दान किया है और वह बिरादरी के मुखिया दो चार भाईयोंकी सलाहसे काम में लिया जायगा बडी खुशी की बात है। सावाश है तुमारे होंसलेको। अगर लायक पुत्र होवे तो तुमारे जैसे ही होवे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हमको केवल इतना ही अफसोस रहा कि लालाजी की बिमारी का तुमने पता नहीं दिया। अगर पता मिल जाता तो हम अपने दिलकी बात लिखकर खुद उनसे ही खुलासा मंगवा लेते। खैर अब तो तुमारें और बिरादरी के भाईयों के अखतियार रहा। तो भी लालाजी के गुरु तरीके हमारा भी कुछ हक है इस लिए हम अपना विचार दिखा देते है।

इतनी बडी रकम को टुकडे कर के इधर उधर कर देनी बिलकुल ठीक नहीं।

लालाजी के नाम के साथ कोई ऐसा काम होवे जो हमेशह फल देता रहे वह काम नीचे लिखे जाते हैं इनमेंसे कोई भी एक काम जो तुमको और तुमारे सलाहकारों को रुचे वही काम किया जावे.

१ क्यों कि लालाजी श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल के शुरूसे लेकर अपनी जींदगी तक प्रमुख रहे है उनकी सच्ची सेवा का सच्चा नमूना गुरुभक्त तरीके गुरुकुल में कायम के लिए होना चाहिये। उसके तरीके येह है—

(अ) श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल के बिल्डींग फंड में दो हजार की रकम देने का लालाजीने वायदा किया था उसके साथ यह दश हजार की रकम मिलाकर बारां हजार में श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल की बिल्डींग का नीचे का भाग कराया जावे और दरवाजा पर या जहां योग्य समझा जावे लालाजी का बस्ट रखा जावे।

(ब) दश हजार की रकम कायम रखी जावे और उसके व्याजसे आई रकम की मदद बतोर वजीफा के श्री आत्मानंद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन गुरुकुल के होनहार दो विद्यार्थीयों को दी जावे। दो के तैयार हो जाने पर और दो को। इस तरह गुरुकुल के कई विद्यार्थी तैयार होकर उपदेश के काम में उपदेशक तरीके शिक्षाके काममें शिक्षक तरीके काम आ जावेंगे।

(ख) श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल में लालाजी के नामसे उद्योग विभाग खोला जावे और उसमें प्रेसका तथा मशीनरी का प्रबंध किया जावे।

२ यदि सीयालकोट में कुछ भाईयों की सलाह होवे और योग्य समझा जावे तो लालाजी के नामसे श्री जिनमंदिर बनवाया जावे ताकि वहां के श्रद्धालु भाईयों को प्रभुदर्शन पूजा का लाभ मिले। तुमारे संबंधी वहां ज्यादा होनेसे तुमको कई जातकी मदद और सहुलियत मिल सकेगी।

इन सब बातों का विचार कर के जो भी कुछ काम करना चाहो बहुत ही जलदी कर लेना ठीक है सब को धर्मलाभ।

ट्रेक्ट

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१–४१ (३९) २१–७–३६

बडौदा–घडियाली पोल, जानी शेरी.

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक बाबू बनारसीदास जैन एम. ए. पी. एच. डी. योग्य धर्मलाभ। श्री देव-गुरु धर्म के प्रसादसे यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सबको धर्मलाभ। श्रीयुत पंडित लालन लंडन सुखशांतिसे पहुंचे है ९ तारीख का उनका पत्र आया है दश तारीख को उनका वक्तव्य था सो समाचार आनेसे मालुम होगा।

वकील बाबूराम एम. ए. जीरा निवासी की किताब "क्रांतिकारी जैनाचार्य" की प्रस्तावना आपने लिखी है जिसमें बादशाह अकब्बर के साथ श्री हीरविजयसूरि महाराज का एक भी प्रसंग नही आया है इसमें आपने कोई खास कारण समझा होगा। हमारा इरादा है इस भाद्रो सुदि में श्री हीरविजयसूरिकी जयंती के समय आपका और आप के परिवार के किन २ साधुओं का बादशाहके साथ किस प्रकार का परिचय था एक ट्रेक्ट निकलवाया जावे और वह आपके ही हाथसे लिखा जावे आप अपना उत्साह दिखावेंगे।

सूचना

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (४०) बडौदा २२-७-३६

वल्लभवि० आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन सभा पंजाब अंबाला सीटी योग्य धर्मलाभ के साथ मालूम होवे २०-६-३६ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ। संभव है पाटन का पत्र मिले कुछ अरसा हुआ होगा तुमने हमको देरीसे खबर दी है। हमारी समझ में बात पुरानी हो गई है, यदि अभी का ही पत्र होवे तो हमको भेज देना देखकर वापिस भेज दिया जायगा साथमें सलाह भी दी जायगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"लंडन कोन्फरन्स और महासभा" ट्रैक्ट तैयार होना बहुत ठीक है, परन्तु वहां के समाचार पूरेपूरे आलेवे बादमें और वह ट्रैक्ट वहां ही तैयार कराकर यहां भेज देना देखकर वापिस अपनी राय सहित भेज देवेंगे. अज्ञान तिमिर भास्कर का काम कराना तो जरूरी है एक वर्ष में छपकर तैयार होजावे तब तो ठीक है। खर्च तो दिया जा सकेगा परंतु काम कैसा और कितना करना करनेवाले के अखतियार रहेगा और सारा ही काम अकेले पंडितजीसे होना भी मुश्केल है। भाई हंसराज एम. ए जीरा निवासी को भी साथमें रखना होगा। इस लिए मासिक पचास पंडितजी का और पचास इसका हो जावे दोनों काम पर लग जावे तो ठीक हो जायगा आगे भी तो काम करना होगा। अज्ञान तिमिर भास्कर के लिए तो पंडित हंसराजजी की खास जरूरत हैं इस लिए जिस उत्साहसे काम करे कराना ही होगा। विश्वास किये बिना कोइ भी काम नहीं हो सकता।

इसके साथ एक पत्र है उसका जवाब दे देना जैन तत्त्वादर्शकी पचास नकल बीकानेर (मारवाड) बैदोंका चौक–छोटूलाल बैद के नाम-डाघीबहिन को भेज देनी। रसीद वी. पी. करानी। जहां कहीं किताबे भेजी जावे बी. पी. का ही काम ठीक समझ लेना। सर्व श्री संघको धर्मलाभ।

पर्युषणा के और चतुर्मास के सर्क्यूलर में कुछ गलती हो गई है आगेको ख्याल रखना। १०८ श्री स्वामीजी महाराज का नाम पहेले देना चाहिये था पीछे दिया गया है। मुनि विचार-वि० के साथ पंन्यास नहि लिखना। सर्व श्रीसंघ अंबाला को धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लाला हरिचंद इन्द्रसेन के पत्रसे मालुम हूआ श्री मंदिरजी की साथ श्राविकाओं का उपाश्रय बन रहा है जो पर्युषण तक तैयार हो जाने का संभव है। यह उपाश्रय किसकी तरफसे बना है? श्रीसंघ की तर्फसे या बाईयों की यानि श्राविका संघ की तर्फसे। श्री आत्मानंद जैन हाइस्कुल की बाबत क्या विचार रहा।

जैनधर्म प्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (४१) बडौदा १०-८-३६

वल्लभवि० आदीकी तर्फसे श्री आत्मानंद जैन महासभा पंजाब अंबाला सीटी-जोग धर्मलाभ। २-८-३६ नंबर १६८५ का पत्र मिला हाल मालूम हुआ। पाटन का पत्र वापिस भेजा है, पुराना विन जरूरत का है, तो भी अगर दफतर में रखना हो रहने दीजिये। हमने तो पहेले ही तुमको खुलासा कर दिया है। बाकी हमारा आपसी जो खुलासा चाहिये हो चुका है। हमारा आपसी कोई विरोध न हुआ है और न अभी है। ताजी ही मिसाल लीजिए। परमानन्द कापडिया की बाबत अहमदाबाद में संघ बहार का जो मामला चल रहा था उसमें १०८ प्रवर्तकजी महाराज और हमारे दोनों के हस्ताक्षरोंसे एकठा ही विरोध बताया गया है कि, आज के जमाने में किसी को संघ बहार करने की प्रवृत्ति उचित नहीं समझी जाती इत्यादि।

पंडित हंसराज शास्त्री को अज्ञानतिमिर भास्कर का काम दिया गया है वही उनको करने दीजिए। बाकी "लंदन और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महासभा " ट्रेक्ट निकालना चाहते हों सो यह काम तो औरोंसे भी कराया जा सकता है। इसकी इतनी जलदी नहीं है। अभी तक वहां की कोई कारवाई जाहिर में नहीं आई, जब वहां की कोई रीपोर्ट या किताब जाहिर में आजावे बाद में कुछ करना ठीक होगा।

श्री जैन तत्त्वादर्श का खुलासा लाहौरसे आ गया है तुमारे और उन के लिखने में सिर्फ दश ग्यारह का ही फर्क है। तुमने ४२००) लिखे हैं। उन्होंने वेरवा सहित ४१८८।)॥ कुल जोड लिखा है। यह तो हिसाबी-काम तुमारे श्रावकों का है। इसमें हमारा दखल नहीं हो सकता। परंतु जिन भाग्यवानोंने मदद दी होवे उनकी तसल्ली के लिए हिसाव साफ साफ होना चाहिये ! सो तुमारे और लाला सुंदरलाल के लिखे मुजिब ठीक मालुम देता है।

हमारा मतलब तो सिर्फ इतना ही है कि, तुमने बम्बई-वालों को नाम और रकम का वेरवा बतौर मेम्बरों की हैसियतसे दिया है, इस लिए फंड के लिहाजसे उनके मांगने पर हिसाब देना होगा। इस लिए मदद के अलावा जितनी रकम फंडमेंसे लगाई गई होवे वह जुदा निकाल रखनी।

नुकसान तो जरूर रहना ही है। यह काम कोई पैदाश के लिए व्यापार के लिहाजसे तो किया ही नही जाता। यह तो गुरुदेव के शुभ नाम के साथ जैनधर्म के प्रचार के लिए किया जाता हैं। परंतु वह भी मर्यादित होना चाहिये। इस लिए लाला सुंदरलाल को लिखा है कि " अज्ञानतिमिर भास्कर की कीमत एससे कमती नहीं रखनी। प्रथमसे ग्राहक होने वालोंसे बारह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आना लिया जाय और हेंडबिल निकाले जाय। श्री गुरुदेव की जन्म-शताब्दि का मौक्या समझकर ही श्री जैन तत्त्वादर्श की बराय नाम की कीमत रखी गई है इस बात का पूरा ख्याल रखना।

एक ही सी बात है फंडसे ही काम लेने का है। बम्बई का मामला अभी तक साफ नहीं हुआ। तब तक काम तुम को ही करना होगा। बाकी हमसे बनती कोशस तो हम करतेही रहेगे।

बीकानेर भेज दिये वह तो ठीक परंतु गुडस में भेजनी थी। बिलटी भी उनको देरीसे मिली। इतनी बडी किताबे तो गुडस में ही भेजनी चाहिये दश दिन बाद पहुंचे। नाहक ज्यादा किराया क्यों दिया जावे।

भावनगर कितनी और कब भेजी? न भेजी हो तो दोसौ भेज देनी गुडसमें ही और पांचसौ बम्बई श्री फूलचंद धारीवाल ३७३ शेख मेमन स्ट्रट Bombay 2 यह भी गुडसमें ही भेजनी रसीद वी. पी. नही करानी। दोसौ अहमदाबाद-पांच कुआ, मगनलाल हरजीवनदास यह भी गुडस में रसीद वी. पी. नहीं करनी। तीनों जागा भावनगर और अहमदाबाद दोसौ दोसौ बम्बई पांचसौ गुडस में पहुंचा देनी। रसीद रजिष्ट्री भेज देनी। वी. पी. नहीं करानी। पेकींग खर्च सहित कीमत का आंकडा लिख देना ताकि रेलवे खर्च और पेकींग खर्च मिलाकर ग्राहकसे लिया जावे। यहां दोसौ किताबे लाहौरसे आई ३७ या ३८ कुल खर्चा आया सुना है सो मयखर्चेके ग्यारह सवाग्यारह आना एक किताब पर लगाया जायगा।

रंगुन जाते हुए कलकत्ता तो आयगा ही। सुराणाजी कल-कत्ता में नहीं है दील्हीसे लाला हजारीमल्लजी ज्हौरी आदि कीसी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का पत्र मिल जावे तो तजवीज कर लेनी अपनी तरफसे उद्यम होवे उतना करना। रंगुन के लिए बम्बई थे तब पत्र वगैरह मिलने की आशा थी अब वह आशा है नहीं। सबको धर्मलाभ। १०-८-३६ को शुरू किया हूआ आज १२-८-३६ को पत्र समाप्त हुआ है।

सूचना

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

बडौदा घडियाली पोल, जानी शेरी

२४६२-४१ (४२) १५-१०-३६

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री अंबाला शहर सुश्रावक लालाजी सुखराय कुंदनलाल योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहने इसमें तो शक नहीं तुमे हमको जानते हैं और तुमको हम जानते है। तुमारे बडों को हमारे बडोंने सच्चे धर्म में लगाया इस लिए तुमारे बडोंने हमारे बडे स्वर्गवासी जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानंदसूरि श्री आत्मारामजी महाराजजी को सच्चे गुरु मान लिए इस बात को तुम भी जानते हो और हम भी जामते हैं। और इसी लिए हमारा तुमारा परिचय भी बहुत अरसे का है परंतु पत्रद्वारा यह परिचय तो पहला ही है। जो सकारण और तुमारे लाभ का ही है। हमने सुना है तुमने कोई बडी रकम खरचने का इरादा किया है। यदि यह बात सत्य है तो बडी खुशी की बात है परंतु हम चाहते है कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सलाह लिए बिना कोई बात कायम न करली जाय। जहां हजारों खरचने की हिम्मत है वहां सौ दौ सौ कोई चीज नहीं हैं यहां आ सकते हों साथ में श्री सिद्धाचलजी की यात्रा भी हो जायगी। हमारा भी इरादा अब चौमासा बाद सीधा पंजाब के विहार का है क्या ही अच्छा होवे हमारे अंबाला पहुंचते ही तुमारे कामसे श्री गुरुदेव के नाम का जयजयकार के साथ तुमारा और तुमारे बडों का शुभ नाम कायम हो जावे। पत्र का जवाब जरूर देना।

द. वल्लभवि०

धन्यवाद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (४३) बडौदा ५-११-३६

विजयवल्लभसूरि आदी की तरफसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुंदरलाल योग्य धर्मलाभ. तुमारा २-११-३६ का पत्र आज ५-११-३६ को मिला पढकर अतीव आनंद आया स्वर्गवास गुरुदेव तुमारी भावना जलदीसे जलदी पूर्ण करे।

जैन श्रीसंघ अंवाला का और सब कमिटि का उत्साह है यदि वैसा ही श्रीसंघ पंजाब का उत्साह हो जायगा जरूर काम हो जायगा।

यदि ऐसा होता नजर आयगा और तुमारे भाईयों का अत्याग्रह होगा तो हम को भी पहुंचने में देरी नहीं समजनी।

यद्यपि हमने तो अपना यह निश्चय कर लिया है कि जहां तक हो सके चैत्र वैशाख तक मे दील्ही पहुंच जाना। फिर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तुमारा आग्रह और उत्साह होगा तो रास्ते में रुकावट न होगी हमको कहने का अवकाश मिल जायगा कि पंजाब श्रीसंघ का अमुक कार्य के लिए अत्याग्रह है इस लिए हमको जलदी पहुंचना ही चाहिये। सबको धर्मलाभ।

साहित्य प्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (४४) बडौदा १२-११-३६

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री लाहौर सुश्रावक प्रोफेसर लाला बनारसीदास M. A. योग्य धर्मलाभ। पत्र आपका मिला हाल मालुम हुआ। भाद्रपद मासमें आपका पत्र मिला था जिसका जवाब भी आपके लिखे मुजिब लुधीआना भेजा था परंतु जवाब न मिलनेसे समझा गया था कि आप यात्रामें होंगे यह खबर न थी कि आप रुग्न हो जानेसे रुक गये थे। अस्तु अब आप के पत्रसे पता लगा कि आप स्वस्थ होकर फिर लाहोर जाकर अपने स्थान पर आरूढ हो गये हैं।

आपने हमारे पंजाब के विहार के विचारको अपनाया और हर्ष प्रकट किया सो श्री स्वर्गबासी गुरुदेव के अनन्य भक्त श्रावक मात्र का कर्त्तव्य है। आपने श्रीयुत पंडित जगदीशलाल शास्त्री एम. ए. एम. ओ. एल. का परिचय कराया बडी खुशी की बात है, जब आप नीकोदर के भंडार की सूची बना रहे थे उस वक्त साध्वीजी श्रीमति देवश्रीजीने लिखा था. मतलब आप के शुभ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नामका परिचय प्रथम हो चुका था अब विशेष परिचय आपने दिया। आप की कृति के लिये आप की इच्छानुसार अवश्य प्रबंध हो जायगा। नल विलास का भेजा हुआ विभाग दो चार रोज में लौटा दिया जायगा। सब के साथ श्रीयुत पंडीतजी को भी धर्मलाभ।

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२-४१ (४५) बडौदा १९-११-३६

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री सकलसंघ अंबाला सीटी योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुखसाता है धर्मध्यानमें उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना।

आज ज्ञानपंचमी को यह संदेश भेजा गया है आशा है श्रीसंघ इस पर जरूर गौर फरमायगा। लाहौरसे हमको पता मिला है कि अंबाला श्रीसंघ कालेजके लिए अर्जी कर देवें तो चान्स मिलने की आशा है। अगर इस वक्त यह चान्स न लिया गया तो फिर आगे के लिए आशा नहीं। इस लिए श्रीसंघ को हम सादर सूचना करते है कि आप श्रीसंघ अर्जी जरूर भेज देवें।

स्वर्गवासी गुरुदेव के प्रतापसे श्रीसंघ अंबालाने आज तकमें जितने कार्य श्री गुरुदेव के नाम के किये सबमें सफलता प्राप्त की है इसी तरह इसमें भी श्रीसंघ को जरूर सफलता प्राप्त होगी। रहा सवाल पैसे का सो आज तक श्रीसंघ अंबालाका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोई काम रुका नहीं है और अब यह भी न रुकेगा। स्वर्गवासी गुरुदेव के नाम जिस तरह सकल श्रीसंघने शिक्षण संस्थायें आदि खडी कर दी इसी तरह यह भी काम कर लिया जाय, धीरे धीरे फिर प्रबंध हो जायगा। अगर इस वक्त हम पंजाब में होते तो जरूर चार शहरोंवालों को एकठा करके विचार कर लेते। मौक्या अनकरीब आ चुका है जो रकम बनाम कालेज के जमा होगी उसका व्याज तो मिलता ही रहेगा। इसी तरह श्रीसंघ भी बतौर उधार के थोडी थोडी रकम इस काममें मदद तरीके देवें और सब भाई और बाई हिम्मत करें तो सब कुछ हो सकता है।

ध्यान रखना यह काम शिखर पर कलश चढाने जैसा है। सारी हिंदुस्तान में जैन धर्म का और गुरुमहाराजका डंका बजाना है।

विशेष में हमने सुना है बलकि उनका पत्र भी हमारे पास आया है। लाला भानामल्लजी के सुपुत्र लाला जैसुखराय और कुंदनलाल की इच्छा किसी अच्छे परोपकार के काम में एक बडी रकम देने की है तो इससे बढकर और कौनसा काम हैं हमारी तर्फसे धर्मलाभ के साथ श्रीसंघ उनसे मांगणी करें कि श्री गुरुदेव के नामसे इस काममें जरूर पूरी पूरी मदद देना तुमारा कर्त्तव्य है यदि श्रीसंघ की और हमारी इच्छा पूर्ण करें और उनकी मनशा होवे तो बडी खुशीसे श्री गुरुदेव के नामके साथ उनका नाम भी जोड दिया जाय इति शुभम्।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२–४१ (४६) बडौदा २०–११–३६

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुंदरलाल सपरिवार योग्य धर्मलाभ।

१५–११–३६ का लिखा पत्र पेज ४ का मिला हाल मालुम हुआ।

हमने कल रोज १९–११–३६ को श्रीसंघ अंबाला को खूब उत्साहीत होनेवाला पत्र लिख दिया है और अर्जी भेज देने के लिए भी खूब ताकीद कर दी है फिर भी आज तार दीलाने का विचार है। अर्जी देने में जोर नहीं लगता परंतु बादमें संभालने के लिए जैसा उत्साह तुमारा पत्रसे मालुम देता है ऐसा ही तुमारे साथियों का भी हो जावे तो सब कुछ हो सकता है गुरुकुल की मददसे काम जरूर हो सकता है परंतु यह होवे कैसे? अस्तु। अपने तो अपना कार्य कैसे सिद्ध होवे और गुरुकुलको एक पाइ का भी नुकसान न होवे इस विचार पर आना जरूरी है। हमारी समझ मूझिब अंबाला का श्रीसंघ गुरुकुलसे उधार लेवे जो जो शर्त्ते मुनायिब होवे स्वीकार की जावे और तुमारे सरीखे दश वीस नवजवान अपनी जिमेवारी उठा लेवे कि इस रकमके लिए जैसी श्रीसंघ अंबाला की जिमेवारी हैं ऐसी ही हमारी भी है श्रीसंघ अंबाला और हम सब मीलकर पांच साल तकमें यह रकम भरपाई कर देवेंगे इत्यादि बाकी काम किया जावे तो आशा है गुरुकुल कमीटी जरूर साथ देवेगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीसंघ अंबालाको इस कार्य में साथ देनेवाले नवयुवकों के लीष्टमें यदि योग्य समझा जावे तो हमारा भी नाम समझ लेना। हमारे योग्य बनती कोशस करने में भरसक प्रयत्न करना हम अपना फरज समझते हैं।

अब तुम इस कार्य के लिए कमर बस्ता होकर तुमारे जैसी लागनीवाले हरएक शहर के एक एक दो दो बराबर साथ देने वाले खडे कर लो। इस कार्य में साथ देने वाले लाहौर में और कौन २ तैयार है। जीरा, अम्रतसर, गुजरांवाला, होशियारपुर, नारोवाल, अंबाला, नकोदर, जालंधर आदि के वकील और दुकानदार भाईयों का साथ मिलने पर जरूर कामयाबी हो सकेगी।

इस कामकी कमिटी में बाबू अनंतराम वकील गुजरांवाला है और वह गुरुकुल के प्रमुख नियत हुए है इस लिए उनसे मिलकर बातचित करनी और हमारा विचार उनको बताना। वह खुद कायदा जानते है, कायदा की रुकावट न होवे तो आगे कदम उठाना उस में बनती कोशस करें। सबको धर्मलाभ।

तुमारे अगले विचारों का जवाब इस वक्त नहीं हो सकता अभी इतना काम बन जावे बाद में सब के संगठन का विचार किया जा सकता हैं। इस में तो शक नहीं बाबू अनंतराम वकील श्री गुरुदेव के नाम की खातर हमारी इच्छानुसार अपने भाईयों को समझानेकी भी कोसस करेंगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६१-४१ (४७) बडौदा २२-११-३६

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री गुजरांवाला। श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब के प्रमुख श्रीयुत बाबू अनंतराम वकील बी. ए. एल. एल. बी. योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सब को धर्मलाभ कहना। शहर अंबाला में कालेजका जिकर चल रहा है इससे तो आप बखूबी वाकिफ ही है। क्यों कि आप उसकी कमिटि के खास चुनंदा मेम्बर है।

इस में तो शक नहीं जैन समाज को अपने परमोपकारी स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी महाराज की अंतिम इच्छानुसार कालेज की निहायत जरूरत है।

लाहौरसे लाला सुन्दरलाल के पत्रसे मालुम हुआ कि वह समय आ चुका है। हमने जावाब में अपना विचार प्रकट कर दिया है उमीद है वह पत्र आपको दिखावे। मतलब जो रकम जमा करानी होगी एकदम इतनी रकम इकट्ठी होनी मुशकल है और फिर यह चान्स मिलना भी मुश्कल है कभी मिल भी गया तो किसी काम का नहीं इस लिए इस वक्त जैसे भी होवे गुरुकुलसे मदद ली जावे जिस में गुरुकुल को नुकसान होवे नहीं कालेज की शर्त्तें पूरी कर दी जावे और रकम संभाली जावे खुलासा उस पत्रसे सारा ही हो जायगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अहिंसा का संदेश

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६२–४१ (४८) बडौदा ४–१–३७

जैनाचार्य विजयवल्लभसूरि की तर्फसे । श्री काशी । महामना श्री पण्डित मदनमोहन मालवीयजी योग्य धर्मलाभ । आपका शुभ समागम होशियारपुर (पंजाब) जैन मन्दिर में हुआ था आशा है आप को याद होगा ।

समाचार पत्रोंद्वारा तथा हिन्दु विश्वविद्यालय बनारस के प्रधानाध्यापक व्याकरण साहित्याचार्य श्री निरीक्षणपतिमिश्रजी के पत्रद्वारा आपकी ७६ वी वर्षगांठ के उपलक्ष में हीरक जयंती मनाने का समाचार विदित हुआ आपके कतिपय सुचारु विचारोंसे खास करके अहिंसा परमो धर्मः के प्रगतिमय विचार और आचारसे सन्तुष्ट होकर मेरा आत्मा आपको धन्यवाद–अभिनन्दन देनेको उद्यत हुआ और वह तारयंत्रद्वारा सफल हो गया ।

आशा है वह तार आपको मिल गया होगा । तार दिलाया गया बादमें ही यह सन्देशरूप पत्र लिखा है । मेरे दिलमें चिरकालसे एक बातका आन्दोलन हो रहा है जो आज इस पत्रद्वारा आपके समक्ष प्रकट करना चाहता हुं । और यह आशा रखता हूं कि यदि इसमें सफलता मिलेगी तो आपको ही मिलेगी । क्यों कि आप राजा–महाराजों के और सामान्य जनता के भी प्रायः माननीय है ।

कतिपय मुसलमान सज्जनों का भी आप के साथ परिचय है, यदि आप मेरी बात पर पूरा पूरा ध्यान देकर अपने प्रेमी दोस्त

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मित्र, सज्जन, सद्गृहस्थ हिन्दु और मुसलमानों का सहकार प्राप्त कर लेवेंगे अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

में समझता हुं आज तक कितने ही प्रयत्न कितने ही महाशयोंने भिन्न भिन्न व्यक्ति या समष्टिद्वारा किये होंगे परन्तु मै जिस रूप में आपके आगे व्यक्त करना चाहता हुं इस रूप में किसीने भी किया न होगा ऐसा मेरा मानना है महाराणी विकटोरिया का ढंढेरा है कि किसी के धर्म विरुद्ध आचरणद्वारा किसी का भी दिल नहीं दुःखाना। इस बातको तो आप अच्छी तरह जानते है।

यदि न्यायदृष्टिसे सत्य देखा जाय तो हिन्दु मुसलमान दोनों के साथ अन्याय हो रहा है। परन्तु खेद की बात है कि हिन्दु अपना गाना गाये जाते है इनको मुसलमान की कोई परवाह नहीं। और एसे ही मुसलमान अपना गाये जाते है इनको हिन्दु की कोई परवा नहीं। फलस्वरूप दोनों ही तिरस्कार के पात्र बन रहे है। बात यह है कि हिन्दुओं में गौ की कसम प्रसिद्ध है। मुसलमानों में सुअर की।

यदि मुसलमान गौ का बुरा करे तो हिन्दु उछल पडते है और कहीं कोई सुअर का बुरा करता है तो वहां मुसलमान अली अली करके कूद पडते है। कभी कभी दंगा फिसाद भी हो जाता है केस भी किये जाते है। न्याय में जहां हिन्दुओं का जोर देखा मुसलमानों को कुछ सजा कर दी। जहां मुसलमानों का जोर देखा हिन्दुओं को सजा कर दी। टंटा झगडा तो फिर भी कायमका कायम ही बना रहता है। इसका मुख्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कारण तो मेरी समझ मुजिब न हिन्दु ही शोचते होंगे न मुसलमान भी शोचते होंगे।

मेरी समझ में तो एक यही कारण मालूम देता है कि, जिनके पास हिन्दु मुसलमान न्याय की आशासे दौडे चले जाते है वहां तो दोनों की परवाह नहीं है। क्यों कि वहां तो दोनों ही हजम है।

इस लिए हिन्दु मुसलमान दोनों कों यदि अपने अपने धर्म का सच्चा ख्याल होवे तो दोनों का फरज है आपस से मिलकर ऐसा प्रबंध करे कि दोनों का मान बना रहे और हिन्दु मुसलमान दोनों के धर्म की प्रतिष्ठा बढे !

मैं आपको याद दिलाउं यह शुभ प्रसंग निकटमें ही आ रहा है हिदूस्तान के शैनशाह का अभिषेक अमूक समय में होने वाला है इसके पहले पहले हिन्दू मूसलमान दोनों का एक मेमोरियल तैयार किया जावे और वह राज्याभिषेक की खुशाली में शैनशाह को भैट किया जावे तो आशा की जाती है इसका जरूर कुछ न कुछ अच्छा ही फल मिलेगा। मेमोरियल का बनाना यह तो आपका कार्य ही है। खास करके मेमोरियल में इस प्रकार की प्रार्थना की जानी योग्य समझी जाती हें। हिन्दु मूसलमान दोनों ही आपकी प्रजा हैं हम दोनों ही आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे दोनों के धर्मोंको मान देकर आप हिन्दुस्तान भरमें ऐसा हुकम जारी कर देवें कि हिन्दु-मुसलमान दोनों हमारी प्रजा है दोनों प्रजाको एक समान समझर दोनों की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रार्थनासे हुकम फरमाया जाता है कि " आजसे लेकर कोई भी गौ या सुअर का वध न करे " ईत्यादि—

यदि आप इस बात पर ध्यान देकर दो—चार अच्छे प्रतिष्ठित औलमाओं के साथ सलाह करके काम हाथ में लेवेंगे आपको बडा भारी पुण्य और यश प्राप्त होगा।

आप और मुसलमान औलामाओंसे बना हुआ हिन्दु मुसलमान दोनों का एक डेप्यूटेशन क्या हिन्दु रजवाडों में क्या नवाबी राज्य में और क्या गवर्नमेंट के राज्य में जहां भी जायगा जरूर कामयाब होगा।

यदि इस पुण्य कार्य में आप मुझे याद करेंगे तो यथाशक्य साथ देनेको मैं हरवक्त तैयार रहुंगा। इत्यलम्।

शिवमस्तु सर्वजगतः परहित निरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रायन्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः॥

पुनः धर्मलाभ। यदि योग्य समझें तो प्रत्युत्तर की उदारता बतावें।

सुयोग्य पण्डितवर्य निरीक्षणपति मिश्रको धर्मलाभ प्रदान करें।

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४१ (४९) १९–१–३७

वासद–बडौदासे १३ माईल

विजयवल्लभसूरि आदी की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल कमिटि योग्य धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बहुत ही आनंद का समय है बहुत वर्षों की अभिलाषा स्वर्गवासी गुरुदेव की कृपासे पूरी होने लगी है जिसमें हम तुम सबको भरसक प्रयत्न करना चाहिये—

यद्यपि यह काम श्रीसंघ अंबालाने अपने माथे लिया है जो उनके पत्रसे आपको बखूबी पता लग सकता है. वह पत्र इस पत्र के साथ भेजा जाता है फिलहाल जिस बात की जरूरत है उसके लिए आपको आज तार दिया गया है। उमीद है आपने उसका अमल कर दीया होगा वरना फोरन कर दीजिए। गुरु-कुल की रकम को इस में कोई जातका नुकसान नहीं है यह बात आप सब सरदार अच्छी तरह समझते है इस लिए खूब उत्साह के साथ स्वर्गवासी गुरुदेव के नाम का यह दूसरा झंडा कायम करना कराना हमारा तुमारा खरा फरज है।

यदि समय अधिक होता तो हम धीरे धीरे सब प्रबंध करा देते परंतु समय बहुत ही थोडा हैं २५ जनवरी को तहकीकात के लिए डेप्युटेशन अंबाला लाहौरसे आने वाला है उस वक्त अपनी तैयारी दिखाने की जरूरत है। यह मौक्या चला गया तो फिर जिंदगी भरमें ऐसा चान्स मिलने की आशा नहीं हैं। श्री गुरुदेव के नामको रोशन करने के लिए ही गुरुभक्तोंने रकम दी है अगर एक चिरागसे दूसरा चिराग हो जावे तो पहले चिराग का कुछ बिगडता नहीं है इसी तरह इस कामको भी समझ लेना योग्य है इस लिए श्री गुरुदेव के नाम की खातर हमारी इस आज्ञा का बराबर जलदीसे जलदी अमल कर लेवे। हमारा आपको विश्वास है और हमको आपका विश्वास हैं इस लिए ऐसे स्पष्ट लिखा गया है। इसके लिए जो जो शर्तें आप

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करानी चाहेंगे बराबर हो जायगी इसमें जरासा भी फरक न आयगा। बडौदासे विहार हो चुका हे इस पत्रका जवाब—

C/o. Dipchand Panachand Master.

Cambay (खंभात)

इस पते पर भेजना हम २४ तारीख को Cambay पहुंचेगे। सबको धर्मलाभ।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६३-४१ (५०) Cambay ३०-१-३७

विजय वल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री अंबाला मंत्री श्री आत्मानन्द जैन हाईस्कूल अंबाला सीटी धर्मलाभ।

पत्र २६-१-३७ का लिखा २९-१-३७ की शामको मिला हाल माल्रुम हुआ। तुमारा लिखना सही है गुरुकुल के पत्रसे भी यही मालुम देता हैं। सब खुलासा लाला रतनचंद और सदासुखराय के रूबरू ही हुआ मालुम देता है। अब तो भावि के उपर ही छोड देना ठीक है. हमको यह भी बिचार होता है कि लोगोंको समझा समझा के पैसा दिलाया जाता है जव कभी किसी जरूरी काम के लिए कहा जाता हैं सूखा जवाब सफाई दार मिल जाता है जिस किसी के पास रकम जमा होती है वही अपनी इच्छानुसार काम करना चाहते हैं ऐसी हालत में आयंदा को कोई काम हाथ में लेनेको दिल नहीं चाहता।

आज काल इधर भी ऐसे दिलावर कोई नजर नहीं आते। अब तो एक ही रस्ता है श्रीसंघ अंबालाका इक एक भाई और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक एक बाई होसला करके गुरुमहाराज के नाम पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार हो जावे तो दुनिया में एक बडा भारी प्रभाव पड सकता हैं जितनी रकम की जरूरत समझी जावे एकत्र करली जावे उसका व्याज ले लिया जावे और काम कर लिया जावे। यदि जिंदगी रही और गुरुदेव की कृपा बनी रही तो पांच साल में सारी रकम का बदला दिखा देवेंगे। श्री जैन संघ जयवंता है।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४१ (५१) ८–२–३७

खंभात Cambay

विजयवल्लभसूरि आदी की तर्फसे श्री अंबाला शहर। सुश्रावक लाला संतराम मंगतराम योग्य धर्मलाभ। तारीख मिति वार विनाका ५–२–३७ की छापका पत्र आज रोज मिला हाल मालुम हुआ उसी वक्त तार Recd do as you wish see Letters इस मजमून की दी है।

तुमारे पत्रसे कुछ थोडासा हौंसला हमे भी हो गया कि तुम अपनी तजवीज में लगे हुए हों। अगर फिलहाल इससे काम बन आता हो तो बडी खुशी की बात है। सेक्रेटरीको धर्मलाभ के साथ कह देवें तवदील करा लेवें और बम्बईसे पत्र आवे तो उनको लिख देवें कि श्री गुरुमहाराज के यहां पधारने पर आपको खुलासा दिया जायगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यद्यपि गुजरांवाला के पत्रसे हम निराश हो गये है तो भी एक पत्र ४-२-३७ को दिया है जिसका मतलब अगर सारी नहीं तो आधी भी फिलहाल दी जावे और यह आपने यकीन रखना श्री स्वर्गवासी गुरुदेव की कृपासे पांच साल तकमें तुमारी चीज वापस लौटा दी जायगी। देखते है इसका क्या जवाब आता है।

मंत्री श्री आत्मानन्द जैन हाईस्कूल के पत्रका जवाब लिखा हुआ दिल उदास होनेसे भेजा नहीं था जो आज इस पत्र के साथ भेजा है जैसे प्रोनोट लिखकर बतौर सिक्युरीटी औरसे काम हो सकता है तो इसी तरह लाला जगतुराम की चीज क्यों न काम में ली जावे लाला सदासुखराय को धर्मलाभ के साथ पूछना तो सही सबको धर्मलाभ। पत्र यहां ही देना।

सांत्वना

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४१ (५२) खंभात २५-२-३७

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री आहोर। श्रीसंघ योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना।

श्री भूपेन्द्रसूरिजी के स्वर्गवास की आप की भेजी तार मिली थी परंतु उस वक्त यहां मुनि चरणवि० की तबीयत बहुत ही नरम होने के कारण बदले का जवाब तुरत नहीं दिया जा सका अब कुछ आगेसे शांति है परंतु अभी तक संथारावश ही है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यद्यपि सूरिजी के वियोग का आपश्री संघको दुःख जरूर होगा परंतु इस का कोई उपाय नहीं यह भी तो आप अच्छी तरह समझते है इस लिए संतोष मना कर उनके उपकार को याद रखते हुए धर्मध्यान में यथाशक्ति उद्यम रखना ही योग्य है।

आपका अहमदाबाद में मुनि संमेलन के समय हमारा खुब प्रेमपूर्वक परिचय होता रहा बाद में चातुर्मास में प्रसंगोपात कितनी ही दफा मिलना होता रहा जिससे परस्पर आनन्द प्राप्त होता था इस बातका पूरा अनुभव जो साधु उस समय आपके साथमें थे उनको बराबर हुआ है। संभव है वह साधु आपके अंतसमय में आप के पास ही होवेंगे और उन्होंने यथाशक्ति भक्ति करके अंतिम लाभ उठाया होगा। यदि इस वक्त वह आपके नगर में होवे उन सबको हमारी तरफसे सुखसाता पूछनी। क्या आपने अपने स्थान पर अपने हाथसे ही किसीको नियत किया है? यदि ऐसा हुआ तो उनके शुभ नामका परिचय देना इति।

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४१ (५३) २२-३-३६७

cambay खंभात

C/o. Seth Ambalal Panachand Jain Dharmshala

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री अंबाला सीटी सुश्रावक लाला मंगतराम योग्य धर्मलाभ। बिला तारीख मिति का १९ मार्च ३७ कि डाकखाने की छापका तुमारा पत्र २१-३-३७ को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिला हाल मालुम हूआ। क्यों कि यह काम सकल श्रीसंघ का है किसी एक व्यक्ति का नहीं है। इस लिए जुदा २ हम किस किसको जवाब देवें और इस बातका जिमेवार भी कौन होसके, इस लिए श्रीसंघ की कमिटि बनाई जावे उसकी मारफत सब लिखा पढी होवे तो जरूरत के वक्त कमीटी को पता दिया जावे हम अपनी तरफसे बनती कोशस में है परन्तु अंबाला के श्रीसंघका एक ही विचार एक ही वचन और एक ही आचरण होना चाहिये ताकि सबको विश्वास होवे और श्री गुरुदेव के प्रतापसे काम हो जावे सबको धर्मलाभ।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४१ (५४) खंभात ३१-३-३७

विजयवल्लभसूरि आदि की सर्फसे सकल श्रीसंघ अंबाला शहर योग्य धर्मलाभ के साथ मालूम होवे यहां सुखसाता है धर्मध्यानमें उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना। चरणवि० को आगेसे साता है परंतु कल बडोदासे बडे डाक्टर श्रीयुत प्राणलालभाई जो कि श्रावक है और उन्ही की दवाई चलती है यहां बुलाने पर आये थे देखकर खूब ही तसल्ली दे गये है जो खतरा था मिट गया है किन्तु ताकात के लिए और फिर कभी इस दर्द का दौरा न हो जावे इस लिए दो तीन महिना लगातार दवाई तो करनी ही होगी। शरीर इतना अशक्त हो गया है जो कि देढ महिना में कहीं मकान के नीचे उतरने लायक होगा इस परसे आप अंदाजा लगा सकते है कि यहांसे चौमासा पहिले विहार होगा या कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नहीं। बस इसी वजहसे हमं लाचार है वरना इस वक्त कहीं जयपुर की आसपास में होते। फरसना की बात है।

२९-३-३७ का श्री आत्मानन्द जैन हाईस्कूल के मंत्री नेमदास जैन बी. ए. का लिखा पत्र मिला। श्री आत्मानन्द जैन कोलेज के लिए श्रीसंघ मिला जो विचार हुआ सब मालुम हुआ। इस में तो शक नहीं। कोलेज के बनने की खुशी आपश्री संघको सारे शहर अंबाला को, कुल पंजाब के स्वर्गवासी गुरुदेवके भक्त श्रीसंघ पंजाब को, हमको और सारे ही जैन समाज को है और होगी परंतु उसके चलाने का सवाल सबसे पहेले हल हो जाना चाहिये। एक वक्त शुरु शुरू में तो श्रीसंघ अंबाला को कुछ कदर खर्च करना ही होगा। और यह तो यकीन है स्वर्गवासी श्री गुरुदेव के प्रतापसे इतना भार तो श्रीसंघ अंबाला बडे आनंदसे बडी ही आसानीसे उठा सकता है एसा हमारा मानना है और श्रीसंघ अंबाला तैयार भी होगा। बाकी आगे के लिए श्री जैन संघ पंजाब, मारवाड, बंगाल, गुजरात आदि में अनेक भाग्यवान मदद देनेवाले श्री गुरुदेव के प्रतापसे मौजूद है। मिहनत करने वाले चाहिये। सो इस काम के लिए उमीद है कई नवजवान तालीम याफता और कई बुजुर्ग बाबू कीर्तिप्रसाद जैसे तालीम के पक्षदार तथा कई गुरुभक्त गुरुमहाराज के नामको रोशन करने वाले पंजाब में मौजूद है जिनको हरएक तरहका साथ देने को हम और हमारे साथ के साधु बनती कोशस करने को तैयार है। आप इस बातसे तो बिलकुल बेफिकर रहें आपने देख ही लिया है अकेली देवश्री आदि सतियोंने अकेले पंजाब देशसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करीबन चालीस हजार की मदद श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल को दीला दी है तो क्या हम तुम मर्द कहानेवाले सारे देश के जैन समाजसे श्री आत्मानन्द जैन कोलेज के लिए योग्य मदद पैदा नहीं कर सकेंगे ? जरूर कर सकेंगे।

रही बात एक ही जो जरूरी और सबसे पहले करने की है. बाकी तो सब धीरे धीरे समय पर हो सकती है। तत्काल जो पचास हजार बतौर सिक्युरीटि के जरूरत है उसके लिए प्रयत्न और प्रबंध होनेका विचार सबसे प्रथम होना चाहिये जब तक यह न हो लेवे तबतक किसीको भी कुछ कहना हम योग्य नहीं समझते है इस लिए जो इशतहार बतौर नमूने के हमको भेजा गया है जरूर बजरुर भेज दिया जाय और उनके आने पर सब प्रकार शांतिपूर्वक निष्पक्ष विचार हो लेवे बादमें जैसी राय मुनासिब तौर पर होवे किया जाय। हम सबके साथ मुत्फि कराय होंगे। और हर तरह की कोशस करते हैं। आगे को भी करते रहेंगे जिसका नमूना इसी पत्रके साथ मौजूद है। बस एक दफा श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुलसे इतनी मदद, इतना सहारा अपने को मिल जावे फिर तो तुमने यानी श्री गुरुदेवके भक्तोंने मैदान जीत लिया। सबको धर्मलाभ। बाहर के भाईयों को भी यह पत्र सुना देनें की हम आपको सलाह देते है। और फिर भी हम सबको खुलासा कर देते है कि सिक्युरीटिका प्रबंध हो लेवे तब आगेको कदम बढाना मुनासिब है। साध्वियों को सुखसाता। १-४-३७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४१ (५५) खंभात

C/o. अंबालाल पानाचंद जैन धर्मशाला

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि, विजयकस्तुरसूरि, पंन्यास समुद्रवि० आदि साधु १३ की तर्फसे श्री अंबाला शहर। सुश्रावक लाला संतराम, लाला चांदनमल्ल, लाला सदासुखराय, लाला हरिचंद, लाला बनारसीदास आदी सकल श्रीसंघ अंबाला शहर योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुखसाता है. धर्मध्यानमें उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना. १८–४–३७ की गुरुकुल कमिटि की रीपोर्टसे मालुम होता है कि कोलेज की बाबत अभी तक आप श्रीसंघ की गुरुकुल दफतर में कोई दरखास्त नहीं गई इसका क्या मानना ? आप श्रीसंघ अंबाला सच्चे दिलसे खुलासा लिखें कि आप अंबाला में कोलेज होना चाहते हैं ? जो जो महानुभाव चाहते हों अपने २ नामके साथ यथाशक्ति गुरुभक्ति के निमित्त शुरू शुरू में जो मदद देने की इच्छा होवे लिख भेजें ताकि आगे के लिए प्रयत्न भी किया जावे। हम तो लिखा पढी किये जायँ और तुम चुपचाप बैठें रहें यह तो ऐसा होता नजर आता है मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त।

सबसे पहले तुमारा स्थानिक श्रीसंघ तैयार होवे तब तो औरों को प्रेरणा करनी भी ठीक होती है इस लिए अंबाला श्रीसंघ के जो जो भाई बाई इस काम को चाहते है उनकी फेहरीस्त तैयार करके हमको भेज देवें बाद में हम हमारा प्रयत्न जारी रखें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अगर कोई भाई इस वक्त साथ देनेको तैयार न होवे तो उसका फिकर नहीं परंतु हमको यह तो पता लगना चाहिये कि इतने तो इस वक्त तैयार है। फिर अपना आगे के लिए प्रयत्न जारी रहेगा और स्वर्गवासी गुरुदेव के प्रतापसे हम (तुम हम) कामयाब हो जावेंगे तब बाकी रहे हुए भाई बाई को भी हम तुम समझाकर साथ में मिला लेवेंगे। साध्वीजी देवश्रीजी आदि को सुखसाता के साथ यह पत्र सुना देना। सर्व श्रावक श्राविका को धर्मलाभ। इतिशुभम्।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४१ (५६) Cambay २८-४-३७

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे सकल श्रीसंघ अंबाला शहर योग्य धर्मलाभ। २६-४-४७ का हमारा पत्र मिला होगा मतलब समझ लिया होगा। २६-४-३७ को बाबूराम वकील जीरा के पत्रसे पता चला कि २-४-३७ को अंबाला कोलेज के लिए मिटिंग होनेवाली है। बडी खुशी की बात है परंतु हमारे सब पत्र और विचारों का सार इस पत्रद्वारा धर्मलाभ के साथ मिटिंगमें जाहिर कर देना। जरूर वर जरूर।

इस में शक नहीं स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानंदसूरि आत्मारामजी महाराज का सच्चा भक्त साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका किसी देशका भी क्यों न होवे जैन कोलेज की जरूरत समझता है। खास करके पंजाबके भक्तों का तो कहना हि क्या? जिन्होंने अपने परमोपकारी गुरुदेव की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भक्ति का परिचय बडौदा में जन्म–शताब्दि के समय खूब दीखा दिया है।

इसी तरह यदि पंजाबी गुरुभक्त सब के सब क्या श्रावक क्या श्राविका धार लेवेंग तो कोलेज कोई बडी बात नहीं है। तो भी हम अपनी सम्मति के साथ सूचना करनी योग्य समझते हैं।

मीटिंग में अपने अपने विचार जाहिर करने में किसीको भी रोक नहीं होती। परंतु उसमें शांति सभ्यता दीर्घदर्शिता सहिष्णुता कार्य परायणता आदिकी भी आवश्यकता होती हैं।

यदि श्रीसंघ अंबाला संभालने को तैयार होवें और सब भाई बाई यथाशक्ति भक्ति का परिचय देनेको तैयार होवे तभी काम हाथ में लेना ठीक होगा। जिसके लिए एक फंड कमिटि कायम करने की जरूरत है जिसमें वह मेंबर अकसर होवे जो अपने नाम की परवाह न करते हूए काम करने में तत्पर हो। पंजाबियों को यह विद्या सीखाने की जरूरत नहीं है। क्यों कि रात दिन काम करने वाले अपने पडौसी आर्यसमाजी भाईयों को देखते हैं।

फंड का तरीका

१ एक हजार या इससे अधिक उदारता दिखलानेवाले सद्गृहस्थ (भाई या बाई) पेट्रन समझे जावे।
२ पांचसो की उदारतावाले नंबर, अव्वल, लाईफ मेंबर।
३ अढाईसो की उदारतावाले नंबर दो ,,
४ एकसो एक की उदारतावाले नं. ३ ,,
५ इससे कमती की उदारतावाले सब भाई बाइ सहायक मददगार समझे जावे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमती देवश्रीजी आदि साध्वियों को सुखसाता के साथ यह सारी बात समझा देनी. क्यों कि श्राविका संघको इनका ही उपदेश काम आयगा।

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६३-४१ (५७) Cambay १५-५-३७

विजयवल्लभ, ललित कस्तुरसूरि आदि १३ साधु की तरफसे श्री लाहोर सुश्रावक लाला सुंदरलाल योग्य धर्मलाभ ! ८-४-३७ का पत्र मिला। इसके पहले का भी पत्र मिला था दोनों का संक्षिप्त जवाब।

१ अंबाला की मिटिंग का नतीजा आ जावे तब एकठा ही जवाब दिया जावे इस इरादासे उसी वक्त जवाब नहीं दिया।

२ अंबाला की मिटिंग का खुलासा तुमारे पत्रसे मालूम हुआ। अंबालासे कोई पता नहीं मिला। हां कूछ सुनी सुनाई बातें साध्वीजी के पत्रसे मालुम हुई परंतु वह कुछ ठीक नहीं। तुमने लिखी सो ठीक प्रतीत होती हैं।

३ कोलेज की मंजूरी होनेसे पहले ही लिखा पढी होनी चाहिये ताकि तसल्ली रहे और फंड के लिए भी पहले ही योजना हो जानी चाहिये। धीरे धीरे फंडका काम लिया जावे हां यदि किसी के मनमें शक होवे तो फंड की योजना में यह लिखा जावे कि यदि कालेज की रजा मिल जावे और कालेज बनाया जावे तो रकम लैनी और दैनी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

४ मंजूरी होने पर इतना वक्त नहीं मिलेगा जिसमें कामयाबी हासिल होवे। इस लिए सबसे पहले फंड की योजना होनी चाहिये। जबतक अंबालावाले अपना नाम लिखेंगे नहीं और की आशा करनी नकामी है। अगर अंबालावालासे तुम दो चार आदमी बहारले कोशस करके जोर देकर समयानुसार लिखालोंगे तो उमीद हैं बम्बई जैसे शहरमेंसे भी कुछनकुछ मदद मिल जायगी क्यों कि अभी हम इधर नजदीक में है हमारे पंजाब पहुंचे बाद इतनी आशा पूरी न होगी।

५ जैसी उदारता लाला गंगाराम बनारसीदास की जाहिर हुई इसी तरह यथाशक्ति अंबाला श्रीसंघ अपनी उदारता दिखावें तो आशा है कमसे कम चौथा हिस्सा तो जरूर हो जावे परंतु वहारले चार भाइयों की प्रेरणा की खास जरूर है।

६ अनंतरामजीसे तुमारी जो बातचित हुई ठीक है। "अगर आप ठीक तरीकेसे प्रयत्न करें तो" इसका मतलब तरीका वह उनको पसंद होवे सो यदि उनसे काम लेना हो तो उनसे तरीका समझ लिया जाय और उसी तरह किया जाय।

७ स्मारक अंकके लिए तुमको पहले कितनेक स्थान लिखे हैं बाकी तुमने लिखे सो योग्य स्थान में देना तुमको अखतियार है। जो कीमतसे लेना चाहें खुशीसे ले सकता है कीमत जिल्दके उपर २॥ लिखी है अंग्रेजीमें। तुमारे पास ७५ नकलें आई है उसकी नोंध बराबर रखनी। कीमत आवे वह तुमने अपने पास हाल रख लेनी पीछे खुलासा हो जायगा।

८ त्रिषष्टि विना मूल्य तो कैसे भेजी जावें हां यदि दश वीस तो भेजी जा सकती है। भेजने का खर्च भी तो अधिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आता है तो भी तुम बिलायत में कितनी भेजना चाहते हों खर्च क्या आयगा।

९ तत्त्वार्थ के लिए एक पत्र बतौर अर्जी के जुदा लिख भेजो या बाबूराम वकीलसे अंग्रेजी में लिखवा भेजो हम अपनी सम्मति सहित बम्बइ भेज देवेंगे।

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४१ (५८) Cambay १९–५–३७

विजय वल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री आत्मानंद जैन महासभा के सेक्रेटरी नेमदास जैन बी. ए. जोग धर्मलाभ। कालेज की बाबत मिटिंग मिली थी उसका समाचार अबी तक तुमारी तर्फसे नहीं मिला क्या सबब है। सुना है एक सालकी गुंजायश मिल गइ है अच्छी बात है तबतक में तुम अपना काम कर सकोंगे। इस पत्रके पहुंचते ही बेंकमें श्री आत्मानंद जैन कालेज फंड का खाता खुलवा देना बेंक वह होवे जिसका बम्बई के साथ ताल्लुक होवे ताकि बम्बई की रकम सीधी बेंकमें पहुंच जावे बेंकमें पहुंचनेसे रकम भेजनेवालोंको तसल्ली हो जाती है। उमीद है तुमारा खाता बेंकमें खुल जाने पर उसमें रकम धीरे २ आती जायगी। तुमारे शहरकीभी रकम जमा होती जावे। लाला बनारसीदास को हमने लिख दिया है कि खाता खोलने पर बेकमें जमा करा देनी। सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४१ (५९) बडौदा २३–६–३७

शताब्दी संवत् २ जेठ सुदि पूनम बुधवार

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन हाई-स्कूल म. क. के मंत्री योग्य धर्मलाभ। १९–६–३७ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ।

१ जेठ सुदि अष्टमी श्री गुरुदेव की जयंती के समय श्री आत्मानन्द जैन कोलेज फन्ड की लाला गंगारामजी के शुभ नामसे उनके सुपुत्र लाला बनारसीदासने शुरूआत कराइ और लाला चांदनमल्लने सद्गत लाला रत्नचंद के स्मरणार्थ बोर्डींग के लिए दो कमरे बनवाने की उदारता बताइ एसे अन्यान्य बाइ–भाई जिन्होंने यथाशक्ति सेवा की जिसकी बाबत धन्यवाद दिया गया खुशी की बात है।

२ इम्पिरियल बेंक में श्री आत्मानन्द जैन कोलेज फंड के नामका खाता खोला गया लिखा सो ठीक है।

एक बात का जरूरी ख्याल रखना जो रेज्यूलेशन पास किया गया हो उसमें इतना जरूर ही सुधारा कर लिया जाय कि जो रकम बहारसे श्री आत्मानन्द जैन कोलेज के नामसे फंडमें आवे वह रकम अगर दैवयोग कोलेज में कामयाबी हासल न होवे तो गुरुमहाराज की सलाहसे जिस काममें लगानी मुनासिब समझा जावे लगाई जावे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३ बिरादरी के मुखियाने साध्वियोंको अर्ज करी जिसका उन्होंने संतोषजनक उत्तर दिया अच्छी बात हैं परंतु ऐसा मौक्या आया ही कैसे ? येह तो गुरुकुल की और कोलज की दोनों की यथायोग्य सेवा किये जाती है। जबतक कोलेज का नाम नहीं या तबतक जितनी होसकी गुरुकुल की सेवा तुमारे भाईयोंके नाराज होते हूए भी करती रही है और अब दोनों की यथायोग्य तुम कहों चाहे न कहों तुम राजी हों चाहे नाराज हों करती ही रहेंगी। साधु–साध्वी कोई तुमारे ऐसे बंधे हुए नहीं है कि जो कुछ तुम कहों वही करें।

४ इशतहार का नमूना बनाकर तुमने भेज देना देखकर वापस भेज दिया जायगा।

इसमें कोई शक नहीं अपनी २ शाखा की जुम्मेवारी जरूर होनी चाहिये। हाईस्कूल कोलेज की जुम्मेवारी जैसी अंबालावालों के है वैसी ही गुरुकुल की गुजरांवालावालों के है। तुमारे लिये या दोनों नगरों के सिवाय अन्य स्थलोवालों के तो दोनों की जुम्मेवारी माननी होगी।

जब गुरुकुल नहीं था तब हाईस्कूलकी ही योग्य सेवा बजाइ जाती थी। जब गुरुकुल बना तो गुरुकुल की सेवा की गइ साथ में हाईस्कुल की भी योग्य सेवा होती रही है यह बात तुमसे भूली हुइ नहीं है। अब कोलेज का समय आया है इसकी भी योग्य सेवा की जावेगी। परंतु साथ में गुरुकुल को भूलना तो इस जिंदगी में कबी भी न होगा। जैसा हमारा ख्याल है वैसा ही तुमारा बलकि स्वर्गवासी गुरुदेव के भक्त कुल पंजाबका ऐसा ही ख्याल होना चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

५ यह तो हम जानते ही है कि अंबाला श्रीसंघ हमेशांसे काम करता आया है और अब भी करेगा ही परंतु यदी हमारे वहां चहुंचने पर ही यह यश श्रीसंघ हमको ही दिलाना चाहते है तो बडी खुशी की बात है। अंदर ही अंदर तैयारी तो कर रखनी चाहिये। श्रीसंघ गुजरांवालाने हिम्मत करी तो गुरुकुल जम गया। इसी तरह श्रीसंघ अंबाला हिम्मत करेगा तो जरूर ही कोलेज भी जम जायगा।

६ सितम्बर के लिए हमारा स्थान नींश्चित होने पर लिखा जायगा। चरणवि० की बिमारी के कारण यहां आना हुआ है, चौमासा खंभात का माना गया है २१ का विहार करना था। चरणवि० की तबियत अधिक सुस्त हो जानेसे विहार नहीं हुआ। अब दो दीनसे विहार को रोकनेवाली वर्षा शुरू है जो बने सो सही २८ सोमवार को वर्षा न हुई तो विहार होगा।

७ तुमारे लिखनेसे हमारा अनुमान ठीक ही निकला। बेशक बोर्डींग के कमरे कोलेजका ही विभाग है परंतु कोलेज फंड में तो गिनती न होगी।

८ महासभा संबंधी पंडितों के लिए तो तुमने लिखा परंतु स्मारक अंक और दील्ही की बाबत का खुलासा तो लिखा नहीं। बाबू जसवंतराय स्मारक अंककी मांग करते है अभी तक उनको मिला नहीं हैं पांच अंक उनको पहूंचा देने। ३ दील्ही के १ बाबू। १ लालाजी और १ टीकमजी की वहू। १ दर्शनवि० को और १ कस्तलावाले कन्हीयालाल के लिए इस तरह पांच। सर्व श्रीसंघ को धर्मलाभ।

साध्वियों को सुखसाता के साथ यह पत्र सुना देना ताकि उनको भी ख्याल रहे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस पत्र की पहुंच यहां ही देनी मारफत भाइचंद त्रिभुवनदास पटवा। मांडवी रोड, बडौदा.

कोलेज–फंड

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४२ (६०) खंभात ९–७–३७

शताब्दी सं. २ आषाढ सुदि २ शुक्रवार

विजयवल्लभसूरि विजयललितसूरि आदि की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुंदरलाल योग्य धर्मलाभ। २१–६–१९३७ का लिखा पत्र जिसमें २७–६–३७ का लिखा बोर्ड का पत्र मय जीरावाले वकील बाबूराम M. A. के पत्र के था। २७–६–३७ को लाहोर की छापसे रवाना होकर २९–६–३७ को Cambay पहुंचा। २८–६–३७ को हमने बडौदासे विहार किया और ५–७–३७ को हम खंभात पहुंचे। तुमारे पत्र के जवाब में देरी का कारण स्वयं विचार लेना। तुमारे पत्र का क्रमशः उत्तर।

१ मंजूरी मिलने पर फंड के लिये विचार ठीक है, परंतु तत्काल रकम एकठी कैसे हो सकेगी ?

२ अंबाला शहर के लिए हमारे पहुंचने पर विचार रखना ठीक है परंतु अंबाला की रकम विना पंजाब के और शहेरों वाले भी लिखने को तैयार न होंगे। इस लिए पंजाब को हमारे पहुंचने पर ही रखना, लेकन बम्बई आदि के लिए तो अभी से ही उद्यम होना ठीक है। हमारे इधर होते २ इस देश में काम जितना भी हो सके कर लिया जाय बाद में हमारे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पंजाब पहुंचने पर इस देश में काम बनना मुश्किल होगा। और खास कर के इसी देश के लिए हमने जो स्कीम भेजी थी समझने की है, सो विचार करके एक छोटासा इश्तिहार बनाकर एक तर्फ हिन्दी दूसरी तर्फ गुजराती छपाया जावे और आदमी भेज दिये जाय। बाद चौमासा के हमारे पंजाब के विहार में अहमदाबाद आदि गुजरात के और सादडी आदि मारवाड के शहरों में भी कुछ प्रयत्न होता जावे ता उमीद है हमारे पंजाब में पहुंचते तक अच्छी रकम हो जायगी। फिर बाकी के लिए पंजाब में उद्यम किया जायगा इस लिए मंजूरी के ही भरुंसे पर बैठ रहना ठीक न होगा।

३ स्मारक की ७५ नकल का वेरवा हमको मिल जावे तो बाकी के लिए पता मिले और जरुरत जितनी और नकल भेजवाने का प्रबंध किया जावे।

४ यूरोप के या अन्यान्य स्थलों के योग्य स्कोलरों के नाम पता भेजने के साथ उनको क्या लिखा जावे उसकी भी नकल भेज देनी ताकि योग्य प्रबंध हो जावे। त्रिषष्ठिशलाका चरित्र के साथ २ स्मारक अंक और जैन तत्त्वादर्श भी जिन २ को भेजना योग्य निशान 卐 कर देना। समालोचनार्थ जरनलोका भी पता लिख भेजना। यह फेहरिस्त जुदी ही लिख भेजनी ताकि सारा ही पत्र भेजने की जरूरत न रहे, क्यों कि पुस्तक भावनगर श्री आत्मानंद सभा में हैं वहांसे सीधा ही भेजने का प्रबंध होगा सो केवल फेहरिस्त उनको भेज कर लिखा दिया जायगा कि इतने स्थानों पर अमुक २ पुस्तक भेज दिया जाय।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

५ तत्त्वार्थ सूत्र के लिए लिखा दिया है।

६ अज्ञानतिमिर भास्कर का थोडा सा भाग पंडितजीने यहां भेजा है जो तुमको भेजा जाता है। तुमारी इच्छा है तो होने दो तैयार हो लेवे पीछे छपाने के समय शोच लिया जायगा। परंतु तुम लिखते हो दो सौ दिये जा चूके हैं तो इस तरह काम कैसे चलेगा शोच लेना।

७ स्मारक ग्रन्थ की जिन जिन स्कोलरो की या न्युसपेपरों की या पंडितों की सम्मतियां आई हों उनकी नोंध फेहरिस्त बना कर भेज देनी और असली अपने पास सभाल रखनी वक्त-सर काम में ली जायगी।

८ चरणवि० को तबियत बराबर ठीक न होनेसे दाक्तर की सलाहसे बडौदा ही छोडकर हम यहां आये है।

९ सर्व श्रीसंघ लाहौर को धर्मलाभ।

१०-७-३७ वल्लभविजय

साहित्य प्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४२ (६१) खंभात २४-७-३७

श. सं. २ श्रावण वदि १

विजय वल्लभसूरि आदी की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुंदरलाल सपरिवार योग्य धर्मलाभ।

बहुत दिनों बाद २२-७-३७ का तुमारा कार्ड मिला। पढ-कर ताज्जुब हुआ कि ९-७-३७ को हमने ८ से ११ अंक का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खुलासावार तुमारे २१ और २७-६-३७ के पत्र का जवाब दिया है और तुम ईस कार्ड में चिरकालसे पत्र नहीं की शकायत करते हैं समझ में नहीं आता कि क्या बना ?

१ तत्त्वार्थ के लिए बम्बई तुमारी अर्जी मय बाबूरामके पत्र के भेजी गई है संभव है पास हो जायगी तुमने तैयारी कर रखनी. पर्युषणा बाद काम शुरू कर दिया जाय।

२ विद्वानों की सम्मतियां की कोपी भेज देनी असली अपने पास संभाल रखनी।

३ प्रो. शुब्रींग का लिखना योग्य है यह काम जरूर ही होना चाहिये। तुमने जिस ढंग पर होना लिखा है स्कीम तैयार कर लेवें और यह काम किसके पास कराना कितना खर्च आ सकेगा वगैरह अंदाजा कर रखना हमारे पंजाब पहुंचने इस कामको जरूर हाथ में लिया जायगा।

अगर कोई पाश्चिमात्य स्कोलर इस कामको कर सकता हो और थोडे खर्च में होता हो तो पत्रव्यवहार कर लेना।

हमारी रायमें यदि बाबू बनारसीदास प्रोफेसर जैन M. A. इस काम की हिम्मत करते हों तो यह लाभ इनको ही देना।

४ जो जो ग्रन्थ खास जैन धर्म के प्रचार के लिए तुमारे ध्यानमें आवे विचार लेना धीरे धीरे समय पाकर हो जायगा। स्वर्गवासी गुरुदेव की शताब्दी फंडका उपयोग खास करके इसी कार्य में होना निश्चित हुआ है।

५ अज्ञानतिमिर भास्कर की बाबत प्रथम हमने लिखा दिया है (जो पत्र) तुमको मिला नहीं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

" अज्ञानतिमिर भास्कर का थोडा सा भाग पंडितजीने यहां भेजा है जो तुमको भेजा जाता है। तुमारी इच्छा है तो होने दो तैयार हो लेवे। पीछे छपवाने के समय शोच लिया जायगा। परंतु तुम लिखते हो दो सौ दिये जा चुके हैं तो इस तरह काम कैसे चलेगा शोच लेना "

६ चरणवि० की बिमारी का कोइ ढंग अच्छा नहीं दीखता। दवाई के लिए बडौदा रखा है।

७ पांच प्रतिक्रमण मूल की किताब बम्बई वाली जिसमें हिन्दी अतिचार है उसको छपवानी है एक हजार दो हजार और तिन हजार पर कागज सहित क्या लागत आयगी और यह काम तुमारेसे हो सकेगा खुलासा देना।

सबको धर्मलाभ।

मार्गदर्शन

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६–५४३ (६२) ७–१२–३८

साढौरा, जिला अंबाला (पंजाब)

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री उमेदपुर ४८ सी के सकल पंच महाजन समस्त श्री जैन श्वेतांबर योग्य धर्मलाभ।

श्री पार्श्वनाथ उमेद जैन बालाश्रम के भव्य श्री जिनमंदिर और श्री अमीजरा उमेद पूरण पार्श्वनाथस्वामि की प्रतिष्ठा की कुंकुम पत्रिका मिली, पढकर आनंद आया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हम दूर होनेसे आपको रूबरू में कह नहीं सकते है इस लिए पत्रद्वारा हम अपने विचार आप सरदारों को मालूम करते हैं आप जरूर ध्यान में लेवें।

१ बालाश्रम कैसे बना, किस तरह किस २ ने उद्यम किया, जंगल में मंगल हो गया, यह सब आपने जान ही लिया होगा। अगर निष्पक्ष कहा जाय तो आप समझेंगे आचार्य श्री विजय-ललितसूरि और श्रीमान् सेठ गुलाबचंदजी ढढ्ढा M. A. इस संस्था के प्राण हैं।

२ इनसे जितनी बनी बालाश्रम की सेवा द्वारा ४८ सी के श्रीसंघ की ही नहीं समस्त श्री श्वेतांबर जैन संघ की सेवा की है और करते रहेंगे इन में फरक नहीं।

३ क्यों कि अब इस बालाश्रमको आप सर्व श्री ४८ सी के पंचोंने अपना लिया है तो इस संस्थाके आप सब ही प्राण बन चुके हैं, आपको चाहिये कि इस संस्था की दिन दुगुनी रात चौगुनी के हिसाबसे प्रगति–तरक्की करें ताकि आपका निर्मल जस चारों तरफ फैल जावे।

४ आप समस्त पंच सरदार और आप की मानींद फौज के समस्त ४८ सी के सर्व भाई प्रायः श्री देवगुरु धर्म के प्रभावसे माला माल धनाढय है, आपका फरज है कि आप यथाशक्ति बालाश्रम को दान देकर अपनी भक्ति का परिचय देवें ताकि बालाश्रम भी आप की तरह मालामाल बन जावे और हर एक किसम का हरएक को विद्यादान देता रहे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

५ यह ४८ सी का ही नहीं जैन मात्रका एक तीर्थ बन जावे इस लिए हर साल श्री वरकाणाजी, श्री राणकपुरजी, श्री कोरटाजी आदि तीर्थों पर जैसे मेला नौतरा जाता हैं इसी तरह यहां भी मेला नौतरा जावे। ४८ सी के एक एक गाम की तर्फ से एक एक साल मेला नौतरा जावे तो ४८ गाम के हिसाबसे ४८ वर्षों बाद फिर उस गाम की वारी आ सकती है। ऐसा होने पर आपके बालाश्रम की भी अधिक प्रख्याति और उन्नति होगी।

६ श्री पार्श्वनाथ उमेद जैन बालाश्रम हमारा है इस प्रकार की सारी ही ४८ सी की मान्यता और प्रीति बनी रहे इस लिए कमसे कम एक रूपया घर प्रति बालाश्रम को प्रेमसे मिले ऐसा प्रबंध पंच सरदारों की तर्फसे होना चाहिए। तथा विवाह–सगपन के समय लडकेवालों की तर्फसे सवा रूपया और लग्न–शादी मौक्ये पर लडकेवालों की तर्फसे सवा पांच और लडकीवालों की तर्फसे सवा दो रूपये श्री बालाश्रम को प्रीतिदान मिलता रहे ऐसा भी प्रबंध पंच सरदारों की तर्फसे होना चाहिये। अगर घरधनीको इससे ज्यादा देने की इच्छा होवे तो खुशीसे दे सकता है।

७ आप जानते हैं धर्मादा पैसों की बाबत बम्बई आदि कितने ही स्थानों मे झगडे टंटे होते नजर आते है गामों में तड पड जाते है इस लिए श्री मंदिरजी की और बालाश्रम की बोलियां वगैरह की अमुक कामचलाउ रकमसेअ धिक मोटी रकम को बम्बई जैसे शहरों में किसी मकान आदि में लगाई जावे ताकि रकम को किसी प्रकार का धोखा न होवे और किराया बेंक और बाजारु व्याजसे ज्यादा मिले।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सकल पंच सकल श्रीसंघ सकल बालाश्रम के विद्यार्थी और कार्यकर्त्ताओं को धर्मलाभ। आचाय विजयशांतिसूरिजी, विजयललितसूरि आदि जो जो साधु महाराज इस मौक्ये पर बिराजमान होवे उन सबको वंदनानुवंदना सुखसाता कह देवें इतिश्री। मिति मगसर सुदि १ मंगलवार १९९५ नवंबर २२-१९३९.

ज्योतिष

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४३ (६३) साढौरा ७-१२-३८

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री जोधपुर सुश्रावक उमरावचंद भंडारी इन्द्रचंद धनपतचंद भंडारी योग्य धर्मलाभ।

२६-११-३८ का अंबाला की मारफत आज मिला। श्री फलोधी पार्श्वनाथजी के श्री जिनमंदिर पर धजा चढाने के लिए माघ सुदि ३-७-१० और १३ चार दिन आपने लिखे उनमेंसे तृतीया का दिन हमारी समझ में अच्छा है। चौथारवियोग है। अमृत सर्वांकि, द्विक सिद्धियोग भी है। कुंभका चंद्र। धनपतचंद को ३ उमरावचंद और इन्द्रचंद को १० श्रीसंघ को १ श्री पार्श्व प्रभु को ५ और गामको ३ तथा श्री जोधपुर नरेशको १० मा आता है जो सबको सुखदायी है।

माघ सुदि ७ को रेवती और १३ को पुनर्वसु नक्षत्र उर्ध्व नक्षत्र न होनेसे इस कार्य में लिये नहीं जाते।

दशमी को और तो सब ठीक है केवल प्रभु श्री पार्श्वनाथ स्वामी के चंद्र ८ वां होता है यदि कुंभ स्थापनादि उत्सव करने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की इच्छा होवे तो माघ वदि ११ सोमवार को कुंभ स्थापन हो सकता है। न करना हो तो तमारी इच्छा, तीजको ही अभिषेक कराके चढा सकते है। सकल श्रीसंघ को धर्मलाभ।

हम विहार में है इस लिए पत्र श्री आत्मानन्द जैन सभा। अंबाला सीटी (पंजाब) की मारफत देना ठीक होगा।

ज्योतिष

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४३ (६४) २८-१२-३७

Baraut U. P- (Inerut)

विजयवल्लभसूरि का धर्मलाभ। श्री अजीमगंज सुश्रावक बाबू रंजितसिंह दुधोडिया योग्य। पो. वदि ११ का पत्र पो. सुदि पंचमी को मिला हाल मालुम हुआ। यहां हम २६-१२-३८ को पहुंचे है २७ जनवरी को यहां के श्री जिनमंदिर में प्रभु श्री महावीर स्वामी की प्रतिष्ठा होनी है इस लिए तब तक यहां ठहरना होगा।

प्रवेश माघ सुदि १३ बृहस्पतवार २-२-१९३९ को हो जाना हमारी समझ में अच्छा प्रतीत होता है। क्रिया के लिए अहमदाबाद लिखा है वहांसे आपको समाचार मिल जायगा। सकल श्रीसंघ को धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्कोलरशीप

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५–४३ (६५) बडौत ३–२–१९३९

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला बनारसीदास जैन एम. ए. प्रोफेसर ओरियण्टल कोलेज लाहौर योग्य धर्मलाभ।

माघ शुक्ला ११ का पत्र द्वादशी १–२–३९ को मिला हाल मालुम हुआ तुमारी योजना बहुत ही अच्छी है यदि बराबर। चलती रही तो अवश्य फायदा होगा। जिस विद्यार्थी के लिए छात्रवृत्ति लिखी है मिल जायगी तुमारा हमको विश्वास है तुम शुरू कर देवें प्रतिमास तुमारे पास पहुंच जायगी खातर जमा रखें। अभ्यास के साथ कर्त्तव्य परायण भी होने की जरुरत है।

५–२–३९ को यहांसे विहार करके बिनौली जायंगे इस लिए पत्र बाबू कीर्त्तिप्रसादजी जैन की मारफत देना। सबको धर्मलाभ। विद्यार्थी को भी धर्मलाभ।

जयंति–उत्सव

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५–४३ (६६) २१–२–३९

सरधना, जिला मेरठ

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन महासभा अंबाला शहर योग्य धर्मलाभ। उमीद है १२ और १७ तारीख को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बिनौली और खीवाई से पत्र दिये है उसकी तामील होगई होगी।

इस पत्र के पहुंचने पर एक सरक्यूलर पंजाब में भेज दिया जाय।

चैत्र सुदि १ बुधवार २२ मार्च को स्वर्गवासी गुरुदेव १००८ न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंदसूरि श्री आत्मारामजी महाराज का जन्मदिन, उनकी जन्म-शताब्दि का दिन और उनके परम गुरुदेव १००८ श्रीमद्‌बुद्धिविजयजी श्री बूटेरायजी महाराज के स्वर्गवास का दिन है इस लिए उस रोज यथाशक्ति पूजा, प्रभावना, सामायिक प्रतिक्रमण सभा व्याख्यानादि धार्मिक उत्सव मनाना योग्य है।

विद्याभवन

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६५-४३ (६७) २२-२-३९

सरधना (मेरठ)

विजयवल्लभसूरि की तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरिजी के परम भक्त बाबू बनारसीदास जैन M. A. प्रोफेसर ओरियण्टल कालिज लाहौर योग्य धर्मलाभ। फागन वदि ७ १९९५ का आपका पत्र मिला हाल मालूम हुआ।

श्री गुरुदेवके जन्म-दिनसे विद्यार्थी सुरेन्द्रमोहन की छात्रवृत्ति जारी की जावे आप का यह विचार उत्तम है ऐसे ही होगा। प्रतिमास आपकी मारफत ही मिल जाया करेगी। इसकी बाबत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हम खुद ही ख्याल रक्खेंगे केवल आप हमको याद दिला दें कि मास पूर्ण होने वाला है।

परीक्षा के लिए प्रश्न गुजरांवाला गुरुकुल पंडित हंसराज M. A. से मंगवा लेने और उनको ही भेज देने फलितमात्र हमको लिख देना।

पंजाब जैन भवन के लिए आपका विचार प्रशंसनीय है रूबरू में खुलासा होगा।

ग्रन्थों की बाबत ज्यौं ज्यौं पंजाब के क्षेत्रों में भंडार देखे जावेंगे त्यौं त्यौं अधिक २ नकलें जुदा करके पहुंचादी जावेंगी।

विद्याभवन की आयोजना में कमसे कम लाहौर जैसे शहर में दश सहस्र चाहिये इतनी रकम आज कल एकठी होनीं मुश्कल है, शताद्वि फंड की रकम एक बहूत ही जरूरी काम में लगाई जानी ट्रस्ट बोर्डने मान ली है। संभवतः उस कार्य में आपको भी सहयोग देना होगा। सुरेंद्रमोहन शास्त्री को धर्मलाभ कहना। विवाहित है या कि कुमार? इस पत्रका जवाब मेरठ सीटी, सिपट बाजार मारफत बाबू रसालसिंघ जैन वकील दे देना।
२४-२-३९.

विनति

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४३ (६८) २६-३-१९३९

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री पट्टीनगरे सकल श्रीसंघ योग्य धर्मलाभ। यहां श्री देवगुरुधर्म के प्रतापसे सुख-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

साता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना। आप श्रीसंघ की विनती मंजूर हो जाती परंतु एक तो दूर का मुकाम दूसरा श्रीसंघ होशियारपुर की विनती चौमासा की (कोई खास कारण न होवे तो) मानी गई है। अब तो तुमारी भावनानुसार ज्ञानीने देखा होगा गुजरांवाला के चौमासा बाद १९९८ का चौमासा पट्टी में करनेका विचार किया जायगा।

शास्त्रीजो

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४४ (६९) रायकोट ९-६-१९३९

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री आत्मानन्द जैन गुरु-कुल पंजाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ।

पत्र मिले हाल मालुम हुआ।

पत्र लानेवाले महाशय पं. सुरेन्द्रमोहन शास्त्री पास है. जैन न्यायतीर्थ का अभ्यास करना चाहते है और आगे उच्च कोटिके जैन सिद्धान्त के अभ्यास की अभिलाषा रखते है जाति के क्षत्रीय, यु. पी. मुजफ्फरनगर जिल्ले के रहीस अविवाहित हैं। आर्थिक स्थिति ऐसी वैसी ही है जिससे पितादि के पोषणार्थ गुरुकुल में योग्यतानुसार संस्कृत हिन्दी की पढाई करावेंगे और २०) वीस मासिक लेवेंगे भोजन गुरुकुल के विद्यार्थीयों के साथ करेंगे। नियत किये टाईम में श्रीयुत पं. मथुरदास शास्त्रीजी से आप जैन न्यायतीर्थ का अभ्यास करेंगे। इस लिए इनको यह पत्र देकर गुरुकुल में भेजे गये है। एक मास या दो मास गुरुकुल के कायदानुसार योग्यता देखकर कायम कर लेना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५–४४ (७०) रायकोट १३–६–३९

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब योग्य धर्मलाभ। १२–६–३९ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ। यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना। पं. सुरेन्द्रमोहन शास्त्री की बाबत समझ लिया। जंडियाला निवासी तिलकचंद सेवाभावसे गुरुकुल में रहे अच्छी बात हैं साथ में उसके अभ्यास की वृद्धिका प्रबंध भी होना जरूरी है, कलकत्ता की परीक्षा का परिणाम ठीक आया खुशीकी बात है। न्यायतीर्थ हुए पं. गंगाप्रसादजी यदि मुनि वीरवि० को प्रमाणनय तत्त्वालोकालंकार–रत्नाकरावतारिका का अभ्यास करा सके तो यहां बुलाने का विचार किया जावे।

श्रीयुत शास्त्री मथुरादासजी के लिए हमको पूछे विना ही उसने लिखा है खैर। यदि गुरुकुल का किसी प्रकार नुकसान न होता हो और पदरां वीस दिन किसी २ मौक्ये पर यहां रहना हो सकता हो तो खुलासा लिखना किस महिने में कब से कब तक।

श्रीयुत हंसराजजी M. A. ने इस्तिफा दे दिया है उनके पत्रसे मालुम हूआ है। हमारे पास एक पत्र आया है जो साथमें भेजा जाता है अगर योग्य समझा जावे तो हंसराज के स्थान पर या श्रीयुत जवेरियाजी के स्थान पर इसको रख लिया जाय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तनखा कमिटि के इच्छानुसार दी जाय. समय विचारना चाहिये यह नहीं हो सकता कि किसी वक्त अमुक स्थान पर इतनी तनखा अमुक को दी जाती थी तो अब भी उस स्थान पर जो आवे वही तनखा उसे भी दी जाय।

आप जानते हैं गवर्नमेण्टने भी इस पर विचार कर लिया है। हमारी रायमें इस की जो डिग्री है ऊची होगी ओर जवेरीयाजी का स्थान संभाल सकेगा। अगर ठीक अैसा ही होवे तो शुरू शुरू में पचास की तनखा ठीक है।

यह हमने अपनी इच्छासे लिखा है करना न करना तुमारा अखतियार है क्यों कि तुमको किसी की राय लेनेकी जरूरत नहीं हैं। बी. ए. महाशयको स्थान दिया गया बाद में हमको १२-६-३९ के पत्रमें पता दिया जाता है।

वारियोंकी फेहरिस्त भेजने का और वह विशुद्ध वि० को देनी लिखने का क्या मतलब है।

सबको धर्मलाभ कहना।

चौमासा यहां रायकोट ही होगा।

१४-६-३९

संप

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४४ (७१) रायकोट २०-६-१९३९

विजयवल्लभसूरीकी तर्फसे श्रीसंघ लुधीआना तथा मेनेजिंग कमिटि लुधीआना श्रीसंघ योग्य धर्मलाभ। हमको अनुभव हो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रहा है कि आपके यहां ऊपर लिखे मुजिब दो विभाग श्रीसंघ में हो रहे है जिससे परस्पर वैमनस्य के कारण आपसमें विरोध बढ़ता जा रहा है जिसका फल धार्मिक कार्य में हरकतें होने के सिवाय और कुछ भी नजर नहीं आता। तुम सभी स्वर्गवासी गुरुदेव के सच्चे भक्त हैं इस लिए तुम दोनों विभागमें से मुखिया चन्दभाई मिल कर हमारे रूबरू में फैंसला कर जाओ यही हमारी इच्छा है॥

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४४ (७२) रायकोट २५-७-३९

विजयवल्लभसूरि की तर्फसे श्री अंबाला शहर श्री आत्मानन्द जैन कोलेज के सभ्य लाला संतराम मुन्नीलाल, हंसराज, चांदन भक्त, मंगतराम, निरंजनदास और वकील साहब श्रीयुत महावीर प्रसादजी योग्य धर्मलाभ। कोलेज की बाबत समझौता करने के लिए आपको सौंपा गया है तो आपका फरज समझा जाता है जहां तक हो सके समझौता कर लेना मुनासिब है आप सब दाना हैं खास करके वकील साहिब जमाने के अनुभवी है समझ शोच कर आयंदा नफा नुकसान विचार लेना ठीक है। आप जानते हैं हम इससे अधिक लिखना ठीक नहीं समझते बाकी हमारा दिल तो हमेशां दया और शांति ही चाहता है उमीद है इसका फैंसला हो जायगा।

द. वि. वल्लभसूरि का धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर्युषण तिथि

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४३ (७३) श. सं. २

खंभात. २९-७-३७

विक्रम सं. १९९४ श्रावण वदि ६ गुरुवार

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि आदि साधु ठाणा सातकी तर्फसे। श्री आत्मानन्द जैन महासभा (श्रीसंघ) पंजाब। योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां श्री देवगुरु धर्म के प्रभावसे सुखसाता है, धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना।

विशेष समाचार यह है कि, गत वर्ष संवत् १९९३ के समान अबके वर्तमान संवत् १९९४ में भी भाद्रवा सुदि में दो पंचमिया पंचांगों में लिखी है प्रथम पंचमी गुरुवार, ता. ९ सितंबर १९३७ भाद्रों प्रविष्टा २५ को लिखी हैं और दूसरी पंचमी शुक्रवार १०-९-३७ भाद्रो दिन २६ को लिखी है। क्यों कि अपने तपगच्छ की परंपरा में न तो तिथि का क्षय माना जाता है और नाही तिथि की वृद्धि मानी जाती है, इस लिए— "क्षये पूर्वाचार्यों के वचनानुसार तिथि का क्षय होवे तब पूर्व दिन में पर्व तिथि करनी अर्थात् जैसे पञ्चांग में अष्टमी का क्षय लिखा है तो सप्तमी के रोज अष्टमी पर्व तिथि माननी और सप्तमी अपर्व तिथि का क्षय मान लेना। इसी तरह तिथि की वृद्धि होवे तो उत्तरा दूसरी तिथि को पर्वतिथि माननी और पहली तिथि को पूर्वली अपर्व तिथि में शामल कर देनी अर्थात् उस अपर्व तिथि की वृद्धि कर लेनी। जैसे पंचांग में दो अष्टमी हैं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तो दूसरी अष्टमी को पर्वतिथि अष्टमी माननी और पहली अष्टमी को अपर्व तिथि सप्तमी के साथ शामल कर लेनी अर्थात् सप्तमी दो मान लेनी।

इसी तरह आज तक श्रीसंघ पंजाब स्वर्गवासी गुरुदेव १००८ श्री बुद्धिविजयजी (श्री बूटेरायजी) महाराज तथा न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरी–प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी महाराज के समयसे मानता और करता चला आया है। इस मुजिब गत वर्ष १९९३ में भाद्रवा सुदि पंचमियां पंचाग में दो थी परंतु अपने परंपरा और पूर्वाचार्यों के वचनानुसार पहली पंचमी रविवार को दूसरी चौथ मान कर उस रोज अर्थात् भाद्रवा सुदि दूसरी चौथ रविवार को छमच्छरी पर्व की आराधना की थी. इसी तरह अब के भी १९९४ भाद्रवा सुदि दूसरी चौथ गुरुवार तारीख ९ सितंबर १९३७ भाद्रो दिन २५ को श्री छमच्छरी पर्व की आराधना करनी होगी। जिसका कार्यक्रम (प्रोग्राम) इस मुजिब हैं।

१ श्रावण सुदि पंचमी बुधवार ११–८–१९३७ श्रावण प्रविष्टा २७ को मासखमण-एक माहके व्रतों का प्रारंभ।

२ भाद्रवा वदी पंचमी गुरुवार २६–८–१९३७ भाद्रों प्रविष्टा ११ को पाखमण–पंदरां दिनों के व्रतों का प्रारंभ।

३ भाद्रवा वदि १२ गुरुवार २–९–१९३७ भाद्रों प्रविष्टा १८ को अठाइ धर–आठ वृतों का प्रारंभ। पर्यूषणपर्व शुरू।

(भाद्रवा वदि १३ का क्षय है। इस लिए छठ बेला करने वाले अपनी इच्छानुसार द्वादशी चतुर्दशी गुरुवार और शुक्रवार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का भी कर सकते हैं, अमौस और भाद्रवा सुदि एकम–शनिवार रविवार का भी कर सकते हैं। जिनको जैसे सुभीता होवे करें।)

४ भाद्रवा सुदि एकम रविवार ५–९–१९३७ भाद्रों प्रविष्टा २१ को श्री कल्पसूत्र प्रारंभ।

५ भाद्रवा सुदि दुज सोमवार ६–९–१९३७ भाद्रों प्रविष्टा २२ को श्री महावीर जन्मोत्सव।

६ भाद्रवा सुदि तीज, पहली चौथ और दुसरी चौथ—ता. ७–८ और ९ सितंबर १९३७ भाद्रों प्रविष्टा २३–२४ और २५ को तेला।

७ भाद्रवा सुदि दुसरी चौथ गुरुवार तारीख ९–९–१९३७ भाद्रों प्रविष्टा २५ को श्री सांवत्सरिक–छमच्छरी पर्वाराधन।

८ भाद्रवा सुदि पंचमी शुक्रवार १०–९–१९३७ भाद्रों प्रविष्टा २६ को छमच्छरी का पारणा स्वामिवात्सल्यादि द्वारा पर्युषणा पर्व समाप्ति।

सेक्रेटरी श्री आत्मानन्द जैन महासभा पञ्जाब योग्य धर्मलाभ। ऊपर लिखे मुजिब सारा ही सरक्यूलर पञ्जाब के सब क्षेत्रों में पहुंचा देना। साथ में धर्मलाम के साथ हमारा यहां का पता भी लिख देना ताकि सबको पर्युषणा का पत्र देने में सुभीता रहे इति।

विजयवल्लभसूरि।
सेठ अंबालाल पानाचंद जैन धर्मशाला।
खंभात (गुजरात)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोलेज-फंड

वन्दे श्रीवीरमानन्दम् ।

२४६३-४२ (७४) श. सं. २

खंभात २-८-३७, वदि एकादशी सोम ।

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन कोलेज फंड कमिटि के सेक्रेटरी लाला नेमदास जैन बी. ए. अंबाला सीटी । योग्य धर्मलाभ । पत्र तुमारे दो मिले हाल मालुम हुआ । अभी एकदम चारों तरफ दौडा दौड करके नाहक में खर्च करने की जरूरत नहीं है । फिलहाल सबसे पहले बम्बई में काम करना होगा और वह मास्तरों से पूरा न होगा, किंतु लाला गंगारामजी, बाबू गोपीचंदजी जैसे श्रद्धालुओंसे अधिक प्रभाव पडेगा और काम जलदी होगा इस लिए विचार करके शुरू शुरू में तीन या चार आदमी सीधे यहां चले आवे यहां कितनेक बम्बईवाले प्रतिष्ठा पर आवेंगे उनके साध जान-पिछान करके उनके साथ ही बम्बई जाना होगा । वीस पचीस दिन होवे कि दूसरी दो तीन भाईयों की टोली बम्बई जावे और बम्बईवाले वापिस आ जावे । इसी तरह अदलाबदली करके बराबर पांच छै महिने मिहनत होगी तो उमीद है—श्री गुरुदेव के प्रतापसे कितना ही काम हो जायगा । यह पत्र तुमको उमीद है ४ या ५ तारीख को मिलेगा उसी रोज रवाना होकर यहां पहुंचना चाहिये ७ तारीखको जलूस है और ९ को प्रतिष्ठा है । बम्बई का काम होने बाद और जगासे भी कामयाबी होगी ।

जो आठ की रकम बम्बई से आनेवाली है वह लिखते है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इतनी रकम का चेक भेजने में दूरका मामला होनेसे गरबड हो जानेका अंदेशा रहता है इस लिए बम्बई में अगर किसीका लैन दैन होवे तो उसका पूरा पता लिख भेजना वह बम्बई दे देवें और तुम अंबाला में लेलो। आगे हमको याद है ताराचंद निहालचंदजी की मारफत बम्बईसे गुरुकुल की रकम अंबाला में मिल जाती थी–सो अब भी कोई ऐसी खरी आडत निकाल लेनी चाहिये।

जो भाई यहां आवे बडौदा से भेजी हुई पुस्तकों की पेटियों में से 卐 इस निशान वाली ३ नंबर की पेटी साथ में ले आवे। सबको धर्मलाभ। सतियों को सुखसाता पूछनी, जवाब जलदी मिलना ठीक है।

धन्य साधु–जीवन

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४२ (७५) श. सं. २

खंभात ५–८–३७

विजयवल्लभसूरि तथा विजयललितसूरि की तरफसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पञ्जाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ। ३१–७–३७ का पत्र मिला पंचप्रतिक्रमण किताब की बाबत हमको भी विद्यासूरिजीसे ही पता मिला है अंबाला लिख कर दरियाफत किया जायगा।

हमारा दोनों का ही ख्याल है कि यदि भाई श्री हंसराजजी रहे और कमिटि रखना चाहे तो अति उत्तम बात है। गुरु-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुल के नियमों का पालन करना इनका फरज है और इनको अपना लेना अपना फरज है। बाकी और जो कुछ विचारणीय कर्तव्य परायण व्यवस्था होगी हमारे पहूंचने पर आशा है सब ठीक हो जायगी।

कमिटि के सर्व सभ्यों को धर्मलाभ। श्री स्वामि सुमति-विजयजी महाराज की बाबत अफसोससे ज्यादा और क्या हो सकता है। असल में तो उन्होंने अपने जन्म को सफल कर लिया। अपनी ८० वर्षकी उमर में ६० वर्ष संयम पाला यही बडी भारी खुशी की बात है। गुरुभक्ति और अन्य छोटे बडे साधु की सेवा का उनमें अपूर्व गुण था। इतनी उमर में भी कहीं एक स्थान पर स्थानापति नहीं हुए एक वर्ष पहले ही मुल-तान से गुजरांवाला आकर छेल्ला चौमासा किया और इस साल श्रावण वदि एकादशी सोमवार ता. २-८-१९३७ की रात्रिको स्वर्गवास हुआ इससे उनके शरीर की शक्ति और उग्र विहार का बोध हो सकता है।

जैन कोलेज

२४६३-४२ (७६) श. सं. २

खंभात २३-८-३७

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि आदि की तर्फसे श्री बम्बई सुश्रावक शेठ गुलाबचंदजी साहिब ढढा M. A. लाला मंगत-राम अंबालावाला, सेठ फुलचंदभाइ जोग अत्रसे सबको सबका धर्मलाभ। आपके साथ जो बात हो रही थी गाडीका टाईम हो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जानेसे आप बीच में ही उठ खडे हो गये और मंगलीक सुन कर चल पडे।

आपके गये बाद हम इस निर्णय पर आये हैं। फिलहाल पंजाब सिवाय की इस देशकी रकम श्रीयुत मणिभाई नाणावटी की सलाह से "श्री आत्मानन्द जैन कोलेज फंड" के नामसे किसी बेन्क में सेठ कांतिलाल ईश्वरलाल, सेठ गुलाबचन्दजी ढढा M. A. और लाला संतराम मंगतराम अंबाला शहरवाला इन तीनों के नामसे जमा होवे।

जिस वक्त सरकारसे लिखा पढी तै हो जावे और कोलेज कमीटी कायम होकर धाराधोरण बन जावे तब यह रकम जितनी भी होवे कुल कमिटि को सोंप दी जावे। इति।

द. विजयवल्लभसूरि २३-८-३७

प्रतिमा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४२ (७७) श. सं. २

खंभात भाद्रो सुदि १२ शुक्रवार १७-९-३७

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि आदिकी तर्फसे श्री अंबाला सीटी सकल श्री जैनसंघ योग्य धर्मलाभ।

किसी समय अंबाला के किसी भाईने हमको कहा था कि रथ में पधराने लायक धातु की एक प्रतिमा की जरूरत है। हम उसकी तलाश में थे। गत वर्ष बडोदा में एक प्रतिमाजी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ध्यान में आये भेजने की तैयारी की गई। देनेवाले भाग्यवानने जवाब दे दिया। लाला बनारसीदास उस वक्त मौजूद थे इनके ही साथ भेजने की तैयारी की थी। परंतु ज्ञानीने नहीं देखा था काम नहीं बना।

स्वर्गवासी श्री गुरुदेव के प्रतापसे यहां खंभात में उससे भी अधिक दिल पसंद मिली जो लाला हुकमचन्द को खास इसी लिए बम्बई से बुलाकर उसके साथ अंबाला शहर भेजी गई है श्री शांतिनाथ स्वामी की धातु की मूर्त्ति जिसकी पहुंच श्री नव-पल्लव पार्श्वनाथ के श्री जिनमन्दिर के कार्यकर्त्ता झ्हौरी दलपतभाई आदि सकल पंचायत के नाम मय धन्यवाद के भेज देनी।

यदि रथयात्रा के काममें न आ सके तो यह श्री शांतिनाथ स्वामी की मूर्त्ति श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल में पहुंचा देनी और हमको खबर दे देनी जिससे रथयात्रा के लिए फिर ध्यान रहे। जो प्रतिमाजी भेजे गये हैं उनके लिए मुकुटकुंडलो दो। हार दो एक छोटा एक बडा। दो बाजुबंद और दो कडे। इस किसमके बनने को दिये गये हैं फिर अंगरचना की कोई जरूरत न रहेगी। खर्च दोसौ से तीनसौ तक अंदाज आयगा। श्रीसंघ में से जिस किसी भाग्यवान् श्रावक या भाग्यवती श्राविका की इच्छा देनेकी होवे पूछ लेना। वरना श्रीसंघ तो जयवंता है ही सर्व संघको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिनमंदिर

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३-४२ (७८) श. सं. २

खंभात ३०-९-३७

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि आदिकी तरफसे श्री विजयानन्द जैन श्वेताम्बर कमिटि व सकल श्रीसंघ गुजरांवाला (पंजाब) योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां श्री देवगुरु धर्म के प्रभावसे सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना।

आप श्रीसंघ को यह तो बखूबी मालुम है कि—आचार्य श्री विजयललितसूरिजी की मिहनत से उमेदपुर रियास्त जोधपुर मारवाड में श्री पार्श्वनाथ उमेद जैन बालाश्रम नाम की संस्था चल रही है। श्रीसंघमें से कितने ही भाग्यशालियोंने इस संस्था को देखा भी है। बडौदा में इस संस्था के विद्यार्थियों को देखने का सौभाग्य गुजरांवाला के सभी भाई और बाई जो बडौदा में स्वर्गवासी गुरुदेव की जन्मशताब्दी के शुभ प्रसंग पर आये थे मिला है मतलब वहां विद्यार्थियों के और आममार्ग होनेसे आते जाते हरएक जैनको दर्शन सेवा-पूजा का लाभ मिलता रहे इस लिए वहां एक बडा आलीशान श्री जिनमंदिर बन रहा है। मूलनायक श्री पार्श्वनाथ स्वामी एक हजार फणां वाले हैं जिनकी ऊंचाई ६ फूट एक इंच की है मूर्त्ति श्याम वर्ण खूब ही मनोहर है। इस बनते हुए नवीन श्री जिनमन्दिर में श्रीसंघ गुजरांवाला का शुभ नाम मददगार तरीके लिखा जावे ऐसी हमारी इच्छा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस में केवल खुशी की बात है जिसकी जितनी इच्छा होवे उतना ही देवे। यह भी नहीं समझना कि महाराजने लिखा इस लिए देना। महाराज का फरज तो इतना ही है आप श्रीसंघ को सूचना देनी। बाद में श्रीसंघ अपना फरज शोच लेवे। हां इतना जरूर ख्याल रखनेका है। वेदी का नकशा तैयार किया गया है जिसकी लागत करीब पंद्रां सौ की होगी। अगर श्रीसंघ गुजरांवाला की तर्फसे इतनी रकम हो जावे तो वेदीमें मय रकमके या विना ही रकम के ऐसा लेख खुदवाया जा सकता है कि यह वेदी पंजाब देश गुजरांवाला शहर निवासी श्री ओसवाल जैन श्वेताम्बर संघ की तरफसे बनवाई गई है। इत्यादि। इस पत्रका जवाब बहुत ही जलदी मिलना चाहिये ताकि उनको इत्तिला दी जावे। विजयवल्लभसूरिका धर्मलाभ।

जैन कोलेज

२४६३-४२ (७९) श. सं. २

खंभात ६-१०-३७

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि आदिकी तरफसे श्री आत्मानन्द जैन कोलेज के सेक्रेटरी बाबू निरंजनदास वकील बी. ए. एलएल बी. अंबाला शहर योग्य धर्मलाभ। ३०-९-३७ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ।

२२-९-३७ की श्रीसंघ अंबाला शहर की मिटिंग हुई, जिस में कोलेज मेनेजिंग कमिटि के मेम्बरों का चुनाव हुआ, जिसकी फेहरिस्त २९-९-३७ की मय बम्बई के पत्र के मिली।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आगे को जो भी कुछ होगा उसकी सूचना देनेको लिखा सो ठीक है। हम भी सूचना मिलने पर जो कुछ सूचना देनी होगी देते रहा करेंगे। फुलचंदभाइ को तुमारे पत्र आनेसे पहिले ही लिख दिया गया है दुबारा फिर भी लिखा जायगा।

स्वर्गवासी गुरुदेव १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि आत्मारामजी महाराज की कृपासे यदि श्रीसंघ अंबाला का उत्साह बना रहेगा तो काम बहूत ही जल्दी बन जायगा। यदि एकदम पचास हजार की या इससे अधिक रकम देनेको कोई भाग्यवान तैयार होवे तो १९३८ जनवरी की आखरी तक में तो, उसका नाम कोलेज के बोर्ड में श्री गुरुदेव के नाम के साथ जोड दिया जायगा यह कमीटी में पास कर लेना। इसमें कोइ हरज नहीं।

इसके अलावा-पंद्रा हजार वाले का नाम कोलेज की लायब्रेरी और वीस हजार वाले का नाम कोलेज के बोर्डिंग हाउस पर देना पास कर लेना। जरूरत समझ कर इसमें फेरफार करना कमिटिको अखतियार होगा 卐

बम्बई वालोंको लिख कर उनकी राय मंगवा लेनी बाद अगली मिटिंग में पास कर लेना। हम भी अपना यह विचार बम्बई वालोंको लिख भेजेंगे। सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्कोलरशीप

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४२ (८०) श. सं. २

खंभात २९–१०–३७

विजयवल्लभसूरि, विजयललितसूरि आदिकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे कमिटि का रीपार्ट और श्री जिनप्रतिमा के स्थानका बदलना दोनों पत्र मिले थे।

श्री जिनप्रतिमा का स्थान परिवर्त्तन किया और जीरानिवासी लाला हंसराज पंडित एम. ए. को गुरुकुलने अपनाया यह दोनों ही काम ठीक हुए हैं।

विद्यार्थी पृथ्वीराज का वजीफा बंध कर दिया यह ठीक नहीं हैं वह फैल जरूर हुआ है परंतु उसने अभ्यास बराबर जारी रखा है फिरसे परीक्षा देनेके लिए तैयारी भी कर रहा है इस लिए एक दफा तो दया जरूर करनी चाहिये। हां यदि अबके फैल होवे तो बेशक आगेको बंध कर देवें परंतु इस वक्त तो उदारता करके मुआफ कर देना योग्य है।

आचार्य श्री विजयललितसूरी की आंखराजी हो गई है मोतीया निकलावा लिया है श्री गुरुदेव की कृपासे फिकर मिट गया है। सबको धर्मलाभ। ऊपर लिखी बात पर जरूर विचार करके वजीफा जारी कर देना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संदेश

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६३–४२ (८१) श. सं. २

गांवदैंडा (मारवाड) २५–३–१९३८

विजयवल्लभसूरी आदिकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन महासभा पंजाब योग्य धर्मलाभ। २७–३–३८ को शहर पाली और १–४–३८ को सौजत पहुंचना होगा। २१–३–३८ का चांदराइ मारवाड का लिखा पत्र लेकर श्री आत्मानन्द जैन कोलेज कमिटि का आया हुआ डेप्यूटेशन सुखशांतिसे पहुंच गया होगा और लिखे मुजिब काम हो गया होगा। चैत्र सुदि एकम शुक्रवार १–४–३८ को १००८ श्री बुद्धिविजयजी–बूटेरायजी महाराज की स्वर्गतिथि है। १००८ न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरी आत्मारामजी महाराज का जन्मदिन है तथा नगर बडौदा में मनाया गया जन्मशताब्दी महोत्सव का दिन है।

यह तो जगजाहिर बात है कि इन दोनों ही क्षत्रिय वीर योद्धा के प्रतापसे ही जैन पंजाब के जैनोंका उद्धार हूआ है इस लिए पञ्जाब के जैनोंका खास फरज है कि—इन दोनों ही उपकारी गुरु–शिष्यों के इस दिनको उत्सव के दिन तरीके मनावे। मतलब दुनियावी कामोंको छोड कर यथाशक्ति देवपूजा, तप, जप, दान, शियल, भावना, प्रभावना, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषधादि धर्म कार्यों से इस दिनको सफल करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस पत्रके पहुंचते ही महासभा के दफतरसे सारे ही पञ्जाब में धर्मलाभ के साथ हमारा यह संदेश पहुंचा दिया जाय।

इस पत्रका जवाब—

C/o Moolchand Parsmal Jain
Ratdia SOJAT (Marwar) देना

सबको धर्मलाभ।

गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६४–४२ (८२) श. सं. २

बरकाघाटा १०–४–३८

विजयवल्लभसूरि का धर्मलाभ।

श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला योग्य। ५–४–३८ का पत्र नं. १९७ मिला हाल मालुम हुआ। १२–४–३८ को नया शहर बीयावर को पहूंच कर १५–४–३८ को अजमेर की तर्फ विहार का इरादा है। १५–४–३८ को होनेवाली बैठकका एजण्डा मिला।

हमारा इरादा पंजाब में ही यह चौमासा होवे एसा हो रहा है और उद्यम भी वैसा ही होता है किन्तु ज्ञानिने क्या देखा है वह कहा नहीं जाता।

उमीद है यह पत्र बैठक होनेसे पहले ही पहूंच जायगा। बैठक में हमारा सन्देश सुनाया जावे और उस पर गौर किया जावे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुरुकुल के गवर्नर के लिए कई दफा लिखा गया है। हमारी दृष्टि इस वक्त बाबू दयालचंदजी ज्हौरी आगरा वालो की तर्फ जाती है। वह अनुभवी श्रद्धालु और गुरुमहाराज के परम भक्त हैं। गुरुकुल कमिटि विचार करके उनको लिखें कि महाराज की इच्छानुसार गुरुकुल कमिटि चाहती है-प्रार्थना करती है कि आप यहां पधार कर गुरुकुलको अपनावें और गुरुकुल की सेवा द्वारा समाज की सेवा का लाभ उठावें।

सेठ विट्ठलदासजी दानवीर के हाथ की लिखी हूई एक चिट्ठी पुराने कागजातमें से मिल आई है अगर बाबू अनंतरामजी हमको अजमेर में या जयपुर मिल सके तो बम्बई वाले फुलचंदभाई को बुलाकर रूबरू में सारी बात समझ ली जावे बादमें मुनासिब कारवाई करी जावे।

बुकपोष्ट दो मिले हैं। सकल श्रीसंघ गुजरांवाला-गुरुकुल कमिटि और गुरुकुल को धर्मलाभ।

पता—C/o Jatanmall Bhandari
BEAWAR (Rajputana)

गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६४-४३ (८३) अंबालासीटी ३-९-३८

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल (पंजाब) गुजरांवाला योग्य। धर्मलाभ के साथ मालुम होवे छमच्छरी से पहले और बाद में पत्र मिला हाल मालुम हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सबको छमच्छरी खामणां के साथ धर्मलाभ कह देना। गृहपति के लिए लिखा सो हमारा उनसे कोई परिचय नहीं। यदि हो सका तो आपके लिखे पते पर पत्र भेजकर पता मंगवाया जायगा। आप तब तक उनसे पत्रव्यवहार करके परस्पर क्या क्या शरते होनी चाहिये निर्णय कर लेवें।

श्री हस्तिनापुर पाठशाला का विद्यार्थी कैलासचंद्र गुरुकूल में रहना चाहता है लडका अच्छा होनहार प्रतीत होता है अगर गुरुकुल के किसी खास नियम में बाधा न आती हो तो जरूर लिख लेना।

कोई खास बात दरियाफत करने की हो कर लेना। गुरुकुल के पर्युषणाराधन के समाचार से आनंद आया।

द. वि० वल्लभसूरि। ३-९-३८

आशिर्वाद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४३ (८४) साढौरा २३-११-१९३९

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री उमेदपुर सुश्रावक (भावसाधु) श्रीयुत तिलकचन्दजी, धर्मलाभ। तुमारा २०-११-३८ का आनंदपत्र मिला। पढ कर बडा ही आनंद आया। तुमने बहुत ही अच्छा विचार किया। एसा बडा भारी आनंद और उत्सव न तो यहां साढौरा में और ना ही बडौत में होगा जैसा कि वहां उमेदपुर में हो रहा है। तुमारे भाग्यकी यही परीक्षा समझी जाती है कि अंबाला दर्शन करके जाते ही श्री केशरियाजी की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यात्रा का लाभ मिला, बाद में श्री सिद्धाचलजी, श्री गिरनारजी आदि महान् तीर्थोंकी यात्रा का लाभ मिला और अब संयम-यात्रा का लाभ लेनेको तैयार हुए हैं। तुमारा बडा ही पुण्य उदय हुआ है तुमको वार वार धन्यवाद है। दीक्षा लेकर अपने निर्मल ओसवाल वंशको, अपने उपकारी मातापिता के नामको, अपने नगर गुजरांवालाको और अपने देश पंजाबको तथा स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद् विजयानन्दसूरि-श्री आत्मारामजी महाराज के नामको खूब रोशन करो यही हमारा हार्दिक आशीर्वाद है।

प्रेरणा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६५-४३ (८५) रायकोट २३-१०-३९

विजयवल्लभसूरी आदिकी तर्फसे श्रीकेकडी। श्री श्वेताम्बर जैन स्याद्वाद महाविद्यालय योग्य धर्मलाभ। अहमदाबाद का निराश-जनक पत्र हमको मिला है। संभव है तुमको भी मिला होगा। हमने फिर भी पत्र लिखा है। मतलब एक जैन संस्थाको सार्व-जनिक संस्था बनाना सरासर अन्याय है इत्यादि। देखें क्या जवाब आता है।

तुमारा प्रथम का पत्र मिला था उसमें सार्वजनिकता हमको तो मालुम हुई नहीं। अस्तु तुमने निराश नहीं हो जाना।

सादडी का समाचार तुमने दिया था बिलकुल जूठा है। किसीने हंसी करी मालूम देती है खैर। फिर भी यदि हो सके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तो एक भाई सादडी और बाली जा आवे पत्र हमारा गया हुआ है फिर भी तुमारा पत्र मिलनेसे और पत्र भी लिख भेजेंगे कुछ न कुछ मदद जरूर ही मिलेगी। बम्बई का कुछ जवाब सेठ कांतिलाल से मिला या नहीं सबके साथ श्रीमान् पंडितजी को भी धर्मलाभ।

स्वागत

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४४ (८६) कामोकी २८–५–४०

वल्लभसूरि आदिकी तरफसे श्री अमदावाद आचार्य ललितसूरि आदि जोग वंदनानुवंदना सुखसाता। कामोकी नामसे तुम गुजरांवाला पहुंच गये समजलोंगे। यह पत्र तुमको संभव है ३१ को मिले उसी दिनका प्रवेश हैं। इशतहारादि तो पंजीके भेजे मिल गये होंगे। बस अगर खामी है तो तुमारी हाजरी की। इस वक्त पंजाब में अंबाला से गुजरांवाला तक में अपने अपने शहर और श्रीसंघ की हेसियत मुजब एकएकसे चढियाता स्वागत हुआ है। मुरीदकीमंडी में सारा दिन रौनक बनी रही गुजरांवाला से १५० लाहोर से ५९ भाइ भजन–मंडली सहित आये थे। मंडली वालोंने सारे बजार को धजा–पताका से सुसज्जीत किया था दो दरवाजे बनाये थे, भजन मंडली बेन्ड–बाजा से स्वागत किया। बहार के सब भाईओं की बेदाना कचोरि शरबत कच्ची लस्सी पानी आदि से खातर की। बाद में व्याख्यान हूआ विश्वविजयने भी सुनाया आमजन को खुश करने का मसाला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके पास खूब है मुसलमानों की कुरान की आयतें यूं बोलता है मानो हाफजजी बोलता होवे। मीयांकाजी मुल्लां सुनकर शिर हिलाते हैं। सीख्खो का खजाना भी काफी याद किया है सीख्ख सुनकर वाह गुरु कहने लग जाते हैं।

गुजरांवाला से टपाल लेकर गुरु दयाल आया जीसमें तुमारे तीन पत्र वदि २, २५–५–४० और वदि ४ के मिले हाल मालूम हूआ। जवाब फिर लिखा जायगा परंतु तुमारा हार्द समज लिया है आज की टपाल में अंबाला शहर की कोंग्रेस कमिटि के प्रमुख अब्दुल गफुरखां का पत्र मिला जीसमें पूरजोर से अंबाला शहर के जैनोंको गुजरांवाला आनेसे रोकने की विनती इस लिये की है कि ३१ को ही शराबको शहेर से बहार निकालने की रायां सरकार की तरफसे ली जावेगी। सो उनकी विनती को मंजूर करके तार और पत्र श्रीसंघ अंबालाको दे दिया कि गुजरांवाला मत आओ वहांका ही काम करो।

मंडीवालों की तरफसे अभिनन्दन–पत्र दिया गया। शामको पुनः विश्ववि० का भाषण हूआ। दोनों वक्त की रोटी लाला मकनलाल मुन्हाणी और एक पाटण निवासी श्रावक की तरफसे हलवा पूरी की हुइ। इन दोनों की मंडी में आडत की दुकान हैं। एक दिन ठहरने की मंडी की विनती थी परंतु गुजरांवाला का प्रोग्राम निश्चित हो जाने से मंजुर न हो सकी। वहांसे साधोकी आये वहां भी विश्वका व्याख्यान पं. जी की अध्यक्षता में हुआ। आज यहां कामोकी आये, मंडी हो जानेसे एक छोटासा नगर बन गया है। जीस विद्यार्थी के लिये तुमको इशारा किया था वह अमदावाद के सेठ लालभाइ दलपतभाइ आर्ट कोलेज में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फी दाखल होना चाहता है तो क्या यह बन सकता है तपास करके जवाब देना अगर फोरम मिले तो भेज देना इस वक्त वह हमारे साथ में है उसकी वंदना। श्रीसंघको धर्मलाभ।

जैन कोलेज

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४४ (८७) गुजरांवाला ५-६-४०

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री अंबाला शहर सुश्रावक लाला संतराम मंगतराम योग्य धर्मलाभ। लाला संतराम योग्य मालूम होवे लुधीयाना से लाला गुज्जरमल्ल और सोहनलाल तुमारे पास आये होंगे या आवेंगे उनकी बात पर जरूर गौर करना भूलना नहीं ताकिद हैं। बम्बइ से फुलचंदभाइ लिखते हैं कालेज की बाबत जो भी पत्रव्यवहार होवे एक के हाथसे बा कायदा कोलेज के दफतर से खास मुकरर किये आदमी की सही से होना ठीक है ताकि किसी अमर की गलतफेहमी न हो सके। वह लिखते हैं कि—सेक्रेटरी तार करता है अमुक २ चीजें भेजो और तार करो उस मुजिब किया गया। बाद में लाला मंगतरामजी सेठ कांतिलालको लिखते हैं इन चीजोंके भेजने की जरूरत न थी इत्यादी। इससे मालुम देता है जिसका दिल चाहा लिख दिया ऐसा होने में जवाबदारी किसकी ? सबसे पहले नीचे लिखी बातें जलदीसे जलदी हो जानी चाहिये।

१ ट्रस्टीयों की संख्या नियत करके पक्का ट्रस्टडीड बन जाना चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

२ युनिवर्सिटी कोलेज के नाम चढाने को जोर देती हो तो वैसे करने की तजवीज की जाय।

३ जो नकद बम्बई से आती है वह किस तरह किसके पास जमा की जाती है।

४ कोलेज को शुरू हो ए दो साल होने लगे हैं अभी तक रीपोर्ट तैयार एक साल का भी नहीं छपा सो छपना चाहिये।

५ कोलेज का हर काम रेग्यूलर होवे।

६ यदि बम्बई वालों को थोडा सा भी अव्यवस्थित मालुम होगा तो वह आगेको किसी काम में साथ न देंगे।

७ पत्रव्यवहार एक ही हाथसे और एक के ही साथ रहने से परस्पर दोनोंको पता रहता है कि अमुकने यह लिखा था और यह जवाब दिया गया।

८ हमको भी पत्र कोलेज के नामसे मिले और हमारा पत्र भी कोलेज के दफतर में जावे ऐसा प्रबंध हो सकता है या नहीं? इसका मतलब यह नहीं कि और कोई हमे कुछ भी न लिखे और हम उनको जवाब न देवें! सिर्फ सवाल जवाबदारी का है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ज्ञानप्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४४ (८८) १०-६-४०

गुजरांवाला (पंजाब)

C/o श्री आत्मानन्द जैन उपाश्रय

वल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री भोपालगढ सुश्रावक संघवी रतनलाल न्यायतीर्थ विशारद योग्य धर्मलाभ। ६-६-४० का पत्र आपका मिला हाल मालुम हूआ। हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी-इल्हाबाद की-परीक्षाओं में जैनदर्शन को स्थान मिलाने में आपका प्रयत्न सफल होना बडी खुशीकी बात है। आपके लिखे मुजिब आपका पत्र आद्योपान्त पढकर बडा ही आनंद आया। यदि कुछ वक्तव्य होगा तो यहां के श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब के कार्यवाहकों के साथ वार्त्तालाप करके आपको सूचित किया जायगा। फिलहाल आपके लिखे मुजिब श्री तत्त्वार्थसूत्रजी की तीन प्रतियां वहां भेजने के लिए और दो भोपालगढ के विद्यालय के लिए यहां के गुरुकुल की तर्फसे भेजी जायँगी पहुचने पर पहूंच दे देनी।

आपके अर्थात् भोपालगढ के श्री जैनरत्न विद्यालय के लिए कितनेक पुस्तक पहुंचाने का विचार है इस लिए इस पत्रके पहुंचने पर आपके निकट जो भी स्टेशन होवे उसका पता लिख भेजें ताकि सब पुस्तकें रेल्वे पारसल द्वारा पहुंचाइ जावे। श्री तत्त्वार्थसूत्रजी की हिन्दी प्रतियां भी उसी पारसल में रवाना हो जायगी। सबको धर्मलाभ कहना। धर्मध्यान में उद्यम रखना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४४ (८९) गुजरांवाला १२-६-४०

वल्लभसूरि आदीकी तर्फसे श्री अंबाला शहर सुश्रावक लाला संतराम मंगतराम योग्य धर्मलाभ। १० का पत्र कल ११ को कुछ देरीसे मिला उसी वक्त जवाब लिखा नहीं गया डाक निकल गई। यदि जरूरी काम न होता तो तारसे ही क्यों बुलाया जाता। फिर भी तुम लिखते हो यदि कोई जरूरी काम हो तो तार दे दिजियेगा मैं रातको हाजर हो जाऊंगा। इसका मतलब तो यही समझा जाता है कि तुमने हमारे पहले तार को जरूरी नहीं समझा। तुमारा फरज तो यह था। तुम लिखते कि एक जरूरी काम में मैं रुका हुआ हूं उससे फारिग होकर एक दो दिन में हाजर हो जाऊंगा। खैर-अब तुमारी मरजी में आवे तब आना। जितनी देरी होगी पीछेसे पछताना होगा। बात जरूरी कालेज संबंधी है जो कि बहूत ही जरूरी है और वह बम्बई के वारे में है।

कालेज के प्रीन्सीपल साहिबको धर्मलाभ के साथ कह देना आपका तार मिल गया है आपने अब के सालकी परीक्षा का परिणाम बहुत अच्छा आया लिखा बडी खुशी की बात है। कोलेज के सब शिक्षकों की इसमें इज्जत है सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सच्चा स्वामीवच्छल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६४-४५ (९०) २४-६-४०

गुजरांवाला (पंजाब)

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री वरकाणा। श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय के हेडमास्तर श्रीयुत विजयचंदजी तथा प्रेसीडन्ट साहिब और सेक्रेटरी साहिब श्रीयुत मूलचंदजी तथा श्रीयुत निहालचन्दजी आदि योग्य धर्मलाभ। इस पत्रके साथ एक पत्र हमारे नाम पर आया भेजा जाता है। उमीद है आप वाकफियत रखते होंगे इस लिए इस पत्रके मुताबिक आपको जरूर दया आयगी। हमारे दिलमें दया आनेसे ही यह पत्र आपको लिखा गया है। सत्य बात तो यही है कि ऐसे ऐसे निराधार कुटुंब को योग्य मदद पहुंचानी आपका परम कर्त्तव्य है इसीका नाम सच्चा स्वामी वच्छल है। सबको धर्मलाभ।

विद्यार्थी को मदद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४५ (९१) ६-७-४०

गुजरांवाला (पंजाब)

C/o श्री आत्मानन्द जैन उपाश्रय

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री बम्बई सुश्रावक कपूरचंद तेजमालजी योग्य धर्मलाभ। २-७-१९४० का तुमारा पत्र मिला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हाल मालुम हुआ, यहां श्री देवगुरुधर्म के प्रतापसे सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना। खीमराजजी तो श्रीयुत तेजमालजी के भाई हमको याद है बाबूलाल हमारी पिछान में नहीं, इनको भी धर्मलाभ कहना। तुमने सेवाके लिए लिखा सो यदि तुमसे हो सके तो एक जैन विद्यार्थी बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में जैन फिलोसफी का अभ्यास करता है उसको मदद की जरूरत है। कमसे कम पंदरां मासिक की मदद समझ लेनी। तुम जितनी दे सको दे सकते हो। तुमारा जवाब आने पर उसका पता दिया जायगा।

खुडाला के श्रीसंघ में संप हो गया बडी खुशीकी बात है। खुडाला वाला पृथ्वीराज यहां आया था उसने बात करी थी कि समाधान करनेका विचार हो रहा है सो हो गया बडा ही अच्छा हुआ। संप में ही सुख है। हमको बम्बई की गोडवाडी मारवाडी सरदारों की भाद्रों सुदि पंचमी की नोंकारसी याद आती है। अगर हमारे सामने जो बात हुई थी उसमें गरबड न होती तो कैसा आनंद आता ?

विद्यार्थी को मदद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६६–४५ (९२) ११–७–४०

गुजरांवाला (पंजाब)

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री बम्बई। सुश्रावक शा. खीमचन्दजी, कपूरचन्द, बाबू आदि जोग धर्मलाभ। ९–७–४०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का पत्र मिला। विद्यार्थी को माहवारी दशकी मदद देनेकी तुमने इच्छा दिखलाई सो ठीक है। यह विद्यार्थी मारवाड का नहीं है, गुजरात मांडल गामका रहीस है यहां गुजरांवाला श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल का अभ्यास करके बनारस में अभ्यास कर रहा है उसका पता—

जैन विद्यार्थी शान्तिलाल गुजराती
न्यूइ–२ हिन्दू विश्वविद्यालय,
बनारस

सबको सबकी तरफसे धर्मलाभ।

प्रतिमा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४५ (९३) गुजरांवाला१२–७–४०

विजयवल्लभसूरि आदिकी तरफसे श्री अंबाला सीटी। सुश्रावक लाला बनारसीदास विजयकुमार आदि जोग धर्मलाभ। कार्ड १०–७–४० का मिला हाल मालुम हुआ। श्री गुरुदेवजी की प्रतिमा विनाही खोले उपाश्रय या श्री मंदिरजी में ले आनी। बादमें अगर खोलकर देख लेनी हो तो देख लेनी ताकि कोई कसर रही हो तो पता लग जावे। वेदीमें प्रतिष्ठा कराये बाद पधराई जायगी। पूजा सेवा भी बादमें ही होगी। अभी तो बडी कोठी श्री मंदिरजी में किसी एक पासे सुरक्षित रख देनी? मुहूर्त वगैरह प्रतिष्ठा के समय देखा जायगा अगर ऐसी सुरक्षित जागा न होवे तो उपाश्रय में जहां ठीक हो रख लेवें। और श्रीसंघ की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सलाह वेदीमें ही रखने की होवे तो फिलहाल एक तरफ किनारे पर रख लेनी, मध्यमें गादी पर नहीं, और कोई केसर चंदन वगैरह कुछ भी न चढावे। दूरसे देखा करे। यदि कोठी में चौतडा बनवाकर रखनी चाहों तो भी कोई हरज नहीं परंतु कोई हाथ न लगावे या कोई चीज चढावे नहीं। कारीगर यहां आवे तो वहां जो तीन प्रतिमा यहां के बनने वाले बाईयों के श्री जिनमंदिर में पधराने के लिए पधारी हैं उनका माप ले आवें ताकि वेदीका माप ठीकसर हो जावे। तुमारा साथ आना ठीक होगा। बडौदासे पहुंच आ गई होगी सबको धर्मलाभ।

विद्यालय को मदद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४५ (९४) गुजरांवाला ३१-७-४०

विजयवल्लभसूरि की तरफसे श्री केकडी श्री श्वेताम्बर जैन स्याद्वाद महाविद्यालय योग्य धर्मलाभ। २७–७–४० का पत्र मिला समाचार मालुम हुआ। एक अरजी इंगलीश में लिखाकर अहमदाद सेठ आनंदजी कल्याणजी की पेढी के नाम मारफत आचार्य श्री विजयललितसूरि के भेज देनी। तुमारा लिखा हिन्दी पत्र वह ठीक पढ नहीं सकते और ललितसूरि को अच्छे शब्दों में हिन्दी या संस्कृत में लिखना कि महाराजजी की आज्ञानुसार यह पत्र आपकी सेवा में भेजा है। आप कृपा करके इस वक्त यह काम करा देवें इत्यादि। अरजी में जो रकम तुमने प्रथम हमको लिखी थी उसी की मांगणी करनी कि इस वक्त हमको इतनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रकम की जरूरत है पंडितजी का पगार चढा हुआ है आप जरूर मेहरबानी करें इत्यादि।

उमीद है तुमारी अरजी स्वीकार हो जायगी क्यों कि आचार्य श्री विजयललितसूरिजीने पक्का कर लिया है। केवल तुमारी अरजी जाने की देरी है। यहां से हमने लिख दिया है कि केकडी की अरजी तुमारी मारफत आवेगी।

आगेके लिए यहां आने पर योग्य प्रबंध भी विचार लिया जायगा।

प्रेरणा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४५ (९५) गुजरांवाला २–८–४०

धर्मलाभ।

रजिष्टर्ड पत्र मिला हाल मालुम हुआ। ३१–७–४० को एक पत्र तुमको लिखा है मिला होगा और उसमें लिखे मुजिब अहमदाबाद पत्र लिख दिया होगा उमीद है काम ठीक हो जायगा। एकदम इतने निराश और निरुत्साह न हो जाईये। हमेशां अच्छे काम में संकट तो जरूर ही आता है। परंतु सहनशील होकर होंसला नहीं हारना चाहिये। यदि पर्युषणा यहां कर सकों तो उस वक्त यहां आजाना। और पर्युषणा अपने घर ही करना हो तो पहले ही यहां पहुंच जाना उमीद है एक वर्षका नहीं तो छे महिने का तो काम जरूर हो जायगा। बाकी के लिए भी विचार किया जायगा। तुमारा दूसरा पत्र भी मिला पंडितजी को धर्म-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लाभ कहना और मौक्या आने पर यह भी कह देवें कि जब आपकी इतनी बडी उदारता है और इतना परिश्रम आप उठाते हैं तो आपको हम किसी तरह मी अन्यत्र तो कबी भी नहीं जाने देवेंगे।

प्रतिमा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४५ (९६) २८-८-४०

गुजरांवाला (पंजाब)

C/o, बाजार जैन मंदिर, श्री आत्मानंद जैन उपाश्रय

विजयवल्लबसूरि आदीकी तरफसे श्री जयपुर। नानगराम हीरालाल मूर्तिकार योग्य धर्मलाभ। पत्र तुमारा २६-८-४० का मिला। समाचार मालुम हुआ।

तुमने २३ ईंचके पीत्तल के बिंबका न्यौछावर ५ मण २५ सेर का ३=) की सेर के हिसाबसे ६९५) लिखा है। इसमेंसे कुछ कमती हो सकता हैं या नहीं। यदि हो सकता है तो कितना। बनवाने वालेका भाव ५०१) पांचसौ एक तकका है। अगर इतनी रकम में बना देते हों तो तुमारा पत्र आनेसे ओर्डर भेज दिया जायगा।

पाषाण के २१ ईंचके ५०) तुमने लिखे है परंतु ८१ रुपये में २१ ईंचके दो बिंब बना दो तो इसीका भी ओर्डर भेजा जावे।

इन्द्र नग २ खडे पांच पांच फूट के साडे पांचसौ लिखे हैं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यदि पांच के बदले साढेचार फूटके दोनों ही इन्द्र ४०१) चारसो एक में तैयार हो सकते हो तो इनका भी ओर्डर भेज दिया जावे।

जवाब जलदी आयगा तो पर्युषणामें निश्चय हो जाने पर तुरत तुमको ओर्डर भेजवा दिया जायगा और बाकायदा लिखा पढी करवाई जायगी। रेलवे किराये के सिवा बारदान-पेकींग वगैरह का खर्च तुमारे शिर होगा। रस्ते की जिमेवारी भी तुमारे शिर होगी।

प्रेरणा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४५ (९७) गुजरांवाला ३१-८-४०

विजयवल्लभसूरि आदीकी तरफसे श्री केकडी श्री श्वेताम्बर जैन स्याद्वद महाविद्यालय योग्य धर्मलाभ। सेक्रेटरी का पत्र मिला हाल मालुम हूआ। तार हमारा मिल गया होगा। श्रेयांसिबहु विघ्नानि हमेशां होता रहता है परंतु काम करने वालोंको इस तरह हताश नहीं होना चाहिये। हमतो चाहते हैं जो जैन विद्यार्थी मध्यमा कर चुके हैं और आगेको छोडनेको तैयार हुए हो या छोड दिया हो उन्हे भी उत्साहित करना चाहिये हम तो चाहते हैं कि विद्यालय हमेशां के लिए चलता रहें और फिलहाल पांच सालके लिए प्रबंध शोचा जावे। हम इसी प्रबंध में लगे हुए हैं और हमे पूरी उमीद है पांच सालका तो प्रबंध हो ही जायगा बाद पांच सालके क्या होगा सो जीते रहेंगे देख लेवेंगे। पांच साल के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिए पंडितजी का प्रबंध हमारे जिम्मे समज लेना। बाकी का प्रबंध तुमारे श्रीसंघ के जिम्मे समझ लेना। सकल श्रीसंघको धर्मलाभ। श्रीमान् पंडितजी मूलचन्द्र शास्त्रीजीको धर्मलाभ के साथ कह देना। आप पांच साल के लिए हमारे हो चुके हम आपको अपना ही समझते हैं यदि किसी कारणवश वहां से आपका छूटना होगा तो यहां के श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल में आपको बुला लिया जायगा। पर्यूषणा बाद बाकी खुलासा लिखा जायगा।

प्रेरणा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४५ (९८) गुजरांवाला ११–९–४०

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री पटियाला सुश्रावक लाला हजारीमल्ल भोजदेव सपरिवार योग्य धर्मलाभ। पत्र तुमारा २६ भाद्रों का लिखा मिला हाल मालुम हुआ। तुमने स्थानकवासी साधु पं. श्री मदनलालजी जिनका चौमासा पटियाला में है उनके रिश्तेदार विद्यार्थी लक्ष्मीचंद्र के लिए वजीफा–सहायताका लिखा सो वह कहां अभ्यास करना चाहते है और मासिक कितनी मदद की जरूरत है इस बातका तुमारा जवाब आने पर योग्य प्रबंध शोचा जायगा। तुमने श्रीयुत मदनलालजी महाराजको कह देना कि आप उस विद्यार्थी को होंसला देवें कि तेरी इच्छा सफल हो जायगी। २७ भाद्रों १९९७।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रेरणा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७–४५ (९९) गुजरांवाला ११–११–४०

वल्लभसूरि की तर्फसे श्री जम्मू। सुश्रावक श्रीमान फुलचंदजी साहब मोगाजी रेवन्यू कमीश्नर स्टेट जम्मू योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे श्री देवगुरु धर्मके पसाय सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना घर में श्राविकाको और बालबच्चों को धर्मलाभ कहना।

यहां के मुखियाभाई आपकी सेवा में श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुलके लिए प्रार्थना करनेको आये हैं, इनकी प्रार्थना कुल पंजाब के श्रीसंघ की प्रार्थना समझ कर स्वीकारने की उदारता करनी आपका परम कर्त्तव्य है।

द. वल्लभसूरि का धर्मलाभ।

साधारण खाता

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४५ (१००) १८–९–४०

श्री आत्मानंद जैन उपाश्रय
बाजार जैन मंदिर, गुजरांवाला

श्रीमद् विजयवल्लभसूरिजी की ओरसे।

श्रीसंघ बन्नू। योग्य धर्मलाभ के साथ मालूम हो कि हमारे पास एक पत्र बन्नूसे नानकचन्द का और एक पत्र कोहाट से हेमराज का मिला। जिस से मालुम होता है कि आप लोगों में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन पूजारी के बारे में कुछ झगडा खडा हो गया है, इस प्रकार झगडे होने उचित नहीं हैं, आपस की बातें सुलझाने का कोई रास्ता निकाल लें।

(१) जैसा हेमराज के पत्र में लिखा है कि कुछ साल पहिले १०–१० दिनकी वारी से पूजा का काम करते थे यदि उसी प्रकार काम चला सकें और वारियां बना ले तो सबसे अच्छी बात है, सबको पूजा करने का मौका भी मिलेगा और खर्च भी नहीं होगा।

(२) यदि पुजारी रखने की जरूरत मालूम होती है तो आशातना वगैरह का ख्याल रखते हुए ब्राह्मण पुजारी की बनिस्बत जैन पुजारी रखना बेहतर है। बिरादरी में किसीका भी कोई एतराज न हो इस लिए जैन पुजारी को साधारण खातासे तनखा देना शुरू कर दें।

यदि आपके वहां साधारण खाता नहीं है तो साधारण खाता चालू कर दें, साधारण का पैसा जैन पुजारी को दिये जाने पर किसी को एतराज नहीं हो सकता, साधारण का पैसा मन्दिरजी के काम में भी खर्च किया जा सकता है। साधारण खाता के लिये मन्दिरजी में एक पेटी भी रख सकते हैं और उस पर यह लिख सकते हैं कि इसकी आमदानी साधारण खाता में जायेगी।

(३) इसके सिवाय तीसरा रास्ता यह है कि बिरादरी एक चिट्ठा बना ले जिस में १५ आदमी ऐसे तैय्यार हो जाये जो हर महीने एक एक रुपीया दिया करें, इस तरहसे अगर १५) रुपैये महीने का प्रबन्ध न हो सके तो जितनी रकम कम होती हो लिखें, उसका प्रबन्ध सोचा जाये। आपस में मेल-मिलाप-सम्प रखें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धन्यवाद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६–४५ (१०१) गुजरांवाला ५–१०–४०

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री दील्ली। सुश्रावक लाला हजारीमल्ल आदि सकल श्री जैन श्वेताम्बर संघ योग्य धर्मलाभ।

२–१०–४० का आपका पत्र मिला पढकर बहुत ही आनंद आया।

आपके प्रथम के पत्र मुजिब बाबू दौलतराम वकील होशियारपुर को तार और पत्रद्वारा यहां से ताकीद करने पर वह आपकी सेवामें हाजर हूए और तीर्थ श्री कांगडा की बाबत बातचित हुई आपके इस पत्रसे पता चला है, उन्होंने अभी तक हमको कुछ लिखा नहीं है।

वदि १३ रविवार २९–९–४० को रथयात्रा बडी धूमधामसे निकली और किलेके पास दिगम्बरी श्री जिनमन्दिरजी में स्नात्र पढाया बडी खुशीकी बात है। यह दिगम्बर भाईयोंके हृदय की उदारता है कि उन्होंने निजमन्दिर में श्वेताम्बर जिन प्रतिमाको स्थान दिया, वहां श्वेताम्बर विधिसे स्नातपूजा होने पाई इतना ही नहीं उन्होंने बराबर रथयात्रा और पूजन में साथ दिया। यदि इसी तरह सर्वत्र आपस में साथ दिया जाय तो तीर्थोंके झगडों में लाखों रुपैये दोनोंके बच सकते हैं हिन्दु, सीख, जैन सब ही धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने साथ दिया है।

जिस पेपर में यह सारा समाचार छपा होवे वह भेज देना सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ज्योतिष

२४६६-४५ (१०२) १९-१०-४०

गुजरांवाला (पंजाब)

बाजार जैन मंदिर, श्री आत्मानन्द जैन उपाश्रय

विजयवल्लभसूरि आदीकी तरफसे श्री सादडी सुश्रावक लालचन्दजी आदि तथा सोम्पुरा-जवानमल्ल टेकचंदजी योग्य धर्मलाभ। पत्र तुमारा मिला। नाडोलसे श्रीयुत प्रतापरत्नसागर आये और तुमारा व्हेम निकल गया वह खुशीकी बात है।

तुमने मुहूर्त्त के लिए लिखा सो चार दिन तक ज्योतिष के जानकारों के साथ विचार करने में इस निश्चय पिर आये हैं कि-खातमुहुर्त्त में वृषचक्र और शिलान्यास में कूर्मचक्र जरूर आना चाहिये, सो तुमारे लिखे कार्त्तिक सुदि पंचमी को वृषचक्र आता नहीं है और मगसिर वदि दूजको रविवार है नक्षत्र मृगशिर है राजयोग बनता है कूर्मचक्र भी आता है इस लिए शिलान्यास इस दिन होना ठीक है। और खात एक दिन पहले, ३ घडी ५० पल के बाद दूज लग जाती है वृषचक्र आता है तिथि वार नक्षत्र सब ठीक है। समय दोनों दिनों में धनलग्न मिथुनका नवांशा समझ लेना।

हमारी समझ में आया वैसा लिखा है फिर भी श्रीयुत प्रतापरत्नसागरजी से पूछ लेना और समय भी उनसे निकलवा लेना। हमारी तर्फसे उनको सुखसाता पूछनी। श्रीसंघ को धर्मलाभ कहना। कार्तक चौमासा तेरसां दो मान कर गुरुवार को और कार्तक पूनम श्री सिद्धाचलजी की यात्रा शुक्रवार को होगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नोट—समय रविवार को थोडा होनेसे धनलग्न के मिथुन नवांश का आना संभव नहीं इस लिए शिलान्यास वृश्चिक के छठे धन नवांश में विचार लेना।

प्रेरणा

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६६-४५ (१०३) गुजरांवाला २४-१०-४०

वल्लभसूरि की तर्फसे श्री उमेदपुर लोकमान्य श्रीयुत ढढाजी योग्य धर्मलाभ। २२-१०-४० का पत्र मिला हाल मालुम हुआ हमको क्या पता जैसा उनने सुनाया दिल में आया आपको इशारा कर दिया आपने सत्यसे वाकिफ किया हमने समझ लिया उसने अपना विश्वास खो दिया।

भाई दूज पर तो आपका आना मुश्किल मालुम देता है परंतु गुरुकुल की बिल्डींग का मुहूर्त्त मगसिर वदि दूज आइतवार १७ नवंबर का निकला है उस मौक्ये पर योगिराज का पत्र और आशीर्वाद साथ में ले आओ तो अच्छा है ११ नवंबर को चल कर १३ नवंबर को यहा पहुंचना होवे १४ नवंबर गुरुवार को कार्त्तिक चौमासी प्रतिक्रमण हमारे साथ ही होवे पूनम शुक्रवार १५ को श्री सिद्धाचलजी के पट्ट की यात्रा होगी संभव है सेठ कान्तिलाल १६ को आ जावे उनका स्वागत भी कर सकेंगे। यहां के श्रीसंघ की इच्छा है उन भाग्यवान के हाथसे मुहूर्त्त कराया जावे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपके पत्रसे पता चला कि आप उमेदपुर पहुंच गये हैं इस लिए इस पत्रसे पहले आपको अहमदाबाद लिखा गया है, सर्व बालाश्रमको, यात्रालुओंको और नगरवासियोंको धर्मलाभ। श्राविकाको धर्मलाभ।

संगठ्ठन

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६७–४५ (१०४) गुजरांवाला २२–११–४०

वल्लभसूरि आदिकी तरफसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुन्दरदासजी योग्य धर्मलाभ। तुम नजीक में होते हुए भी श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल के मुहुर्त पर नहीं आये। श्री स्वर्गवासी गुरुदेव की कृपासे काम बहुत ही अच्छा हो गया है।

२३ को विहार करना था परंतु शहर के अन्य हिन्दु, मुस्लीम सीख जनता का आग्रह होनेसे नवंबर के बाद दिसंबर में विहार होगा। सर्व श्रीसंघ को धर्मलाभ।

सुना गया है स्थानकवासी की तर्फसे श्वेताम्बर दिगम्बर दोनों को बुलावा नहीं गया क्या बात है तुमारे शहर वाले तो सारे पंजाब का संगठन चाहते थे। हमारे प्रवेश में तो तीनों ही एकठे थे बल्कि लाला पन्नालाल सेक्रेटरी स्थानकवासी सभाने बडा हर्ष जाहिर किया था तुमको मालुम ही है। विद्यार्थी कृष्णकान्त को दिसंबरसे डबल देना। छै महिने तक। बाद में फिर देखा जायगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विद्यार्थी

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४५ (१०५) गुजरांवाला २३-११-४०

विजयवल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री जयपुर सुश्रावक शाह उदयमल्लजी सपरिवार योग्य धर्मलाभ।

तुमारे यहांसे गये बाद कोई समाचार मिला नहीं है बलकि हमने एक पत्र भेजा था उसकी भी पहुंच मिली नहीं है।

तुमने एक साल वीस माहवार विद्यार्थी को देना कहा था सो फिलहाल दश माहवार एक साल एक विद्यार्थी के लिए लाहौर लाला सुंदरदास C/o, लाला मोतीलाल बनारसीदास सैदमीठा बाजार के पते पर भेजना लिखा था इसका जवाब वापसी डाक भेजना। गुरुकुलका मुहुर्त आनन्द से हो गया है।

गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४५ (१०६) ६-२-१९४१

खानगाडोगरां

वल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ। पत्र नं. १३७—३-२-१६४१ का और नं. १४९—५-२-१९४१ का मिला।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१ गुरुकुल जन्मोत्सव आनन्द से हुआ, परीक्षार्थ गये हुए विद्यार्थीओंका भी पहुंच जाना हुआ खुशीकी बात है।

२ आचार्य विजयललितसूरिनी को शुभ समाचार देना और उनका खुशखबरी का जवाब आना दोनों ही ठीक है।

३ गुजराती में छपवाने का प्रबंध हो जायगा पहले सालका रीपोर्ट संक्षिप्त हो जावें।

४ जवाहिरलाल मद्रास गया है आने पर निर्णय हो जायगा।

५ ८-२-४१ को होनेवाली कार्यकारिणी समिति का एजेण्डा मिला। उसका नं. ३ प्रिन्सिपल पद के लिए आये हुए प्रार्थना पत्रका निरीक्षण भले कर लिया जावे परंतु कायम हमको पता दिये विना न किया जाय।

६ सुना गया था कि गुरुकुल की भजन मण्डली रावलपिण्डि गई है परंतु इस बातका तुमारे किसी भी पत्र में जिकर नहीं पाया गया।

७ गुरुकुल के नीर्वाह फण्ड का विचार समिति में जरूर होना चाहिये। हमारी रायमें दूध, भोजन, नास्ता, एक टंक या दो टंक के रोजना खर्चकी रकम कायम कर ली जावे और ऐसे सालभर में ३६० या तारीखों के हिसाब से ३६६ बाई भाई मददगार बनाये जावे। जिन्होंने हर साल ६० देना स्वीकार किया है ता जिंदगी। या जिन्होंने एक हजार की पक्की वारी दे दी है उनके सिवाय अन्य भाई बाई से यह प्रार्थना की जावे। यह समिति में पास हो जावे। बाद में जाहिर किया जावे तो उमीद है कुछ न कुछ मदद का जरूर तरीका जारी हो जावेगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७–४५ (१०७) खानगाडोगरां २१–२–४१

विजयवल्लभसूरि आदीकी तर्फसे श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला योग्य धर्मलाभ।

२०–२–४१ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ, यहां श्री देव-गुरु धर्मके प्रतापसे सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ।

१ गुरुकुल निर्वाह फंड के लिए जो स्कीम यहां समझी समझाई गई है बहुत ही ठीक है।

२ मार्च की शुरूआतसे इसको जारी करनी चाहिये। यहां तो इसकी शुरूआत मार्च की पहली तारीख की बोलीसे हो चुकी है, सिर्फ कमीटी के पास करने की देरी है। पास होने वा समाचार मिलते ही यहां के भाई अपनी रकम गुरुकुलको पहुंचा देंगे।

३ तुमारे लिखने में एक बात रह गई है। जो भाग्यवान दूध, नास्ता दोनों समय का भोजन सब देनेको उत्साहित होवे वह एक दिनके स्वामीवात्सल्य के लिए ३०) तीस देवें।

आप खुश होंगे यहां के श्री जिनमंदिरजी के प्रतिष्ठा महोत्सव के समय यह स्कीम यहां शोची गई इसकी खुशाली में यहां के श्री संघने अपनी उदारता का परिचय देते हुए यहां से ही इस स्कीमका सादर स्वीकार किया है यदि इसी तरह पंजाब के सर्व नगरों वाले अपनी उदारता के साथ गुरुभक्ति का परि-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चय देवेंगे तो स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरिश्वरजी महाराज के प्रतापसे गुरुकुल मालोमाल हो जायगा।

यह स्कीम छोटे बडे सबको अनुकूल होने वालो है देने वाले दाताकी उदारता और भावना होवे।

गुरुकुल स्थायी फंड की वृद्धिकी योजना भी ठीक है परंतु इस में पंजाब में हर सालका दौरा लिखा है नहीं जचता। यह तो पंजाब सिवाय के लिए ही ठीक है पंजाब तो निर्वाह में ही रहैं। गुरुकुल भवन कमीटी का विचार भी ठीक है।

गुरुकुल के लिए प्रीन्सीपल जहां तक हो सके सेवाभावी एकसौ के बदले ७५ में खुश होकर ता जिंदगी सेवा करने वाले किसी सुयोग्य गुरुकुल के विद्यार्थीको गुरुकुल की तरफसे तैयार कराना योग्य है। २५-२-४१

वल्लभसूरिका धर्मलाभ।

ज्ञानप्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४५ (१०८) सनखतरा १३-५-४१

वल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री दील्ली सुश्रावक लाला पन्नालाल योग्य धर्मलाभ। १-५-४१ का लिखा तुमारा पत्र यहां आने पर मिला। २-५-४१ को जम्मुसे विहार करके १०-५-४१ को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हम यहां पहुंचे। तुमारे पत्रका सार समझ कर हमने बम्बई बोर्डको लिख दिया है कि तुमने पांचसो श्री हीरसूरि चरित को दिया है इसी तरह थोडी सी और उदारता करके अढाईसों और देने स्वीकार लेवें।

यदि वह स्वीकार कर लेवें तो तुमको इतना काम करना होगा।

१ पांचसो किताबें बोर्डको देनी होगी।

२ तुम जितनी भी किताबे छपवावें सब पर स्वर्गवासी गुरुदेवका श्लोक देना होगा।

३ सब किताबों के टाईटल पेज के शिरे पर "श्री आत्मानन्द जन्म शताब्दी ग्रन्थमाला पुष्प ६" ऐसा छपवाना होगा।

भानुचन्द्र चरित के पते का पता न होने से बम्बई से पता मंगवाया है।

तुमारी आवश्यकीय पुस्तकों का लीष्ट लिखों। तुमने पहले जो नाम लिखे थे उसका तुमको जवाब दिया गया है। तुम जो पुस्तक चाहते हों कहां छपी है और कहां मिलती है पता लिख भेजना हम पता निकलवा कर यदि मिल सकेगी मंगवा कर तुमको पहुंचा देवेंगे।

इसका जवाब यहां ही देना—

Sankhatra, Dist Sialkot (Punjab)

१९-५-४१ सोमवारको विहार का भाव है।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

दीक्षा और ज्ञान-प्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४५ (१०९) २७-५-४१

नारोवाल, जिला सीआलकोट

वल्लभसूरि की तर्फसे श्री कलकत्ता पं. प्र. यति सूर्यमल्लजी योग्य सुखसाता के साथ मालूम होवे पत्र आपका ९-५-४१ का २४-५-४१ को गुरुकुल के पत्र में आया-मिला। समाचार मालुम हुए, आपने पन्नालाल की बाबत और दीक्षा की बाबत लिखा सो हम तो प्रथमसे ही ऐसी दीक्षाको पसंद नहीं करते। अहमदाबाद और बडौदा के मुनिसम्मेलन में प्रस्ताव भी हो चुके हैं तो भी अगर कोई ऐसा अनुचित काम करें तो उनको रोकने के लिए केवल एक ही श्रीसंघ सत्ता बलवती है परंतु दुर्दैव्य-वशात श्रीसंघ में कुसंप का इस वक्त जोर हो रहा है इस वास्ते अपने आपको ही संभाल लेना योग्य समझा जाता है।

आपकी रत्नसार संबंधी प्रार्थना के स्वीकार में मैं असमर्थ हुं इति। चतुर्मास का अभी निर्णय नहीं हुआ। धर्मस्नेह बनाये रखना इति।

सहनशीलता

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४६ (११०) नारोवाल ११-६-४१

वल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुन्दर-लाल-शान्तिलाल आदि योग्य धर्मलाभ। ९-६-४१ का पत्र

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१०-६-४१ को मिला हाल मालुम हुआ। शास्त्री पुरुषोत्तम बाबत पत्र पाटण ९-६-४१ को लिखा है जो कार्य होना होता है इस तरह निमित्त मिल जाता है। इसी तरह तुमारे पत्रके आनेसे पहले ही हमने पट्टीका ख्याल करके तैयारी कर ली है बलकि समाना वाले सरधाराम के हाथ पुस्तक की एक गठडी अमृतसर कल भेज दी है आज सुबह विहार करना था क्षेत्र फरसना नहीं मालुम ज्ञानिने क्या देखा है। रातको लाला कर्मचन्दजीका समाचार आया। मैं सुबह हाजर होता हुं इस लिए विहार नहीं हुआ। अब उनके आने का टाईम हो रहा है आने बाद निर्णय जो होगा सो सही। श्री गुरुदेव स्वर्गवासी न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्री श्री श्रीमद्विजयानन्दसूरि आत्मारामजी महाराजके प्रतापसे जो कुछ होगा अच्छा ही होगा। कष्ट सहनेसे ही कष्ट नाश होता है. सतियोंको सुखसाता। श्रीसंघको धर्मलाभ। बाकी खुलासा कल दिया जायगा।

संप

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४६ (१११) ११-८-१९४१

सीयालकोट सीटी, कनकमंडी श्री आत्मानन्द जैन भुवन

वल्लभसूरि आदिकी तर्फसे श्री मालेरकोटला सुश्रावक लाला तारचन्द-किशोरीलाल आदि सकल श्रीसंघ योग्य धर्मलाभ। आपका और दूसरी तर्फका पत्र मिला। मतलब यह समझा गया कि ध्वजा निकाली जानी जरूर है परंतु निकलने के लिए दोनों में से एक भी हिम्मतसे अपने शिर लेनेको तैयार नहीं है। तुमारा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपसका कुसंप तो दो दिन आगे पीछे मिट जायगा परंतु धजा रुकी हुई फिर जलदी निकलनी मुश्किल है। तुमारे आपसी रंजका लाभ स्थानकवासी भाईयोंको मिल जायगा। वह आगे ही धजाका निकलना पसंद करते नहीं तुम आपसी कुसंप हटाते नहीं और धजा निकालने को तैयार नहीं इस लिए हम अपनी तर्फसे यह आखरी सूचना देते हैं कि स्वर्गवासी श्री गुरुदेव के नाम की खातर तुम आपस में एकदम संप कर लो परस्पर मिल जाओ और दुनिया को अपनी सच्ची गुरुभक्ति का परिचय दे दो अगर एकदम जलदी से ऐसा नहीं हो सकता तो पिछले जो जो इतराज आपस में हो अगर हमारे पर विश्वास होवे तो स्वर्गवासी गुरुदेव के नाम पर छोड दो मौक्या आने पर विचार हो जायगा। फिलहाल आगे के लिए आपस में मिल जाओ और धजा निकाल कर आनन्द ले लो और दूसरे नगर-वासी भाईयों को आनन्द दे दो।

अगर आपका दोनों का हृदय ऐसा कठिन हो गया है (संभव तो नहीं कि ऐसा होवे क्यों कि आपस में मिलते होंगे। बोलते चालते बातचित भी करते होंगे) इतना भी नहीं बन आता तो जो जो सामान धजा का और जलूस का तुमारे पास हो श्री मंदिरजी में पहुंचाओ तथा जलूस में शामिल होओ। हमने उनको लिख दिया है कि आप खुद श्री बडे मंदिरजी से रीति-सर धजा निकालने की रशम अदा कर लें उमीद है दूसरे भाई जलूस में शामिल हो जावेंगे।

याद रखना अगर इस में दिलचस्पी न हुई और आगे के लिए धजाका मामला बिगड गया तो हमारा कोटला आने में भी विचार हो पडेगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यहां २४-८-१९४१ भाद्रो सुदि दूज आइतवार को रथयात्रा का वरघोडा (जलूस) मय महेंद्र धजा के सुबह निकलना निश्चित हुआ है रथ फिरोजपुर से आवेगा। यदि तुम स्कूल का बैंड और मय पालखी के हाथी लेकर शनिवार को यहां पहुंच जाओ तो रोनक में वृद्धि होवे। आइतवार शामको यहांसे मय बैंड और हाथी के रवाना होकर सोमवार को बडी खुशी से कोटला वापस पहुंच सकते हैं और मंगलवार को अपने यहां के जलुस में भी शामिल हो सकते है। अगर किसी सबब से तुम और बैंड नहीं आ सकते, तो हाथी मय मिस्त्री के जरूर टाईमसर यहां पहुंच जाना चाहिये। यहां का काम होते ही रवाना होकर टाईमसर कोटला पहूंच जायगा। सबको धर्मलाभ।

संप

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्।

२४६७-४६ (११२) ११-८-१९४१

सीआलकोट सीटी

कनकमंडी, श्री आत्मानन्द जैन भुवन

वल्लभसूरि आदि की तरफ से श्री मालेरकोटला। सुश्रावक लाला साधुराम बिंदुमल्ल आदि सकल श्रीसंघ योग्य धर्मलाभ। आपका और दूसरी तरफ का पत्र मिला। मतलब यह समझ गया कि धजा निकाली जानी जरूर है परंतु निकालने के लिए दोनों में से एक भी हिम्मत से अपने शिर लेनेको तैयार नहीं है। तुमारा आपस का कुसंप तो दो दिन आगे पीछे मिट जायगा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परंतु धजा रुकी हुई फिर जलदी निकलनी मुश्किल है तुमारे आपसी रंजका लाभ दूसरे भाईयों को मिल जायगा। वह आगे धजा का निकलना पसंद करते नहीं तुम आपसी कुसंप हटाते नहीं और धजा निकालने को तैयार नहीं। इस लिए हम अपनी तरफ से यह आखरी सूचना देते हैं कि स्वर्गवासी श्री गुरुदेव के नाम की खातर तुम आपस में एकदम संप कर लो परस्पर मिल जाओ और दुनिया को अपनी सच्ची गुरुभक्ति का परिचय दे दो।

अगर एकदम जलदी से ऐसा नहीं हो सकता तो पिछले जो जो इतराज आपस में हो अगर हमारे पर विश्वास होवे तो स्वर्गवासी श्री गुरुदेव के नाम पर छोड दो मौक्या आने पर विचार हो जायगा। फिलहाल आगे के लिए आपस में मिल जाओ और धजा निकाल कर आनन्द ले लो और दूसरे नगर-वासी भाईयों को आनन्द दे दो।

अगर आप दोनों का हृदय ऐसा कठिन हो गया है (संभव तो नहीं कि ऐसा होवे क्यों कि आपस में मिलते होंगे—बोलते चालते बातचित भी करते होंगे) इतना भी नहीं बन आता है तो आप खुद श्री बडे मंदिरजी से रीतिसर धजा निकालने की रशम अदा कर लें उमीद है दूसरे भाई जलुस में शामिल हो जावेंगे उनको लिखा गया है कि जो जो सामान धजा का और जलुस का तुमारे पास हो श्रीमंदिरजी में पहूंचाओ तथा जलुस में शामिल होओ।

याद रखना अगर इस में दिलचस्पी न हुई और आगे के लिए धजा का मामला बिगड गया तो हमारा कोटला आने में भी विचार हो पडेगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पंजाब गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७–४६ (११३) १५–८–४१

सीआलकोट सीटी

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री कलकत्ता। श्री जैन श्वेताम्बर संघ योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना। गुजरांवाला से श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल के लिए आप श्रीसंघ की सेवा में गुरुकुल के अधिष्ठाता बाबू अनन्तरामजी बी. ए. एल एल. बी. तथा लाला कपूरचन्दजी हाजर होते हैं आप श्री संघ इनकी बात सुन लेवें और योग्य मदद देवें दिलावें।

पंजाब गुरुकुल

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७–४६ (११४) १५–८–४१

सीआलकोट सीटी

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री कलकत्ता सुश्रावक लाला जसवंतराय वैद्य योग्य धर्मलाभ। गुरुमहाराज के तुम कैसे भक्त हों अपने आपको पूछ लेना और अपना कर्त्तव्य कर लेना गुरु भक्ति के इमतहान का मौक्या है आपके भाई आपकी सहायता से गुरुकुल के काम के लिए आये हैं अपनी गुरुभक्ति का परिचय करा देना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाबुजी का स्मारक

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७–४६ (११५) १८–८–४१

सीआलकोट सीटी

विजयवल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री दील्ली सुश्रावक लाला नानकचंद, धर्मचंद, कस्तूरचंद, श्राविका द्रौपदीबाई आदि सर्व परिवार योग्य धर्मलाभ। १५–८–४१ का पत्र मिला हाल मालुम हुआ। यहां श्री देवगुरु धर्म के प्रसाय सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सबको धर्मलाभ कहना।

तुमारे भेजे ५० पुस्तकों में सम्यक्त्क शल्योद्धार का पुस्तक मिला परंतु यह तो बडोदा का छपा हुआ गुजराती भाषा का है। तुमारे पिताश्री बाबू जसवंतरायजी का हिन्दी भाषा का लाहौर का छपा हुआ चाहिये।

बाबूजी के फोटु के लिए जो तजवीज शोची है यही ठीक है उस पर छपवाने का परचा साथ में है। पुस्तक तैयार हो जाने पर उसकी व्यवस्था पर्युषणा बाद हो जायगी।

लक्ष्मणदास ५० बम्बई ले गये ठीक हुआ इस तरह १०० पुस्तक चले गये। ९०० रहे उनकी व्यवस्था करनी होगी।

जैन तरंग का अंक जिस में बाबूजी का वृत्तांत छपा है एक नकल यहां भेज देनी। जैन पेपर में बम्बई वालोंने सभा की तरफसे अफसोस जाहिर किया है जिसकी नकल तुमको भेज दी है। अब और जरूरत नहीं। पुस्तक पर आ जायगा इतने से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सर जायगा, जो परचा साथ में है देख लेना कमोबेशी करना हो दोनों भाई सलाह कर के कर लेवें।

पत्र जो जो मिले एकठे कर लेने। जलदी कोई नहीं—मतलब कोई पत्र इधर उधर न हो जावे इस लिए तुमको सूचना दी है। तुमारी हार्दिक इच्छा अच्छी है परंतु इतनी रकम में कहीं भी कमरा नहीं बन सकता। हमारी रायमें अगर तुमको योग्य लगे और होशियारपुर का श्रीसंघ मान लेवे तो होशियार-पुर में श्री गुरुदेव के नाम की दादावाडी बन रही है उसमें श्री गुरुदेव की चरण पादुका और छत्री बनने वाली है छत्री के नीचे का थडा संभव है इतने में बन जायगा नाम का नाम काम का काम और बाबूजी का जन्म स्थान—गुरुमहाराज को मानो अपने शिर पर बाबूजीने उठा कर अपने आपको सच्चा गुरुभक्त बना लिया जैसे यह काम होगा।

यदि मुनासिब समझा जावे होशियारपुर श्रीसंघ को प्रार्थना पत्र लिख देना। और साथ में यह भी लिख देना कि यह सलाह हमको सीआलकोट से महाराजश्रीने दी है। हम भी यहां से उनको लिख देवेंगे।

श्री मंदिरजी में पूजा के लिए इरादा है तो इस में पूछना ही क्या वह तो ऐसे ही काम सरने और कराने वाले थे। जब कभी जहां कहीं कोई काम होता है नया ही प्रतीत होता है और वह पहल पहला कहा जाता है। जब हम यहां चैत्र में आये थे नया कहा जाता था। अब कोई बोलता ही नहीं। चौमासा के लिए आये नया कह लाये अब पर्युषणा आये स्वप्न उतरेंगे। २४–८–४१ को रथयात्रा का जलुस होगा फिरोजपुर का रथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आयगा मालेर कोटला का हाथी जिसको सिंह जूते हुए आयगा। उमेद्पुर (मारवाड) से मय ढड्ढा साहिब आदि मारवाडी सरदारों के बेन्ड और भजन मंडली आयगी। यहां श्री जिनमंदिरजी के लिए जागा ली गई श्री जिनमंदिरजी बनेगा यह सब नया ही कहलाता है और कहलायगा इसी तरह तुमने अपनी पूजा पढानी समझ लेनी। इति।

ज्ञानप्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६८-४५ (११६) ७-१०-४१

सीआलकोट सीटी

वल्लभसूरि आदि की तरफसे श्री लाहौर सुश्रावक लाला सुंदरलाल-शान्तिलाल आदि सर्व परिवार योग्य धर्मलाभ। पत्र १-१०-४१ का मिला हाल मालुम हुआ।

बम्बई का समाचार जान लिया। आंखें की शरम होती है अस्तु समय अनुकूल नहीं था। कालेज के लिए लाला मंगतराम लाहौर आकर क्या कर गये तुमको पता होगा। हमको खानगी में पता मिला है कि प्राइमरी और मिडल को बंध कर दिया जानेका विचार कमिटिने किया है। यदि यह सत्य होवे तो हमारी समझ में पीछे पश्चात्ताप करना होगा।

मालेरकोटला के लिए फुलचन्दभाई को लिखा है उनका जवाब आने पर एक मेहनतु आदमी को भेजने के लिए कोटला लिख दिया है तुमने भी लिख देना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुरुकुल की बाबत निश्चयात्मक विचार मिलने पर जरूर होना चाहिये।

पं. पुरुषोत्तमचन्द्र को मुनि पुण्यविजयजी की सलाहसे जैन संबंधी अंग्रेजी लेखों का संग्रह करना और साथ में परीक्षा P. H. D. की करनी बाद में आगम प्रकाशन के काम में लगाना। इस में अंग्रेजी संग्रह करना इन्होंने शुरू किया है एक लेख हमको दिखा गये हैं तुमने भी देख लेना और योग्य सलाह देते रहना। एक हफते–सप्ताह में कितना काम होना चाहिये उनके साथ निश्चित कर लेना और सप्ताह होने पर उस कामको देख लेना यह तुमारा काम है। इस के अनुसार पचास मासिक वेतन देना होगा और वह तुमने देते रहना। तुमारी रकम तुमको मिल जाया करेगी।

पंडितजी यहां आये थे उनको कहा गया कि लाला सुन्दर-लाल को हम लिख देवेंगे तुमने उनके साथ सब खुलासा कर लेना सो वह मिले तब सब समझ लेना।

कृष्णकान्त का अभ्यास चालु होवे तो पूर्ववत मासिक वीस देते रहना और सारा हिसाब रखना ताकि तुमको याद रहें। सबको धर्मलाभ।

अंबाला से पता मिला है कि जालंधर वाले विद्यार्थी बद्री-दास के लिए द्रौपदी ट्रस्टने मासिक वीस स्वीकार कर लिया है मिले तब धर्मलाभ के साथ कह देना। सतियों को सुखसाता।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिक्षण प्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६७-४६ (११७) ८-१०-४१

सीआलकोट सीटी, कनकमंडी श्री आत्मानन्द जैन भवन

विजयवल्लभसूरि आदि की तर्फसे श्री अंबाला। सुश्रावक लाला संतराम मंगतराम योग्य धर्मलाभ। तुमारा पत्र मिला था मंगतराम के आने के भरोंसे पत्र लिखा नहीं था। अब पता मिला कि मंगतराम लाहोर से वापस चले गये है। खानगी हमारे जानने में आया है कि कोलेज कमिटि का विचार है कि प्राइमेरी और मिडल बंध कर दी जाय! हम नहीं कह सकते वह कहां तक सत्य है? परंतु जो काम किया जाय शोच विचार कर किया जाना अच्छा है। थोडा या बहुता उन में तो धर्मका शिक्षण दिया जाता है जैन के लडके लाभ लेते हैं यह सब बंध हो जायगा पीछे तो बराय नाम के जैन संस्था रह जायगी। सोहनलालको यदि हो सके तो २५ के स्थान में ३० की उदारता कर देवें। बद्रीदासको द्रौपदीबाई ट्रस्टने २० देना स्वीकार कर लिया लाला इन्द्रसेन के पत्र से जाना गया है। लालाजीसुखलाल वाली धर्मशाला बन गई है और उसका नाम "आनन्द वल्लभ जैन धर्मशाला" रखा है यह भी लाला इन्द्रसेन के लिखने से मालुम हुवा है। सबको धर्मलाभ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धन्यवाद

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६८-४७ (११८) ११-७-४२

पट्टी, जिला लाहौर

C/o श्री आत्मानन्द जैन भवन

आचार्य विजयवल्लभसूरि की तर्फसे श्री गुजरांवाला।

श्रीयुत लाला बिहारीलाल चांदना B. A. योग्य धर्मलाभ।

आपने अपने कार्य में सफलता प्राप्त करके व्यापारी मंडल का मुख उज्ज्वल कर दिखाया इसकी बाबत आपको जैन गुरु तरीके श्री जैन संघ की तर्फसे धन्यवाद दिया जाता है।

द. खुद।

पंचो की जिम्मेदारी और समाज सुधार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६८-४७ (११९) पट्टी, जिला लाहोर

आषाढ सुदि ६ रविवार १९९८

विजयवल्लभसूरि आदि साधु ८ तथा देवश्रीजी आदि साध्वीयां ५ की तर्फसे श्री वरकाणाजी तीर्थ। श्री गोडवाड जैन संघ पंच कमिटि योग्य धर्मलाभ के साथ मालुम होवे। यहां सुखसाता है धर्मध्यान में उद्यम रखना सर्व श्रीसंघ को धर्मलाभ कहना। पत्र आपका आषाढ सुदि ३ १९९८ का लिखा १६-७-२४ का रवाना हुआ आज १९-७-४२ को मिला पढ कर आनन्द हुआ। आनंद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस बातका हुआ कि आप कार्यकर्त्ता पंचों की शुभ दृष्टि समाज सुधार के लिए ज्ञाति सम्मेलन की तर्फ गई है! मारवाड का हमको अनुभव है जिस कार्यको पंच करना चाहे वह कार्य जरूर हो जाता है यह कार्य पंचोंने चाहा है तो अवश्य हो जायगा! पंचों की जाजम का उठ जाना हम पसंद नहीं करते, हा उसका सुधार होना जरूरी है! जहां जहां पंचो की जाजम उठ गई हैं वहां वहां प्रायः तकरार होती है और तड पड जाते हैं फिर धीरे धीरे सभी घर घर के पंच बन कर पांचसौ सुभटों वाला हाल बना देते हैं।

हां पंचोंका काम है किसी की तरफदारी न करके पूरा पूरा न्याय करे इसी लिए पंचोंको परमेश्वर की उपमा दी जाती है, जो पंच हो कर धनवान की या सगे-संबंधी की जूठी तरफदारी करके किसी के साथ अन्याय करता है वह पंच महा पापी होता है। इस लिए पंचोंको सावधान रहना चाहिये, किसी अपेक्षा राज सत्तासे भी पंचों की सत्ता अधिक मानी जाती है वैसे पंचों की जवाबदारी भी अधिक है, पंचों में मतभेद न होना चाहिये विचार भेद भले होवे विचार भेद तो आपस में मिल कह समझा लिया जाता है मतभेद से ममत्व में आकर तड पडने का संभव है इस लिए सब से पहले जुदे जुदे नगरों के सब पंचों का सम्मेलन होना जरूरी है बाद में सब एक मत हो कर जितना भी समाज सुधार करना चाहेंगे बहुत जलदी कर सकेंगे ऐसा हमारा मानना है। समाज सुधार चाहने वालों को खुद गरजी अपने स्वार्थ की दृष्टि को छोड कर परमार्थ दृष्टि करनी चाहिये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समाज सुधार चाहने वालों को फिजूल खरची बिन जरूरी खरचे को बंध करना चाहिये। समाज सुधार चाहने वालों को कन्याविक्रय और वरविक्रय (डोरा लेना) बंध करना चाहिये। समाज सुधार चाहने वालों को बालविवाह और वृद्धविवाह बंध करना चाहिये।

समाज सुधार चाहने वालों को एक स्त्री के होते हुए दूसरी स्त्री का करना बंध करना चाहिये। समाज सुधार चाहने वालोंको जिमणवार खास करके मृत्यु भोजन बंध करना चाहिये।

ज्ञाति सुधार चाहने वालों को विवाह लग्नादि प्रसंग पर खर्च की मर्यादा बांधनी चाहिये। ज्ञाति सुधार चाहने वालों को एक ज्ञाति उद्धार या समाज उद्धार के नामसे फारसी लोकों की तरह एक फंड एकठा करना चाहिये और उस फंड की वृद्धिके तरीके शोचने चाहिये ताकि उस फंड में से गरीब साधारण स्थिति के अपने ज्ञाति भाईयोंको विद्यार्थीयोंको और व्यापार धंधार्थीयोंको बतौर लोनके देकर ज्ञातिका उद्धार किया जाय।

एक ऐसी समिति बनाई जावे कि अपने ज्ञातिभाईयों में जहां कहीं किसी अमर की तकरार हो जावे और वह तकरार उस स्थान के पंचों से या भाईयों से न मिटाई जाषे तो वहां उस समिति के योग्य सरदार जिनका कुछ प्रभाव पडे जाकर तकरार मिटा देवे ताकि ज्ञातिका समाजका संगठन, संप, बंधारण बराबर कायम बना रहे।

इत्यादि अनेक सुधारे की जरूरत है जिसका समयानुसार शोच विचार के साथ धीरे धीरे प्रबन्ध करना चाहिये, एकदम

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सब बातोंका सुधार करने में कई किसम की मुश्केलियां खडी हो जाने का संभव है इस लिए धीरे धीरे एक के बाद दूसरा सुधार करना योग्य है।

यह संदेश इस लिए भेजा है कि आप लोक सांसारिक स्थिति में निश्चिन्त हो कर धर्माराधन भी शुद्ध भावोंसे कर सकेंगे।

शिवमस्तु सर्वजगतः परहित निरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ १ ॥

ज्ञान प्रचार

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

२४६८–४७ (१२०) पट्टी ३१–७–४२

श्री लाहौर।

वल्लभसूरि की तर्फसे धर्मलाभ। पत्र आपका मिला। सुखकरण स्वामी की कोपी अब दुर्लभसी हो गई है यदि आप इसे छाप देवें या छपवा देवें तो सुलभ हो जावे। खर्चेका प्रबन्ध करा दिया जायगा खर्चे का अंदाज लिख भेजना। श्री सिद्धचक्रजी आप यहां आवे तब खुद पसंद करके ले जावें।

हमारा विचार है कि श्री १००८ श्री प्रवर्त्तकजी महाराज की यादगार में एक से लेकर दश तक के हिसाब से श्री आत्मकान्ति जैन शिक्षा फंड खोला जावे जिसका उपयोग उच्च शिक्षण लेने वाले साधारण स्थिति के विद्यार्थीयों में लौन तरीके होवे।

सबको धर्मलाभ।

—— × ——

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

युगवीर के करकमलों में

अभिनंदन पत्रादि

(१)

पूज्यपाद शासन-प्रभावक पंजाब-केसरी पंचनद-मरुदेशोद्धारक विद्याप्रेमी प्रातःस्मरणीय बालब्रह्मचारी आचार्य महाराज

श्री १०८ श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी की पवित्र सेवा में

अभिनन्दनपत्र एवं उपाधि-समर्पण

आचार्यश्रीजी !

श्री नवपद चैत्री ओली तथा श्री अखिल भारतवर्षीय पोरवाल महासम्मेलन के अवसर पर भारतवर्ष के भिन्न २ प्रान्तों से श्री बामणवाडाजी तीर्थ में एकत्र हुआ यह समस्त जैनसंघ आपके विद्याव्यासंग, धर्म और समाज की प्रगति के लिये आपके भगीरथ प्रयास और अज्ञान दशा में पडे हुए हमारे अनेक भाइयों के उद्धारार्थ आपके द्वारा की हुई महान् सेवाओं का स्मरण करके आपके प्रति अपना हार्दिक भाव व्यक्त करता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वर्गीय न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वर (प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी) महाराज ने अपने अन्तिम अवस्था के समय पंजाब के जैनों के हृदय का दर्द पहचान कर उनको आपके सुपुर्द किया था। तदनुसार आप श्रीगुरुदेव के ध्येय की पूर्ति के लिये अपने जीवन में महान् परिश्रम उठा कर पंजाब में जैनत्व कायम रखने में सफल हुए हो।

तदुपरांत श्री महावीर विद्यालय की स्थापना करके तथा श्री आत्मारामजी महाराज के पट्टधर की पदवी को सुशोभित करने की जैन जनता की आग्रहयुक्त विनति को मानकर पंजाब में ज्ञान का झण्डा फहरा कर आपने सद्गत गुरुमहाराज की आन्तरिक अभिलाषा को पूर्ण किया।

आपने गुजरानवाला, वरकाणा, उम्मेदपुर तथा गुजरात काठियावाड वगैरह स्थलों में ज्ञानप्रचार की महान् संस्थाओं को स्थापित कर और जगह २ पर जैनसमाज में फैले हुए वैमनस्य एवं परस्पर मतभिन्नता आदि को मिटा कर जैन-जनता पर भारी उपकार किया है। इतना ही नहीं, किन्तु अज्ञानान्धकार में भटकते हुए जैन-बन्धुओं को धर्म का मार्ग बताकर तथा उनमें ज्ञान का संचार करके उनको सच्चे जैन बनाने में जो भगीरथ श्रम उठाया है उसकी हम जितनी कदर करें वह कम है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपके इन सब महान् उपकारों से तो जैन-जनता किसी भी प्रकार उऋण नहीं हो सकती, फिर भी फूल के स्थान पर पत्ती के रूप में आपको 'अज्ञानतिमिरतरणि कलिकालकल्पतरु' बिरुद अर्पण करने को विनयपूर्वक तत्पर हुए हैं और आप इसको स्वीकार करके हमारी हार्दिक अभिलाषा अवश्य पूरी करेंगे और हमारे उल्लास की वृद्धि करेंगे ऐसी आशा है।

श्रीसंध की आज्ञासे, विनीत, चरणोपासक, सेवकगण-

श्री बामणवाडाजी तीर्थ
(सिरोही राज्य)
मिति वैशाखवदी ३
गुरुवार सं. १६६०
ता. १३ अप्रेल
सन् १६३२ ईस्वी

भबूतमल चतराजी
दलीचंद वीरचंद
डाह्याजी देवीचंद
रणछोडभाई रायचंद मोतीचंद
गुलाबचन्द ढड्ढा

आदि श्रीसंघ के सेवक.

---

(२)

अभिनन्दन पत्रम्

प्रातः स्मरणीय जैन धर्म दिवाकर देशोद्धारक, स्वनाम धन्य न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य्य श्रीमद् विजयानन्दसूरीजी महाराज के पट्टधर, जैन धर्म धुरेन्द्र, व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयवल्लभसूरीजी महाराज की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पवित्र सेवामें अमृतसर निवासी श्वेताम्बर जैन श्रीसंघ की ओर से आचार्यश्रीजी के शुभागमन पर सादर समर्पित।

पूज्य आचार्य्यश्रीजी !

आज हम लोकों के हर्ष का कोई ठिकाना नहीं जबकि हमारी देर की लगी हुई आशायें पूर्ण हो रही है और आज १६ वर्ष के दीर्घ समय के पश्चात् आपश्रीजी के चरण कमलों ने हमारे नगर की भूमि को पवित्र किया है।

भगवन् !

आपने जो उपकार जैन समाज पर किये है उनकी किसी प्रकार से भी प्रशंसा करने में हम असमर्थ है। आपने श्री महावीर जैन विद्यालय बम्बई, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाना, जैन बालाश्रम उमेदपुर, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कालिज अम्बाला तथा श्री आत्मानन्द जैन महासभा पञ्जाब जैसी महान् संस्थायें स्थापित करके जैन जाति में विद्या का जो प्रचार किया है वह अकथनीय हैं। कई नवीन जिन मन्दिर बनवाये तथा पुराने जिन मन्दिरों और प्राचीन पुस्तक भण्डारों का जीर्णोद्धार कराया।

प्रभो !

आपकी आयु इस समय ७० वर्ष से अधिक है इस वृद्धावस्था में भी आप में नवयुवकों जैसा उत्साह प्रगट हो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रहा है। आपकी समाजसेवा का कहां तक वर्णन किया जावे इस पत्र में तो क्या बडी पुस्तक में भी नही समा सकता। इस उपकार के लिये जैन समाज आपका ऋणी है।

दयामय !

आपने स्वर्गवासी गुरुदेव श्रीमद् विजयानन्दसूरी के अन्तिम आदेश के अनुसार पञ्जाब संघ की रक्षाका भार अपने सर पर लिया और जिस प्रकार इसे सम्पूर्ण कर रहे है वह सूर्य के प्रकाश की तरह प्रकाशित है! यद्यपि गुजरात आदि प्रांतों में आपका कार्य करना इस पञ्जाब प्रांतसे कहीं अधिक सुगम था, परन्तु उन सुविधाओं का परित्याग कर आपने इस प्रांत में कार्य करना आरम्भ किया जहां पग पग पर कई प्रकार की कठिनाइयां उपस्थित हैं।

अन्तमें हमारी शासनदेव से प्रार्थना है कि आपश्रीजी की छत्रछाया हमारे सिरों पर चिरकाळ तक बनी रहे। और हम आपकी आज्ञानुसार अपने जीवन को सार्थक बनाने व समाज सेवा करने का प्रयत्न करते रहें।

तारीख ९ मई सन् १९४०

हम है आपके चरण सेवक,
श्वेताम्बर जैन श्रीसंघ, अमृतसर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(३)

❀ वन्दे वीरम् ❀

प्रातःस्मरणीय परम उपकारी गुरुदेव, अज्ञान-तिमिर-तरणि, जैनाचार्य

श्री १००८ श्री श्रीविजयवल्लभसूरीजी महाराज

के

पवित्र चरण कमलों में

मानपत्र

परम उपकारी गुरुदेव !

आजका दिन हमारे लिये कितना शुभ है कि आप १६ वर्ष के लम्बे समय के बाद भारतवर्ष के प्राचीन ऋषियों की पुण्यभूमि पंजाब की राजधानी लाहौर में पधार रहे हैं। श्रीसंघ लाहौर जैसे शुभ समय पर आपके पवित्र चरणों के दिव्य प्रताप से श्रद्धापूर्वक अपने प्रेम तथा भक्ति का परिचय थोडे से शब्दों में भेंट रूप दे रहा है।

आपका अपूर्व त्याग, पूर्ण ब्रह्मचर्य, उत्कृष्ट चरित्र की पराकाष्टा, विश्वप्रेम तथा गुरुभक्ति आदि अनेक गुणों से अलंकृत होना ही एक बार फिर प्राचीन भारतवर्ष के ब्रह्मर्षियों का स्मरण करा देता है।

वास्तव में साधु वही है जो संसार से थोडी से थोडी सामग्री लेकर संसार का ज्यादा से ज्यादा उपकार करता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है इसका सच्चा उदाहरण आपका पवित्र जीवन है जिसका कण कण मनुष्यमात्र की सेवा और विशेषतया सब समाजों से पिछडी हुई पंजाब के जैन समाज की सेवा के लिये (अपने परम उपकारी पूज्य गुरुदेव न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्री विजयानंदसूरीश्वरजी महाराज की अन्तिम इच्छानुसार) अर्पण हो चुका है।

आपके विद्या-प्रेम के ज्वलंत उदाहरण-स्वरूप श्री आत्मानन्द जैन कालिज अम्बाला, श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल पंजाब-गुजरांवाला, मालेर कोटला, लुध्याना के जैन स्कूल, मुम्बई का महावीर जैन विद्यालय, तथा वरकाणा विद्यालय-उमेदपुर बालाश्रम आदि अनेक संस्थायें आज विद्यमान हैं तथा आपके ही सतत प्रयत्न से सैंकडों निर्धन विद्यार्थी ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं।

साधु समाज के संगठन के लिये बडोदा तथा अहमदाबाद के साधु महासम्मेलनों को सफल बनाने के लिये आपने जो अथाक परिश्रम किया वह प्रत्यक्ष ही है। तीर्थों के उद्धार के लिये भी आप काफी प्रयत्नशील रहे है।

पंजाब जैन सणाज के संगठन के लिये श्री आत्मानंद जैन महासभा पंजाब को आपके आशीर्वाद से आपके शिष्यरत्न स्वर्गवासी उपाध्याय श्री १०८ श्रीसोहनविजयजी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराज ने बडे परिश्रम से स्थापित किया था उसे फिर अपने प्रेम बल द्वारा सजीव बना दीजिये।

पूज्य गुरुदेव! हमारा तो यह पूर्ण विश्वास है कि जैनधर्म किसी व्यक्तिविशेष का धर्म नहीं वरन् यह मनुष्यमात्र का धर्म विज्ञान की सुदृढ नींव के ऊपर स्थित है। परन्तु जैनसाहित्य का लोक–भाषा में प्रचार न होने के कारण साधारण जनता उससे पूरा लाभ नहीं ले सकती, इस लिये अन्त में हमें पूर्ण आशा है कि जैनसाहित्य को मनुष्यमात्र तक पहुँचा कर दुःखी जीवों को शान्ति देने में आप अग्रसर होंगे।

ता. १६–५–१६४०

आपका
चरणोपासक—
श्रीसंघ लाहोर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(४)

❀ अभिनन्दन-पत्रम् ❀

भक्ति-भाव भर कर निज उर में निकट आपके आये हैं।
प्रेम प्रसाद आप से पायें यही कामना मन लाये ॥

प्रातःस्मरणीय जैनधर्म दिवाकर, देशोद्धारक,
जैनधर्म धुरन्धर, व्याख्यान वाचस्पति,
आचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयवल्लभसूरिजी महाराजकी
चरण शरण में मुरीद्की मण्डी निवासीजन प्रसन्नवदन, पुलकितगात, हर्षालु-हृदयों से नमस्ते पूर्वक अभिवादन करते हुए अपने मध्य में आपके शुभागमनका आनन्दोत्सव मनाते हैं।

पूज्य तपोधन !

आपका जीवन मनुष्यों के लिए परम आदर्श है। सब धर्म, सब देश, स्वजाति और मानव-समाज के लिए आपका अनुपम त्याग, निर्भय वीरता और अद्वितीय कष्ट-सहन आपको परमोच्च-विमलयश पूर्ण सिंहासनपर विराजमान कर रहा है। हमारी यह हार्दिक कामना है कि आपके पद चिन्हों पर चलते हुए स्वदेशोन्नति तथा आत्मोन्नति के लिए हम आपके आशीर्वाद से सदा ही प्रयत्नशील रहें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दयामूर्ति !

देश निवासियों में आज विचित्र प्रकार की मानसिक प्रवृत्तियां उत्पन्न हो रही है। प्राचीन आर्य्य-आदर्शों से उन्हें घृणा है। भारत की सभ्यता, संस्कृति और हिन्दू मर्यादाओं से वह सर्वथा उदासीन हैं। मार काट, मांस आहार और धर्म शून्यता में वह सुख मानते हैं। ब्रह्म-चर्य तपस्यावाद के आदर्श लुप्त होकर भोगवाद और विदेशी अनुकरण उनका स्थान ले रहे हैं।

भगवन् !

संसार में चारों ओर अशान्ति का राज्य है। अहिंसा वाद का स्थान बम और तोपने ले लिया है। इस अवस्था में शान्ति-प्रिय हृदय तडप रहे हैं। हम इसे अपना अहो-भाग्य समझते हैं कि आप यहां पधारे हैं। इस कृपा के लिये हम सदा ही आप के आभारी रहेंगे।

कृपया इन उपर्युक्त विषयों पर प्रकाश डालकर हमारी आत्माओं को शान्तिप्रदान कीजिये। हम श्रीमुख से इन बातों को जानना चाहते हैं, और आपकी आज्ञानुसार अपने जीवन को सार्थक बनाने का यत्न करेंगे।

तारीख
२६ मई १९४०

हम हैं आपके श्रद्धावान भक्त—
मण्डी मुरीदके निवासी,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(५)

परम पूज्य न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद्विजयानन्द-सूरीश्वरजी महाराज के पट्टालङ्कार कलिकाल कल्पतरु अज्ञान तिमिर तरिणि शासननायक व्याख्यान वाचस्पति पंजाब केसरी श्री १००८ आचार्य श्री विजय वल्लभसूरीश्वरजी के चरण कमलों में सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्र

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चेते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम् ।
नमः सत्योपदेशाय सर्वभूत हितैषिणे
वीतदोषाय वीराय विजयानन्द सूरये ।

श्रद्धास्पद गुरुदेव !

गुरुकुल के भाग्याकाश में आज सचमुच ही चिरकाल की घनघोर घटा के बाद पुण्यरूपी सूर्य का उदय हुआ है अपने संस्थापक संरक्षक एवं संवर्द्धक गुरु के साक्षात् दर्शन करके गुरु के इस पवित्र कुल में आनन्द की सीमा नहीं रही है। मेघों का एक साल भी आंखों से ओझल रहना कृषकों की विह्वलता विकलता और चिंता का कारण होता है। थोडी देर के लिये भी जीवन रूप जीवन के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बिना मछली का प्राण मृत्यु संकट में पड जाता है गुरुकुलने अपने प्राणस्वरू आप श्री जी के चरणों बिना १६ वर्ष का लम्बा समय किस विह्वलता और बेचेनी के साथ व्यतीत किया है उसका वर्णन शब्द शक्ति से परे है ! आज परमोपकारी इष्टदेव गुरु को प्राप्त कर गुरुकुल चमन का हरएक फूल अपने असाधारण सौंदर्य के साथ खिल उठा है। गुरुकुल की सभी आशायें आज पूर्ण हुई हैं।

गुरुभक्त !

आपके रोम २ में गुरुभक्ति के भाव भरे हुए है। अपने गुरु के नाम को अमर करने के लिये ही आप-श्रीजीने अपनी स्थापित की हुई सभी पंजाब प्रांतीय संस्थाओं के नाम श्री आत्मानन्द से प्रारम्भ किये हैं। और उन्हीं की आज्ञा का पालन करने के लिये आपने पंजाब रक्षा का बीडा उठाया हुआ है। अपने गुरुदेव की संपूर्ण भावनाओं को पूर्ण करने में आपश्रीजी सर्वथा प्रयत्नशील हैं। इतनी दूर से पैदल विहार कर गर्मी एवं सर्दी की तकलीफ सहन करते हुए आपश्रीजी जो पंजाब और आज गुरुदेव के स्वर्गधाम होने के कारण तीर्थ भूमि माने जाने वाली गुजरांवाला नगरी में पधारे हैं यह आपश्रीजी की सच्ची गुरुभक्ति और समाज सेवा का स्पष्ट प्रमाण है। आपश्रीजी हमारे जातीय कल्याण तथा नैतिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

व आत्मिक उन्नति के किस प्रकार अभिलाषी हैं और जैन समाज की पारस्परिक फूट को दूर करके किस प्रकार उन्नति की है यह किसी से छुपा हुआ नहीं है।

तपस्विन् !

यहां हम आप की भिन्न २ प्रकार की तपस्याओं का वर्णन करना नहीं चाहते और नहीं हम आहार विहारादि की उन कठिनाइयों और बाधाओं का ही उल्लेख करना चाहते हैं जिनका आप एक सच्चे जैन साधु होने के नाते पद पद पर अनुपम धीरता और उत्साह के साथ सामना करते आये हैं लेकिन पंजाब का बच्चा २ आपकी उस कठिन तपस्या को भुला नहीं सकता जो आपने अपने स्वर्गीय गुरुदेव की शुभ कामना को कार्यरूप में परिणत करने के लिये एवं जैन जाति के उद्धार के लिए सच्चे धर्म प्रेमी व देशानुरागी नवयुवक पैदा करने के विचार से एक सरस्वती मंदिर खोलने के लिये की थी। और जिसका फल श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला के रूप में समाज के सामने मौजूद है। आज हमें यह कहते हुए हर्ष होता है कि इस गुरुकुल से निकले हुए अनेकों विद्यार्थी भिन्न २ कार्य क्षेत्रों में लगे हुए अपने देश व जाति की उन्नति के लिये यथा शक्य सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धर्म दिवाकर !

यद्यपि इस सम्बन्ध में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है फिर भी हमें यह कहते हुए हर्ष होता है कि आप श्री जी ने अपने हृदय की विशालता का परिचय देते हुए जैन धर्म का आर्यावर्त के सीमित क्षेत्र तक ही प्रचार करने की चेष्टा नहीं की अपितु सुदूर समुद्रपार देशों में भी प्रचारक भेजकर वहां भी ज्ञान-ज्योति जगाने एवं जैन धर्म को सार्वभौम धर्म बनाने के प्रयास में किसी प्रकार की कमी नहीं की है। आप श्री जी के इस शुभ कार्य के लिये किस जैन को गर्व न होगा।

देशरत्न !

आपकी स्थापित संस्थायें और उनकी व्यवस्था आपकी देशभक्ति और देश प्रेम का एक अपूर्व उदाहरण है। आपका स्वयं स्वदेशी वस्त्रों का प्रयोग और दूसरों के लिये तदर्थ प्रोत्साहन आप श्री जी के स्वदेशानुराग के सच्चे परिचायक हैं आप श्री जी के देशानुराग रुप क्रियात्मक जीवन तथा उपदेशका ही परिणाम है कि आज कितने ही जैन नवयुवक भारत माता के उद्धार के लिये अपनी सेवायें समर्पित कर रहे हैं।

गुरुदेव !

यह आपके उत्कृष्ट व्यक्तित्व और पावन चरित्र का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ही प्रभाव है कि आज न केवल हम लोग तथा अन्य जैन बंधु ही आपका आदर सत्कार करने में संलग्न हैं बल्कि निष्पक्ष व्यक्तियों का भी आपके प्रति आकर्षण दृष्टिगोचर हो रहा है। स्थान २ पर अजैन भाईयों के द्वारा आपके स्वागत का किया जाना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि आपश्रीजी के उपकार केवल श्वेताम्बर जैनसमाज तक ही सीमिती नहीं हैं। हमारा विश्वास है कि आप सरीखे शुद्ध-चरित्र विद्वान महानुभावों के प्रयत्नों से ही जैन तथा अजैन जनता में पारस्परिक धनिष्ठता पैदा होगी और इस प्रकार उनकी जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों का निवारण होकर उन्हें जैन धर्म का सच्चा स्वरूप जानने में सहायता मिलेगी।

शिक्षा प्रेमिन्!

आपश्रीजी के शिक्षा प्रेम के संबंध में जितना भी कहा जाय थोडा है। समस्त जैन संसार आपके इस विद्या प्रेम गुण से सुपरिचित है इस कार्य की दृष्टि से वर्तमान समस्त जैनाचार्यों में आपश्रीजी का नाम सर्व प्रथम गिने जाने के सर्वथा योग्य है। मारवाड व पंजाब जैसे शिक्षा की दृष्टि से पिछडे हुए प्रांतो में भी अनेक विद्यालय कोलेज तथा गुरुकुल आपके शिक्षा प्रेम के ज्वलंत उदाहरण हैं। आपश्रीजीने न केवल अध्यात्मिक अपितु व्यवहारिक विषय जैसे चिकित्सा विज्ञानादि लोकोपकारी विषयों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के शिक्षण प्रचार को भी प्रोत्साहन दिया है। आपश्रीजी का देश एवं विदेशों में उच्च शिक्षण के लिये भारतीय बालकों की व्यवस्था में सहयोग देना भारतकी ज्ञान सम्पत्ति बढाने का श्लाधनीय कार्य है।

कुलपते !

आपश्रीजी गुरुकुल के भाग्य विधाता है। गुरुकुल को जन्म देकर आपश्रीजीने धर्म एवं लोक सेवा के उस महान् कार्य को पूर्ण किया है जिसका वर्णन धर्म और देश के इतिहास में सदा के लिये अमर रहेगा। आप श्रीजी की प्रारम्भ से ही गुरुकुल को एक विशाल विश्व-विद्यालय के रूप में देखने की प्रबल भावना एवं प्रयत्न रहा है लेकिन आपश्रीजी के दूर देश रहने के कारण उपस्थित हुई अनेक कठिनाइयां इस उद्देश्य की पूर्ति में बाधक रही है। गुरुकुल की अपनी विशाल इमारत का न होना आदि कुछ ऐसे कारण रहे हैं जिनकी बजह से गुरुकुल अपनी पूर्ण प्रगति नहीं कर सका है अब आप-श्रीजी के यहां पधार जाने से हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि तमाम त्रुटियां शीघ्र ही दूर हो जावेंगी। और यह गुरुकुल भारतवर्ष के लिये ही नही बल्कि सुदूर देशों के लिये भी ज्ञान पिपासा के दूर करने का सुन्दर क्षेत्र बन जावेगा। देश एवं विदेशों के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विद्यार्थी भिन्न २ भाषाओं, धार्मिक और व्यवहारिक विषयों तथा आजीविका प्राप्ति के सफल साधनों के ज्ञान-लाभ के लिये यहां आने में अपना गौरव समझेंगे। श्री शासनदेव से हमारी यही कामना है कि आपश्रीजी सुदीर्घायु हों और आपश्रीजी की छत्रछाया में यह गुरुकुल अपने उद्देश्य को पूर्ण करता हुआ अमर रहे।

श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल
पंजाब, गुजरांवाला
ता. ३१ मई १९४० ई०

आपश्रीजी के चरण सेवक
गुरुकुल ब्रह्मचारी. कार्यकर्त्ता
एवं सर्व सदस्य

---

(६)

* ॐ *

परमहंस परिब्राजकाचार्य जैनसाधुशिरोमणि वन्दनीयचरण
श्री १००८ श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज की
सेवा में सादर समर्पित।

❀ अभिनन्दन–पत्र ❀

परम पूजनीय गुरुदेव !

आज हम लोगों के परम सौभाग्य का दिन है। या यों कहना चाहिए कि हम लोगों के संचित–पुण्यों का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रसाद है कि चिर-अभिलषित आपका भव्य दर्शन आज पुनः हम लोगों को उपलब्ध हुआ है। श्री शासनदेव की अपार कृपा से आपके पुण्यानुबन्धी दर्शन प्राप्त कर हमें असीम आनन्द हुआ है।

भगवन्।

आप परम तपोधन तेजोराशि योग की उज्जवल मूर्ति तथा साक्षात जंगम तीर्थ प्रयागराज हैं। कारण आपने भारत के प्रत्येक कोने कोने में पहुँच कर आध्यात्मिक ज्योति दान द्वारा मानव समाज के त्रिविध संताप को निवारण किया है। आबाल ब्रह्मचारी अपरिग्रह शील तितिक्षु अतएव आप महात्मा हैं! इसलिये साधु सम्प्रदाय के शिरोमणि आदर्श एवं अनुकरणीय चरित्र हैं।

लोकमान्य।

आप साम्प्रदायिकता के संकीर्ण वातावरणसे बहुत ऊँचे, देश-काल के पूर्ण ज्ञाता एक महान् सुधारक भी हैं। वास्तव में जैन-धर्म के रूप में आपने हिन्दु संस्कृति तथा हिन्दू-सभ्यता को सदा के लिए अमर बनाये रखने का प्रगाढ प्रयत्न किया है और सतत इसी उद्देश्य से आप सर्वत्र प्रयत्न कर रहे हैं। जिसका ज्वलन्त प्रमाण लोक-हितकर यहां का स्थापित गुरुकुल तथा अम्बाला का जैन कोलिज आदि संस्थायें हैं। जिस में जाति धर्म

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्प्रदाय निर्विशेष हिन्दु बालक सनातन मर्यादानुसार अध्ययन कर रहे हैं। यह आपश्रीजी के अनेक गुणों में श्लाघनीय एक समदर्शित्व गुण है !

लोकनायक !

आपने लोक-संग्रह और अभ्युदय की दृष्टिसे आधुनिक युग की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए अनेकों संस्थायें बना कर तथा उन्हें पुनरुज्जीवन देकर न केवल जैन-धर्म पर सुतरां हिन्दू जाति तथा देश पर परम उपकार किया है। इस आपकी सर्वतोमुखी प्रतिमा पर हम सब लोगों को बहुत बडा गर्व है। यही आपका लोकनायकत्व है।

महामुने !

आपने १७ वर्ष की अवस्था में अपने आराध्य गुरुदेव से दीक्षा लेकर उनकी निर्दिष्ट शैली पर निष्काम कर्मयोग का अनवरत अनुष्ठान करते हुए जैन धर्म में जो युगान्तर उत्पन्न कर दिया है और अपने युक्ति-पूर्ण मनोमुग्ध कर अमृतमय उपदेशों द्वारा हम लोगों को जीवन व जागृति दी है वहां जैन धर्म के लिए अन्य सम्प्रदायों में आपने प्रगाढ श्रद्धा, आस्था अतएव साम्प्रदायिक अनुराग पैदा कर दिया है। इस पारस्परिक सहानुभूति-रूप संगठन के द्वारा हम लोगों में अन्तर्बल उत्पन्न करके सदा के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिए बहुत बडी दुर्बलता दूर कर दी है यह आपका मुनित्व है।

प्रभो !

आपके गुणों की गणना नहीं की जा सकती, जहां आप शास्त्रों के पारंगत विद्वान् हैं वहां नीति के भी परम चतुर धुरंधर हैं। यदि आप निःश्रेयस के एकमात्र आराधक हैं तो अभ्युदय–कर कार्य में भी आप उपेक्षा नहीं रखते, इस लिये ही आप एक पूर्ण पुरुष हैं।

वीतराग !

आपका उद्देश बहुत बडा एवं महान् है। आपका उपदेश लोकोत्तर है। आपका धर्म महाव्रत अहिंसा है। जो प्राणि मात्र को लौकिक सुख और शांति तथा पारलौकिक उन्नति और मोक्ष का प्रदान करने वाला है। तदनुसार आप उज्ज्वल राग–द्वेष–शून्य धर्म–धुरीण नेता भी हैं यही आपकी वीतरागता है।

आपश्रीजीने समस्त पंजाब में स्थान स्थान पर शिक्षा–संस्थायें तथा खासतौर से गुजरांवाला में भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक भावों का सच्चा रक्षक और धर्म तथा देशकी रक्षा के लिए वीर सिपाही तैयार करने वाला जैन गुरुकुल स्थापित करके समस्त पंजाब को तथा खासकर गुज-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रांवाला को विशेष अनुगृहीत किया है। इस लिये गुजरांवाला के निवासी हम सब आपके इस लोक-हितकर यात्रा का पुनः पुनः स्वागत करते हैं और आप हम भक्तों को सदा स्मरण रखते हैं इस लिये हम लोग आपश्रीजी के चिर-कृतज्ञ हैं।

गुजरांवाला
ता. ३१-५-४०

आपके चिरानुगामी—
ग्रैन मर्चैण्ट्स, गुजरांवाला।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(७)

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

नत्वा श्रीविजयानन्दं वल्लभे सूरिणं तथा ।
समर्पयामि श्रद्धायाः पुष्पाणि पादपद्भ्यो ॥

परमपूज्य, परलोकनिवासी, धर्मधुरन्धर, मिथ्यात्वतिमिरनाशक,
अज्ञानतिमिरतरणि, जिनशासनोन्नतिकारक, परोपकारी,
परमतपस्वी, पंचनदप्राण, जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्द
(श्री आत्माराम) जी सूरीश्वर महाराज के पट्टशिष्य
सकलगुणगणालंकृत, न्यायाम्भोनिधि, जैनधर्मदिवाकर
अहिन्साधर्मप्रतिष्ठापक, प्राणिमात्रहितैषी, जैनागम-
रत्नाकर, द्वादशाङ्गवाणीसेवक, साधुशिरोमणि,
जैनधर्मोद्धारक प्रसिद्धवक्ता, जैनधर्मके चमकते
सितारे, समाजसुधारक, श्री १००८ श्री
विजयवल्लभ सूरीश्वर महाराज के
चरण कमलों में जैन कालिज
अम्बाला शहर की मैनेजींग
कमेटि द्वारा सादर—

❀ समर्पित ❀

प्रातःस्मरणीय गुरुदेव ! हम आपके अनन्य भक्त आपकी भक्ति से प्रेरित होकर इस होरक जयन्ति के महोत्सव पर आपश्री की दीर्घायु के लिये भगवन् श्री शासनदेव से प्रार्थना करते हैं और अपनी श्रद्धा के फूल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समर्पण कर अपने जीवन को कृतार्थ समझते हैं। धन्य है यह शुभ दिन और शुभ घडी कि प्रातःस्मरणीय गुरु-देव के दर्शन कर हमने अपने जीवन को सफल किया। आपश्री सैकडों वर्षों वक जीवित रह कर जिन-शासन जैन-धर्म और जैन समाज की इसी प्रकार सेवा करते रहें। स्वर्गीय श्री १००८ श्री विजयानन्द (आत्मानंद) जी सूरीश्वर के दिवंगत होने बाद भारत के समस्त जैनियों को आपने ही धर्मामृत पिलाया है। आपके जीवन से जैन समाजमें जो जागृति उत्पन्न हुई है वह चिरस्मरणीय है। आपकी सेवाए हमारे हृदयपटलों पर सदा अंकित रहेंगी।

धर्मसंरक्षक! इस पंचम दुषमाकाल में वीर शासन की रक्षा का भार आप सदृश महान आत्माओं पर ही निर्भर हैं। आपश्री के चरण-कमल जिस जगह पधारते हैं या जहां कहीं आप चातुर्मास व्यतीत करते हैं वहां अश्रुतपूर्व तथा अद्भूत धर्मप्रभावना होती है; जिसे देखकर हमारा हृदय आनन्द से गद्गद होजाता है। आपने अपने जीवन में सहस्त्रों मनुष्य और स्त्रियों की धार्मिक भाव-नाओं की दृढता की है और उनको मिथ्यात्व मार्ग से छुडा कर सन्मार्ग पर लगाया है। आपने धर्मशिथिल जैन जाति के अन्दर पुनर्जीवित पैदा किया है। आपके अन्दर धर्म रक्षा की भावना सर्वप्रधान रहती है और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसके लिये नवीन २ उपाय निकाल कर धर्म की सेवा किया करते हैं।

चारित्रनिधे! आपका चारित्र वर्तमान युग में सर्व श्रेष्ठ है। आपकी सच्चरित्रता की महिमा का असर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर अंकित रहता है। बाल्यकालसे लेकर आज तक अखण्ड ब्रह्मचारी रह कर जो उदाहरण आपश्रीने पेश किया है वह लोगों के लिये अनुकरण है। आपके अखण्ड ब्रह्मचर्य के तेज के समान कौन ठहर सक्ता है। आप के चारित्र की महिमा अपरंपार है। आप ३६ मूल गुणों के धारक चारित्रधारियों में सर्व शिरोमणि हैं। आपके पवित्र चारित्र का जैन और अजैन जनता पर बडा प्रभाव पडता है। आपकी दिव्य मूर्ति के दर्शन करने मात्र से ही सच्चरित्रता का चित्र नेत्रों के सामने आजाता है और हमारा मस्तिष्क भक्ति से नम्र हो जाता है। आपका दिव्य चारित्र उल्लेखनीय और अनुकरणीय है।

परमोपदेशक! आप जहां कहीं जाते हैं वहां आपका अधिकाधिक समय धर्मोपदेश में ही व्यतीत होता है। आपकी सरल, स्वाभाविक, मधुर वाणी में जादू का सा असर होता है। आपके पावन उपदेश को श्रवण कर पापी से भी पापात्मा मिथ्यात्व और कुमार्ग को छोड कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्यक्त्व और सन्मार्ग को ग्रहण कर जीवन सफल करता है। आपके जीवन में इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं कि आपश्री ने कितने ही भूले भटके मनुष्यों को सच्चे जैन धर्म में दीक्षित कर सन्मार्ग पर लगाया है। आपका मनोहर उपदेश निष्पक्ष होता है। आपकी वक्तृत्व शैली प्रभाविक होती हैं। आपके जैनधर्म और जैनसिद्धान्त के ज्ञान की जनता भूरि २ प्रशंसा करती है। आप जैन धर्म के जटिल सिद्धान्तों का बडा सुगम और सरल भाषा द्वारा प्रतिपादन करते हैं। हमारी यह भावना है कि आप इसी प्रकार अपने दिव्य उपदेशों से जनता के संतप्त हृदयों की शान्त करते रहें।

परम तपस्वी! आप की तपस्या तथा वैराग्यवृत्ति की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी थोडी है। आप सब प्रकार से बाह्य और अभ्यन्तर तपों को तपते हुए इस घोर कलियुग में एक अद्भुत आदर्श स्थापित कर रहे हैं। आपकी उत्कृष्ट तपस्या संसार के जीवों को पाठ पढाती है कि कर्मों के नाश के लिये तपस्या का ही मार्ग सर्व श्रेष्ठ है। जिस प्रकार सुवर्ण का जब तक अग्नि संस्कार नहीं किया जाता उसमें तेज नहीं आसक्ता और न वह निर्मलता को प्राप्त हो सकता है ठीक उसी प्रकार कर्म रूपी शत्रु को दमन करने के लिये तपस्या रूपी अग्नि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की परमावश्यकता है। इसी से कर्मों की निर्जरा होसकती है। आपने अनेक प्रकार के परीषों को सहन कर एक अपूर्व तप का आदर्श उपस्थित किया है। वैसे भी आप तपगच्छ के साधुओं में शिरामणि हैं। आपकी अहोरात्र बढती हुई तपोभावना को जानकर हमारा हृदय आश्चर्य से चकित रह जाता है।

संघहितैषि! संघ के हित की भावना आपके हृदय में सर्वथा विद्यमान रहती है। इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि इस युग में आपका अवतार ही इस लिये हुआ है कि आप चतुर्विध संघ में एक नव जीवन संचार करें, आप साधु साध्वी तथा श्रावक श्राविकाओं के अस्तित्व को जैन धर्म की नींव समझकर सर्वदा प्रयत्न शील रहते हैं कि किसी न किसी प्रकार इसकी रक्षा और परिवृद्धि होती रहे, आपश्री भारतवर्ष के कोने २ में पैदल विहार कर धर्म, तीर्थ, संस्थाओं की रक्षा के लिये चतुर्विध संघ में उत्कृष्ट भावनाओं का संचार करते रहते हैं और उसको उद्बोधित करते रहते हैं कि इस समय हमारी रक्षा और उन्नति धर्म, तीर्थ और संस्थाओं द्वारा ही हो सकती है। आपके इस समय अनेक शिष्य-शिष्याएं हैं जो आपके साथ रहकर या एकाएकी विहार कर जैन धर्म की अनेक प्रकार से सेवा करते हैं, हम वीर जिनेन्द्र से प्रार्थना करते हैं कि आपकी शिष्य परं-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परा दिन दूनी और रात चौगुनी होकर जैन धर्मका उद्योत करती रहे।

देशजाति सेवक! आपने देश तथा जाति की यातनाओं का अपने अन्दर अनुभव किया है यही कारण है कि आप स्वदेश और जाति की उन्नति के उपायों का आश्रय लेकर अनेक प्रकार से उनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। आपकी विशाल दृष्टि में निर्धन या धनकुबेर सब बराबर हैं। आपकी धर्मवेदना सब के लिये समान होती हैं। आपके उपदेशों में मनुष्यजाति के संगठन, मनुष्यजाति की सेवा, विश्वप्रेम आदि विषयों पर अच्छा प्रकाश रहता है, आपश्री की भावना रहती है कि समग्र मानव जाति एकता के सूत्र में संगठित होकर विश्व के अन्दर अहिंसा और शान्ति के मार्ग को ग्रहण करे। आपने समाज में अनेक संस्थाओं को जन्म देकर उसी पद्देश्य की पूर्ती के लिये भगीरथ प्रयत्न किया है। आपकी सेवाएं जाति के लिये अपार हैं जिनका वर्णन करना हमारी शक्ति के बाहर है।

विद्याप्रेमी! आपका विद्या प्रेम जगत् विख्यात है। आपने अनेक विद्यार्थीयों को छात्र वृत्तियां वगैरह दिलाकर उनके जीवन को बनाया है। आपने विद्या प्रचार के लिये अनेक संस्थाएं खुलवाई हैं जो जैन समाज में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिक्षा का प्रचार कर रही हैं। अम्बाला का श्री आत्मानन्द जैन कालिज उन्हीं में से एक संस्था है। यह संस्था आपकी संरक्षता में एक मामूली पाठशाला के स्वरूप से वृद्धिंगत होकर आज कालिज के स्वरूप को धारण किये हुए हैं। इसकी एक विशाल बिल्डिंग है। साथ में एक सरस्वती भवन (लाइब्रेरी) तथा छात्रालय (बोर्डिंग हाउस) भी है। वहां इस समय ३०० से अधिक जैन अजैन विद्यार्थी धार्मिक तथा लौकिक शिक्षा को ग्रहण कर रहे हैं। गुरुकृपा से कालिज की मैंनेजिंग कमेटी का स्वर्गीय गुरुदेव की भावना के अनुसार उसको डिग्री कालिज अर्थात् बी० ए० तक शिक्षा के केन्द्र बनाने की भावना है। इसी वर्ष उपर्युक्त संस्था में विज्ञान (साइन्स) विभाग भी खोल दिया गया है। कालिज में इस समय ५० नवीन छात्रावासों की (कमरों की) आवश्यकता हैं जिनमें करीब ५००००) रु० लगेंगे तथा डिग्री स्टेन्डर्ड तक उठाने के लिये ७५०००) रु० की युनिवर्सिटी की शर्त को पूरा करना है; ये सब कार्य गुरु चरणों के पंजाब में पधारने के पहिले २ अम्बाला नगर में समाप्त कर लेना है। हमें पूर्ण आशा है कि समाज का दानीवर्ग हमारी इस विषय में सब प्रकार से सहायता करेगा। गुरु चरणों की कृपा से सबकुछ हो जायगा। कालिज के बी० ए० तक होने से ही जैनधर्म, जैनसमाज और जैनबन्धुओं को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आधुनिक शिक्षा का लाभ हो सकता है। गुरु चरणों की भक्ति हमारी सब भावनाओं को पूर्ण करेगी।

उपर्युक्त गुण और सेवाएं आपकी जगत् व्यापिनी है। आपका गुणगान केवल हमी नहीं कर रहे हैं अपितु जहां २ आप पधारते हैं सर्वत्र आपके गुणगणों की भूरि २ कृतज्ञता प्रकट की जाती है। हमारी अन्तिम भावना यही है कि वीतराग जिनेन्द्रदेव की तथा स्वर्गीय गुरुदेव की भक्ति आपको आपके गुण्योदय का पूर्ण फल प्रदान कर आपको शारीरिक मानसिक, तथा आत्मिक बल देवे जिससे कि आप अधिकाधिक काल तक जीवित रह कर जैनसंघ जैनधर्म, जैन–जाति और जैन परंपरा की रक्षा करते हुए इस युग में जैनधर्म की धर्म पताका फहराते रहें।

गुरुचरणचञ्चरीक—

मंगतराम जैन,

सभापति (President) श्री आत्मानन्द जैन कालिज,

अम्बाला शहर.

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

(८)

वन्दनीय परमप्रतापी, अज्ञानतिमिरतरणि, कलिकालकल्पतरु न्यायाम्भोनिधि, स्वर्गीय श्री १००८ आचार्य श्रीमद्विजयानन्द सूरीश्वरजी महाराज के पट्टाधीश परमपूज्य ज्ञानदिवाकर, पञ्जाबदेशोद्धारक, धर्म प्रचारक श्री १००८ जैनाचार्य श्रीमद्विजयवल्लभ सूरीश्वरजी के चरणकमलों में सविनयादर

समर्पित

श्रद्धांजलिः

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्॥

नमः सत्योपदेशाय सर्वभूत हितैषिणे
वीतदोषाय वीराय विजयानन्द सूरये।

परोपकारिन्!

आपश्रीजी जैसे परोपकारी, तेजस्वी, ज्ञान और वैराग्य की मूर्ति, शान्ति स्वरूप, धर्म के अवतार, अहिंसा की ज्योति, दया के सागर, उच्चादर्श और आत्म–गौरव के चांद जैनाचार्य को प्राप्तकर सम्पूर्ण जैन समाज और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खासतौर से पञ्जाब के समस्त जैन नर नारी अपने आपका धन्य और सफल जीवन समझते हैं। आज आपश्रीजी की ७१ वीं वर्षगांठ मनाते हुए हम सब लोगों का शरीर अत्यन्त उल्लसित, हृदय आनन्द से गद्गद और नेत्र प्रेम तथा आनन्दाश्रुओं से परिपूर्ण हो रहे हैं। आपश्रीजी का पावन जीवन हमारे चिरसंचित पुण्यों का फल, हमारे समस्त मनोरथों का स्तूप, मारी हजीवन ज्योत का सूर्य, हमारी साधनाओं का सार और हमारे धार्मिक जीवन का प्राण है। इस जीवन के ७१ वें वर्ष के प्रवेश से हमारी आत्माओं में आनन्द का समुद्र हिल्लोरे ले रहा है। आपश्रीजीने हमारे कल्याण के लिये क्या २ नहीं किया है। अपने सुदीर्घ तप और अभ्यास द्वारा प्राप्त किये हुए ज्ञान से हमें उपदेशामृत का पान कराया है। हमारी आत्मसाधना के साधन, जैन धर्म की कीर्ति को दिगदिगन्त में फैलाने वाले गगनचुम्बी जिन भवन बनवाये हैं, ज्ञान और सदाचार के सिखाने वाले विशाल और परिपूर्ण विद्यालय तथा ज्ञान भंडार स्थापित किये हैं, हमारे नैतिक और सामाजिक जीवन को समुन्नत तथा सुसंगठित बनाने वाली अनेक सभायें खोली हैं, जैन धर्म के रहस्य और आत्मोन्नति के मार्ग को दिखाने वाले ग्रन्थ एवं शास्त्रों का निर्माण किया है, हमारी भूलीभटकी आत्माओंको शांति सदाचार और कल्याण का मार्ग दिखलाया

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

है इन अनेकानेक उपकारों के लिये हम और हमारी सन्तानपरम्परा आपश्रीजी की चिरऋणी रहेगी। ऐसे परोपकारी के जीवन दिन की खुशी में हमारा आनन्दोल्लसित होना स्वाभाविक ही है।

भक्त वत्सल, भक्त शिरोमणे!

आपश्रीजीने अपने गुरुदेव परम प्रतापी, अक्षय पुण्य भण्डार, कलिकाल कल्पतरु, न्यायाम्भोनिधि अज्ञानतिमिरतरणि श्री १००८ जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्द सूरीश्वरजी महाराज की धर्म एवं ज्ञान प्रचार की पवित्र भावना को विशद क्रियात्मक रूप दिया है यह आपश्रीजी की कृति गुरुभक्त शिरोमणि होने की सच्ची परिचायिका है। स्वर्गीय गुरुदेव के पवित्र उपदेश से स्थान २ पर गगनचुम्बी जिन भवनों के बनाने के बाद उनके लिये गुरुदेव की भावनासुर सच्चे पुजारी बनाने के साधन स्वरूप श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पञ्जाब गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कालेज अम्बाला, श्री आत्मानन्द जैन मिडिल व हाईस्कूल अम्बाला, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा, श्री महावीर जैन विद्यालय बम्बई, श्री आत्मानन्द जैन मिडलस्कूल जंडियालागुरु, श्री आ० जैन मिडल स्कूल होशियारपुर, श्री आ० जैन मिडल स्कूल लुधियाना, श्री आ० जैन हाईस्कूल मालेरकोटला, श्री आत्मानन्द

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन विद्यालय सादडी, श्री आत्मानन्द जैन लाइब्रेरी पूना, श्री आत्मानन्द जैन लाइब्रेरी जूनागढ तथा अनेक ज्ञान भंडार स्कूल एवं पाठशालायें आपीश्रीजी के विद्या प्रेम और गुरुदेव की आज्ञाको शिरोधार्य करने के उदाहरण हैं। जैन समाज के लिये यह अत्यन्त आनन्द एवं गौरव की बात है कि आपश्रीजी के गुरुदेव जिस प्रकार प्रखर विद्वान्, धर्मप्रतिष्ठापक एवं महान् उपदेशक थे उसी तरह आपश्रीजी भी ऊपर लिखे गुणों में अपने गुरुदेव का पदानुसार भलीभान्ति कर रहे हैं और इतना ही नहीं बल्कि आपश्रीजी के भी शिष्यरत्न समर्थ विद्वान्, विद्या के अनन्य भक्त, मरुदेशोद्धारक; आचार्य श्री विजयललित सूरि तथा अन्य आचार्य एवं मुनि मंडल में भी ये गुण भली भांति पाये जाते हैं। इस तरह जहां आप में आदर्श शिष्यों का गुरुत्व एवं आदर्श गुरु का शिष्यत्व दोनों ही गुण विद्यमान हैं वहां अपने गुरुदेव की सरस्वती मन्दिर खोलने की पवित्र भावना को सम्मान देते हुए आपश्री जीने अपने भक्तों के आत्म-कल्याण के लिये उपर लिखी संस्थाओं को स्थापित कर भक्तवत्सलता तथा भक्तशिरोमणित्व ये दोनों ही गुण भली भांति प्रदर्शित किये हैं।

दयासागर गुरुदेव !

आपश्रीजी के दया और भक्तघात्सल्य गुणका हम कहां

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तक वर्णन करें। जब भी आपश्रीजी को विदित हुआ है कि आपके भक्तों पर कोई संकट आया तो आपने तुरन्त ही उनके संकट निवारण का सफल प्रयत्न किया है। जब कभी भी आपश्रीजीने सुना कि आप के भक्तों में किसी सामाजिक व धार्मिक कार्यों के कारण मनोमालिन्य पैदा हो गया है तो आपश्रीजीने स्वयं जाकर या अपने प्रभावक सन्देश को भेजकर लोगों के हृदयस्थ मनोमालिन्यरूप अंधेरे को क्षणभर में नष्ट कर दिया है और सन्तप्त आत्माओं को सान्त्वना दी है तथा धर्म ओर समाज की प्रतिष्ठा को बढाया है। जैसे बापी (मारवाड) में १५० साल से लोगों के अन्दर वैमनस्य था, पालनपुर में २१ साल से आपसी झगडा था, इसी तरह पूना में भी लगभग १७ धडे थे इन सब तथा अन्य अनेक स्थानों पर आपश्रीजी के प्रयास से आपसी मनोमालिन्य दूर होगया ओर सब लोग संगठित होकर धर्म की आराधना करने लगे। धर्म की सच्चे खोज की लालसा से जो कोई भी भाइ आपश्रीजी के चरणों में आया है आपश्रीजीने उसे शरण देकर अपने मनोमुग्धकारी कल्याणकर उपदेश से शांति दी है। आपश्रीजी की अमर गुण गाथा सर्वथा अज्ञेय एवं अकथनीय हैं।

महोपदेशक गुरुवर !

आपके उपदेश में वह जादू है कि जिससे बडे २

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रतिवादी भी अपने हृदय की हार का स्वयं अनुभव करते हैं और द्वेष के स्थान पर भक्ति, क्रोध की जगह प्रेम तथा ईर्ष्या की जगह गुणस्तुति को लेकर आपके चरणों में उपस्थित होते हैं। आपश्रीजी के प्रभावशाली उपदेशों द्वारा अनेक स्थानों पर कइ मांससेवी भाइयोंने मांस का यावज्जीवन परित्याग कर दिया है। खंभात, रायकोट, गुजरांवाला आदि स्थानों पर आपश्रीजी के प्रवेश और परम पवित्र सम्वत्सरी के दिन जीवहिंसा के सर्वथा बन्द कराने का श्रेय आप के सुमधुर उपदेशों को ही प्राप्त है। आपश्रीजी के उपदेश में नैतिक एवं धार्मिकसुधार के अनन्त सुधांशु सम्मिलित है यही कारण है कि जैन तथा जैनेतर जनता उसके सुनने की लालसा से खिची हुई चली आती है। आपश्रीजी के उपदेश की वर्षा जैन और अजैन सभी के हृदयों में धर्मबीजका अंकुरारोपण करती है

भारतभूषण !

आपश्रीजी जैन जाति की तरह समस्त भारत के लिये एक भूषण हैं। आपश्रीजीने उपदेशों द्वारा ही नहीं बल्कि अपने अमली जीवन से भी अहिंसा और शुद्ध स्वदेशी वस्त्रों की प्रतिष्ठा को कायम कर भारत की राजनीति नौका के कर्णधार महात्मा गांधीजी के अहिंसा और शुद्ध स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार कार्य को महान् प्रोत्साहन दिया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। आपश्रीजीने अपने प्रभावी उपदेशों द्वारा जनसमुदाय और विशेषतः जैन समाज से धर्म विरुद्ध वस्त्रों का परित्याग करा कर भारतवर्ष का महान् उपकार किया है। देश के स्वतन्त्रता के इतिहास में आपश्रीजी की यह कीर्ति सदा अमर रहेगी।

आचार्य भगवन्!

यदि हमारी आत्माओं में पवित्रता की कोइ झलक है। हमारे जप, तप और धर्मध्यान का कोई फल है, हमारे नैतिक जीवन की कोई प्रतिष्ठा है, हमारे तन मन और धन की कोई शक्ति है तो उन सब के मूल्य पर हमारी परम प्रतापी श्री शासनदेव से यही बारम्बार प्रार्थना है कि जैन धर्म की शान के सितारे, भवसागर में भटकने वाली जीवात्मारूपी जहाजों के लिये रोशनी के मीनार, विशेषतः हम पंजाबियों की डगमगाती हुई जीवन नौका को पार लगाने वाले आपश्रीजी चिरायु रहें। आप के चरणों में आपश्रीजी के शुभ जन्मदिन के मनाने का सौभाग्य हमें और हमारी सन्तान परम्परा को जन्मजन्मान्तर में भी प्राप्त होता रहे। आपश्रीजी के जीवन की शान दिन दूनी रात चौगुनी बढती रहे। आपश्रीजी के ज्ञान की किरणें, धर्मनिष्ठ एवं सदाचार सम्पन्न जीवन की महक, किर्ति और प्रतिष्ठा की चांदनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि समस्त संसार में फैल कर सब जीवों का कल्याण करती रहे।

आपश्रीजी की चरणोपासिका,

ता. १-११-४० श्री आत्मानन्द जैन महासभा पञ्जाब

(समस्त श्वे० जैन श्रीसंघ पंजाब)

---

(९)

परममान्य सर्वतन्त्र स्वतन्त्र कलिकाल कल्पतरु जैनाचार्य्य
श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज
की पवित्र सेवामें सविनयादर समर्पित

❀ श्रद्धाञ्जलिः ❀

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।

नमः सत्योपदेशाय सर्वभूतहितैषिणे
वीतदोषाय वीराय विजयानन्दसूरये।

गुरुदेव,

हम जम्मू के नागरिक अपने सौभाग्य की पराकाष्ठा समझते हैं कि आज हमारे चिर-पिपासित नेत्र-मधुकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन चरण-कमलों को अपने निकट पा रहे हैं जिनकी मधुर परन्तु दुस्सह प्रतीक्षा में, न जाने कितने शुष्क वसन्त मास हमें बिताने पडे। ग्रीष्म के सन्तापकारी भयानक मध्यान्ह के बाद अभिनव मेघमण्डल की शीतल और सुधामय व्रष्टि के समान और कालरात्रि के दीर्घ-दुरन्त अन्धकार के पश्चात् मनोहर जीवनमय अरुणोदय की तरह आपके शुभागमन का यह परम-पुनीत दिवस इस काश्मीर भूमि के इतिहास में वास्तव में एक नवीन अध्याय का प्रारम्भ-दिन समझा जायगा जब कि आपकी चरण-धूलि के स्पर्श से इसका अनन्त आन्तरिक कालुष्य सदा के लिये धुल गया है।

जैन-संसार के हृदय सम्राट,

बम्बई, गुजरात, मेवाड, पंजाब आदि प्रान्तों की पैदल यात्रा करके जैन-जनता में आपने जो जीवनमय आलोक सञ्चारित किया है, उससे वञ्चित रह कर हमें उन प्रान्तों से इर्ष्या हो रही थी। लेकिन हमारे स्नेहपूर्ण अनुरोध को स्वीकार करते हुए श्रीचरणों ने सत्य, अहिंसा और सहयोग के पुण्य-सन्देश के साथ, जो हमारी यह पर्णकुटी आज पवित्र की है, उससे श्रीमहाप्रभु महावीर स्वामी द्वारा चण्डकौशिक आदि निरीह जीवों का उद्धार, भगवन् राम का अकिंचन शबरी के बोरों का आस्वादन और जोगीश्वर श्रीकृष्ण का दीन-हीन सुदामा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के प्रति अद्भुत स्नेह, इन ऐतिहासिक स्मृतियों को एक बार फिर हमारी आंखों के सामने ताजा कर दिया है।

धर्मोद्धारक,

आयु के सोलहवें वर्ष में—उदीयमान नवयौवन के मदमाते प्रभातकाल में जीवन के आनन्द भोग और मानवी विलास-वासनाओं की मधुर आशाओं को ठुकरा कर, एक यथार्थ साधु के भेष और परार्थी तपोमय जीवन को स्वीकार कर लेना; केवल यही नही, कर्तव्यपराङ्मुख जैनसमाज को सत्य अहिंसा त्याग ओर जीवदया के अमृतमय धर्म के दिव्य प्रकाश से आलोकित करने का कठिन व्रत धारण करना, ये सब धर्मवीर के सच्चे गगु जिस प्रचण्ड साहस असाधारण तपोबल और उद्दाम आत्मिक उदारता की अपेक्षा रखते हैं उसकी आशा सिवाय आपके इस महान् व्यक्तित्व के और किससे हो सकती हैं? यौवन ही क्यों? आपका बाल्यकाल भी त्याग और चरित्रबल के उत्कृष्ट आदर्श का एक स्वर्णमय उदाहरण रहा है। साथ ही आपका जीवन आप के द्वारा प्रचारित धर्म के नियमों और जीवन के सिद्धान्तों का परमोज्ज्वल आदर्श, धर्मतृष्णा के प्यासों के लिये सुधाप्लावित मानसरोवर और धर्ममार्ग से भटकने वालों के लिये विमल चन्द्रकिरण के समान एवं देशभक्ति और लोकहित का देदीप्यमान मेरुदण्ड है। स्वदेशी के लिये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपका अनुराग असंख्य लोगों के लिये माइल-स्टोन (Mile-stone) बना हुआ है।

विद्यानिधे,

विद्या और ज्ञान के लाभ एवं प्रचार के प्रति आपके हृदय में जो दिव्य ज्योत निरन्तर प्रदीप्त रहती है उसके विषय में ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। न केवल जैन समाज बल्कि भारतवासी मात्र समान रुपसे उस अमृतस्त्रोत से सतृप्त हो रहे हैं। पंजाब और मारवाड जैसे अशिक्षा-तिमिर-व्यामूढ प्रान्तोंमें भी आपके अदम्य उद्योग से अनेक विद्यालय और गुरुकुल असंख्य बालकों की बौद्धिक उन्नति का कारण बन रहे हैं। आपके प्रयत्नों से सिर्फ आध्यात्मिक और धार्मिक शिक्षा ही नहीं, वरंच व्यावहारिक जीवन को उन्नत बनाने की विद्यायें भी देश भर में समुन्नत हो रही हैं। फिर जैनधर्म के लोकमान्य सिद्धान्तों को न केवल देश में बल्कि विदेश में भी प्रचारित करने में आपका महोत्साह भी किसी से कम नहीं है। इस सब कुछ के परिणाम में आज जैनधर्म के प्रति लोकमत गहरे आकर्षण और परम सम्मान के भावों से परिपूरित हो रहा है।

आदर्श गुरु-भक्त,

आज परमपूज्य, वन्दनीय अज्ञानतिमिरतरणि न्यायाम्भोनिधि १००८ श्री जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्द सूरीश्वर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रसिद्धनाम श्री आत्मारामजी महाराज का पवित्र नाम सर्वसाधारण के लिये सचमुच मधुर आनंद देने वाला बन रहा है। गुजरांवाला का श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल, अम्बाला का श्री आत्मानन्द जैन कालेज, मारवाड का श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय, वरकाणा का श्री उम्मेदपुर जैन बालाश्रम आदि अनेक स्कूल्स, हाई स्कूल, ज्ञानभंडार संस्थायें उन महात्मा की स्मृति और आपके प्रकाण्ड पुरुषार्थ का तेजस्वी विजयस्तम्भ है। देशके कोने २ में फैली हुइ आत्मानन्द जैन संस्थायें जिनके द्वारा देश हित साधन का अनिरुद्ध प्रवाह निकल रहा है सब आपश्रीजी की उदीर्ण गुरुभक्ति के असाधारण नमूने हैं।

धर्मदिवाकर,

समय थोडा और कहने को इतना कुछ है कि कह २ कर समाप्त नहीं होने का। इस लिये हृदय के अन्तस्तल के परम सम्मान के साथ हम इन थोडे शब्दों में ही श्रीचरणों में श्रद्धाञ्जलि के साथ यह विनम्र अभिनन्दन करते हैं और इसी से अपने को पूर्ण कृतकृत्य समझते हैं।

जम्भू (काश्मीर स्टेट) — आपश्रीजीका चरणसेवक

२० अप्रैल १०४१ — समस्त श्रीसंघ जम्मू

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१०)

परम पूजनीय त्यागमूर्ति, जैन-आचार्य
श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज
के पवित्र चरण कमलों में सादर समर्पित

❀ श्रद्धाञ्जलिः ❀

परोपकारी गुरुदेव !

हम सियालकोट निवासियों का यह परम सौभाग्य है कि बाल्यवस्था से ही ईश्वर भक्ति में तल्लीन, पूर्ण चन्द्र के प्रकाश की तरह उज्जवल यश प्राप्त करने वाले पूर्ण भक्त और अपने धर्म पर हंसते २ बलिदान होने वाले वीर बालक हकीकत राय की पवित्र जन्म भूमि में १६ वर्ष की अवस्था में हा सांसारिक सुखों का त्याग कर दीक्षा ग्रहण करने वाले, आप जैसे तपस्वी, सच्चे वैरागी, प्राणी मात्र पर दया व प्रेम की भावना रखने वाले आदर्श पुरुष ने पधार कर पांच मास तक हमें अपने अमृतमय, प्रभावशाली विद्वता पूर्ण, उदारता तथा सहिष्णुता से ओत प्रोत उपदेश सुना कर हम पर परम उपकार किया है।

तपस्विन्।

हर एक समझदार व्यक्ति का यह दृढ विश्वास है कि उच्च चरित्र और पवित्र आचार ही इस संसार में अतीव दुर्लभ रत्न हैं। वही व्यक्ति हम भारत निवासियों का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हृदय सम्राट हो सकता है जिस का आचरण शुद्ध, व्यवहार सत्य, हृदय विशाल, और जीवन सादा हो तथा जो सारे संसार को अपने कटुम्ब की तरह समझता हो। आप का सादा लिबास, शुद्ध सात्विक भोजन, नंगे पाव व नंगे सिर, पैदल सफर, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य, विद्वता और सद्भाव इत्यादी ऐसे गुण हैं जिन से आकृष्ठ हो हम आपके चरणों में नतमस्तक हो जाते हैं। आप के आदर्श जीवन से यह सिद्ध होता है कि भारत विश्व का सदैव आध्यात्मिक गुरु रहा है और रहेगा ॥

देश रत्न !

अपने पूज्य स्वर्गीय गुरुदेव जैन आचार्य श्री श्री १००८ श्री विजयानन्दजीसूरिजी महाराज श्री आत्मारामजी की विद्या प्रचार की अन्तिम भावना को कार्य रूप में परिणत करते हुए भारत के भिन्न २ प्रान्तों में अनेक विद्यालय स्थापित कर जहां आपने गुरु भक्ति का सराहनीय आदर्श हमारे सामने रखा है, वहां इस शिक्षा, स्वदेश वस्तु प्रेम और अहिंसा-त्मक जीवन के संचार से देश की भारी सेवा कर रहे हैं।

धर्म दिवाकर !

आप जैन धर्म के एक महान् आचार्य तथा पथ प्रदर्शक हैं। आप ने भारत के विभिन्न नगरों में जैन धर्म की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कीर्ति को दिगदिगन्त में फैलाने वाले गगन चुम्बी जैन मन्दिर बनवाये हैं। हमें इस बात का अपार हर्ष है कि आप श्री की कृपासे हमारे ऐतिहासिक नगरमें भी जैन धर्म के नाम को सर्वदा अमर रखने वाले एक विशाल जैन मन्दिर के शिलान्यास कार्य आज सम्पन्न हो रहा है। हमारी हार्दिक भावना है कि आत्मसाधना और आत्मोन्नति के इस महान् साधन का निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण हो।

वन्दनीय महापुरुष !

अन्त में आपश्री से हमारी यही सविनय प्रार्थना है कि जिस प्रकार अब आप ने हमें अपने सदुपदेशों से अनुगृहीत किया है तथा पारस्पारिक प्रेम, एकता, सहिष्णुता, सब धर्मों के प्रति आदर भाव, सादगी पवित्रता और सब जीवों के प्रति दया के सिद्धान्त दार्शनिक किन्तु सरल और बुद्धिगम्य ढंग से समझाने की कृपा की है, उसी प्रकार भविष्य में भी जब कभी अवसर प्राप्त हो, हमारे नगर में पधार कर इस भूमि को अपनी चरण रज से पवित्र करते हुए हमें अपने मनोहर शांतिप्रद तथा जीवनोपयोगी उपदेशों से कृतार्थ करते रहें ॥

सियालकोट,
५ दिसम्बर, १९४१

हम हैं आपके सेवक और कृतज्ञ,
सियालकोट नगर निवासी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(११)

अभिनन्दन पत्रम्

स्वनाम धन्य न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरि उर्फ आत्मारामजी महाराज के पट्टधर जैन धर्म धुरन्धर आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी की पवित्र सेवा में रायकोट की जैन और जैनेतर जनताकी ओर से सादर समर्पण किया।

पूज्य आचार्य श्री !

" गुणः पूजा स्थानं गुणिषु लिंगं नच तद वयः " इस लोकोक्ति के अनुसार आपके साधु जनोचित् सदगुणों से आकर्षित होकर हमलोग इस अभिनन्दन पत्रके रुप में अपनी श्रद्धाभक्ति को व्यक्त करने के लिये आपश्री की सेवा में उपस्थित हुए हैं।

कृपानिधे !

रायकोट की जनता का इससे बढकर और क्या सौभाग्य होसकता है कि उसको आप जैसे महान त्यागी तपस्वी परम विद्वान् साधु पुरुष के उपदेशामृत को पान करने का निरंतर पांच मास तक अनायास ही लाभ प्राप्त हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हम लोगों का आपश्री के उपदेश में जिस मार्मिकता निष्पक्षता और हृदयंगमता का अनुभव हुआ है उसका अन्यत्र प्राप्त होना यदि असम्भव नहितो कठिन अवश्य हैं।

पूज्य मुनिराज !

आपका संयम मय उदात्त जीवन सचमुच ही अपने अन्दर साधुता का एक विशेष उज्जवल आदर्श रखता है। जहां आपके जीवन में आध्यात्मिकता का दिव्यतम प्रकाश नजर आता है वहां उस में लोक संग्रह के लिये शिक्षा देना समाजसुधार और देशोत्थान की लगन का भी सजीव चित्र दृष्टिगोचर होता है, आपने अपने उपदेश द्वारा गुरुकुल विद्यालय और कालिज आदि अनेक सर्वोपयोगी शिक्षण संस्थाओं को जनम दिया। तथा आश्रम और महासभा आदि अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की। जिनकी उपयोगिता का आज प्रत्येक विज्ञ व्यक्ति अनुभव कर रहा है, अधिक क्या कहे आज जैन संस्कृतिके धार्मिक प्रदेश में जो उज्जवलता दिखाई देती है उसका अधिक श्रेय आप जैसे आदर्श जीवी महापुरुषों को ही है।

आपश्री के इन नगर में पधारने से हम नगर निवासियों को धर्म विषयक जो अलभ्य लाभ हुआ है उसके लिये हम आपके अत्यन्त आभारी हैं, आप जैसे सच्चे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन्यासियों को इस देश को बडी भारी आवश्यकता हैं। आपके त्यागमय तपस्वी जीवन में हमें जिन उदात्त भावनाओंकी झलक दिखाइ दी है उससे हम लोगों का आप श्री के चरण कमलों में बलात् मस्तक झुक जाता है. इसी लिये आप एक सम्प्रदाय के महान् आचार्य होते हुए भी हम सबके श्रद्धेय बन रहे है. आपश्री का उपदेश किसी एक ही सम्प्रदायक तक सीमित न रहकर प्रत्येक सम्प्रदाय के लिये अपनी · कल्याण कारिता का परिचायक सिद्ध हुआ है, आपश्रीजीने धार्मिक प्रदेश में हमें जिस सन्मार्ग का निदर्शन कराया है वह सर्वथा अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय है तदर्थ हम आपके बहुत बहुत आभारी हैं। अन्त में आपश्री के चरणों में हमारी नम्र प्रार्थना है कि जिस प्रकार आपने हमको इस समय कृत कृत्य किया है उसी प्रकार आगे को भी समय समय पर दर्शन देकर अपने सदुपदेश से हमें अनुगृहित करनेकी महती कृपा करें।

हम हैं आपके सेवक,
रायकोट निवासी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१२)

❀ अभिनन्दन-पत्र ❀

प्रातःस्मरणीय विद्वत् शिरोमणी जैन धर्म दिवाकर देशोद्धारक स्वनाम धन्य न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरिजी महाराज के पट्टधर जैन धर्मधुरन्धर व्याख्यान वाचस्पति जैन विभूति आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री विजयवल्लभसूरीजी महाराज की पवित्र सेवा मेंः—

लुधियाना निवासी जैन तथा जैनेतर जनताने आचार्य श्रीजी के शुभागमन पर सादर समर्पण किया।

पूज्य आचार्य श्रीः

हम लोग आपके उज्ज्वल आदर्शों तथा साधुजनोचित् सद्गुनों से प्रभावित होकर अभिनन्दन पत्र के रूप में अपनी भक्ति को व्यक्त करने के लिये आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं आपके आगमन से हमे अपार आनन्द हुआ है।

कृपानिधे! "परोपकाराय सतां विभूतयः" इस उक्ति के अनुसार आपके परोपकार की जितनी प्रशंसा की जाय थोडी है। आपने जैन धर्म तथा जनता के उपकारार्थ अनेकों कष्ठ सहन करके अत्युपयोगी शिक्षण संस्थायें जैन गुरुकुल गुजरांवाला, जैन कालेज अम्बाला, जैन हाइस्कूल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालरकोटला, महावीर जैन विद्यालय बम्बई, पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा आदि आरम्भ कराये जिनके द्वारा हजारों विद्यार्थी शिक्षा पाकर लाभ उठा रहे हैं। श्री जैन स्कूल लुधियाना भी आपही के उज्ज्वल आदर्श तथा वाणी के प्रभाव का प्रमाण है। आपके परोपकार जनता भुला नही सकती।

पूज्य मुनिवर,

जिस वाणी के प्रभावसे प्रभावित होकर रायकोट के वधिकों ने संबत्सरी के दिन पशुवध को बंद कर दिया था जिस उपदेश के प्रभाव ने जैनेतर जनता को भी मुग्ध कर दिया था, उस ही उपदेश को श्रवण करने के लिये लालायित हुई २ यह जनता आपके पधारने पर आपका श्रद्धा पूर्वक वारम्बबार अभिनन्दन करती है तथा आशा करती है कि सदा की प्रकार अपने मार्मिक तथा निष्पक्ष उपदेशों द्वारा प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों को अनुगृहीत करेंगे॥

हम है आपके सच्चे सेवक
लुधियाना निवासी

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

(१३)

वन्दे श्रीवीरमानन्दम्

अभिनन्दनपत्र

जिनके तप का तेज देख रवि शरमाता है।
सोम्यमूर्ति लख अहो चन्द्रमा सकुचाता है॥
सदा आतमा में रमता आतम का प्यारा।
तन वल्लभ, मन वल्लभ, वल्लभ नाम दुलारा॥
मन, वच, काया भव्य है, जीवन परम पवित्र है।
अर्पित उनके चरण में यह अभिनन्दन पत्र है॥१॥

श्री चरणों में !

कलिकालकल्पतरु, अज्ञानतिमिरतरणि, पंजाब केसरी १००८ श्री विजयवल्लभसूरिजी महाराज !

हे श्री संघ के वल्लभ, वल्लभ गुरुदेव ! हमें याद है वह जमाना जब लगभग सौ वर्ष पूर्व यह जैन समाज कुम्भकर्णी नींद में सोई पडी थी और इसे अपने अस्तित्व का भी ज्ञान नहीं था। लगभग दो सौ वर्षों तक आचार्य-पद के सम्यक् रूप से प्रतिष्ठित न रहने के कारण जैन-संघ नेताविहीन हो चुका था। एसे विकट संकटकाल में हमें जागने के लिए, हमारी निष्क्रियता को मिटाने के लिए, हमें जीवन का नया सन्देश देने के लिए प्रकृति ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक अनुपम तेजधारी, दृढसाहसी, बाल ब्रह्मचारी, कर्मयोगी महात्मा को भेजा। जिसका पवित्र नाम था-श्री विजयानन्दसूरिजी महाराज। उस न्यायाम्भोनिधि गुरुराज ने विघ्नों की शिला को चूर चूर कर दिया, विघ्नों की आंधियों को अपने मनोमल से नष्ट कर दिया और सत्य अहिंसा की तलवार लेकर अटल धर्म प्रहरी बनकर हमारे नष्ट होते हुए गौरव को बचा लिया।

पंजाब पर तो उनका विशेष उपकार है ही। परन्तु गुजरात, काठियावाड और राजपूताना भी उनके उपकार से कम उपकृत नहीं। बीकानेर श्रीसंघ पर भी उनकी कृपा-छाया पर्याप्तमात्रा में बनी रही थी। उन्हीं स्वर्गीय गुरुदेव की प्रतिमूर्तिस्वरूप हे गुरुवल्लभ! आज तुम्हीं हमारी नैया के खिवैया हो उनकी सरस्वती-मन्दिर की स्कीम को पूरा करने के लिए आपने क्या क्या कष्ट नहीं उठाए, समस्त जैनसंघ में एकता स्थापित करने के लिए आपने क्या क्या प्रयत्न नहीं किए, जैनधर्म को विश्वधर्म बनाने के लिए आपने क्या क्या उपदेश नहीं सुनाए।

मनोवर्गणा के पूर्ण अधिकारी योगी! पूर्ण तन्मयतायुक्त ध्यान के कारण आपका व्यक्तित्व बहुत ऊँचा और निखरा हुआ है। आपके मुखमण्डल का आकर्षण वास्तव में विरोधियों को भी आकर्षित करता है। आपकी मानसिक शक्ति का चमत्कार भक्तगण कई प्रसंगो पर देख

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चुके हैं। आप वास्तव में ही आत्मज्योति के प्रतीक एवं विश्ववन्द्य हैं।

हे विद्याप्रेमी महात्मा! आपका ज्ञान गम्भीर, विशाल और असंदिग्ध है। आपका उपदेशामृत हमारी आत्माको अज्ञान से ज्ञान की तरफ लेजाता है। आपके उपदेशामृत को सुनकर जैन व अजैन दोनों ही अनन्य आत्मानन्द का अनुभव करते हैं।

हे कल्याणकारी कर्मयोगी। आपका जीवन वास्तव में ही ज्ञान और चारित्र का अनुकरणीय आदर्श है। क्रिया बिना ज्ञान अन्धा और लंगडा है, इस तत्व की सत्यता आपने पूर्णतया व्यक्त की है। गुजरात, काठियावाड, मारवाड, आदि में विचर कर आपने अपने आदर्श ज्ञान और चारित्र द्वारा जनता को क्रियाशक्ति प्रदान की है, वह आधुनिक इतिहास में बेजोड है। आज ७५ वर्ष में भी आप जिस लगन और चेष्टा से क्रियापथ पर आरूढ हैं वह मुनिमार्ग और श्रावकमार्ग दोनों के लिये ही परम अनुकरणीय है। आपने भली प्रकार प्रतिपादित कर दिया है कि आचरणहीन ज्ञान मात्र बिडम्बना है।

परोपकारी आचार्य श्री! इस चातुर्मास में बीकानेर शहेर में आपने जो अमृत की वर्षा की है, उसके लिए बीकानेर श्री संघ आपका सर्वदा आभारी रहेगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हे विश्ववन्द्यमूर्ति ! आपकी आत्मा महान् है, आपका त्याग महान् है, आपकी तपस्या महान् है, और आपका ज्ञान दिव्य है। इस घोर अन्धकार के युग में भी आप हमें प्रकाश प्रदान कर रहे हैं। भारतमाता के लिए यह एक गौरव की बात है कि उसकी गोद में अभी तक आप सरीखे सन्त महात्मा उपस्थित हैं।

आप स्फटिक के समान निर्मल, चन्द्रमा के समान सौम्य तथा सूर्य के समान तेजस्वी हैं। सम्पूर्ण जैन समाज की हार्दिक मंगल कामना है की शासन देव आपको दीर्घायु करे, जिससे हमारी समाज का सर्वदा कल्याण होता रहे।

कार्तिक शुक्ला द्वितीया गुरुवार
ता. १८ अक्तूबर १९४४ ई०

हम हैं आपके चरणाश्रित,
बीकानेर श्रीसंघ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१४)

प्रातःस्मरणीय, परम प्रतापी, प्रखर विद्वान्, क्रान्तिकारी जैनाचार्य श्री श्री १००८ स्वर्गीय श्री विजयानन्द-सूरीश्वरजी (श्री आत्मारामजी) के वर्तमान पट्टधर, ज्ञान दिवाकर, गुरुकुल कुलपति, जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी के श्री चरणों में समर्पित—

❀ श्रद्धाञ्जलिः ❀

वन्दनीय गुरुवर ! जैन जाति के इतिहास में आज के दिन का महत्त्व सदैव स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा जब कि अपने तेज से समाज और देश को आलोकित करने वाली एक महान विभूति का हमारे कल्याण के लिये जन्म हुआ। हमारे आराध्य गुरुदेव अपने जीवन के ७५ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं और हमें उनके उपकार से अंशतः उऋण होने का, इस अवसर पर आपश्रीजी की हीरक जयन्ती (डायमण्ड जुबली) मनाते हुए, मौका मिला है, इस बात से कौन जैन अथवा भारतवासी होगा जो हर्ष और आनन्द से उल्लसित न हो। आपके व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति के जीवित आदर्श तथा जैन धर्म व समाज के देदीप्यमान दीप पर हम जितना गर्व करें, कम होते हुए भी यथार्थ है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महायोगिन ! संसार में लाखो ऐसे साधु सन्त वर्तमान हैं जिन के विषय में गोस्वामी तुलसीदासजीने कहा था कि 'नारि मुई घर संपति नासी, मुंड मुंडाय भये सन्यासी', परन्तु आप जैसे योगिराज के दर्शन दुर्लभ हैं जिन्हों ने १६ वर्ष की अल्प आयु में, उदीयमान नवयौवन में प्रवेश के समय ही गृह-त्याग कर कठिन फकीरी के व्रत को, जो जनसाधारण के लिये एक प्रकार की जिन्दा होते हुए भी मौत है, धारण किया। आप के वैराग्य का आदर्श कितना उचा है। संसार का मोह जाल आपको आकर्षित न कर सका, दुनिया के क्षणिक सुख साधन आप के हृदय को रजित न कर सके, विषय वासना की मृगतृष्णा नौजवानी में भी आप के चित्त को विह्वलित न कर सकी। कौटुम्बिक व्यक्तियों से नाता तोड कर जगत् के जड और नाशवान् पदार्थों से मुंह मोड कर और आत्मस्वरूप को प्राप्ति के लिये प्राणीमात्र से प्रेम सम्बन्ध जोड कर आपने साधु समाज के सन्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है।

भक्तभूषण ! आपके त्याग और वैराग्य की हम जितनी प्रशंसा करें, वह कम ही होगी। परन्तु आपश्रीजीने अपने एकमात्र आदर्श गुरुदेव श्री आत्मारामजी के मिशन को पूरा करने के उद्देश से जीवन भर जो साधना की है, उसका वर्णन करने में हमारी जिह्वा और लेखिनी दोनों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ही सर्वथा असमर्थ हैं। अपने व्यक्तित्व को गुरु के व्यक्तित्व में लीन करने वाले भक्तों के आप शिरोमणि है। गुरुदेव के नाम पर ही प्रत्येक संस्था की स्थापना करना आपकी नम्रता और विनय का सूचक है।

गुरुकुल कुलपते ! स्वर्गीय गुरुदेव की सरस्वती मन्दिर की स्थापना की अन्तिम भावना को कार्यरूप में परिणत करने के लिये आपने कठोर व्रत, कठिन तप तथा सतत् परिश्रम किया। उसी के फलस्वरुप आज से १८ वर्ष पूर्व गुरु की नगरी गुजरांवाला में श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पञ्जाब की स्थापना हुई। आज गुरुकुल का पौधा आप के आशीर्वाद से एक वृक्ष का रूप धारण कर चुका है और इसके पुष्प व फल समाज की भिन्न २ संस्थाओं में अपनी सुगन्धि फैला रहे हैं। भारत की पराधीन अवस्था में ऐसी आदर्श शिक्षण संस्थाओं की स्थान २ पर स्थापना कर आपने राष्ट निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक-कार्य किया है। आप के उपदेश से लाखों का उद्धार हुआ हैं, आप के प्रचार से जैनधर्म जीवित धर्मों में गिना जाने लगा है, आप के अहिंसा और दया के सिद्धान्त का श्रवण कर सैंकडों आदमियों ने मांसाहार, मद्यपान आदि का त्याग किया है परन्तु हे तपस्वीन् ? आप द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में की गई सेवाएं न केवल वर्तमान समाज का प्रत्युत भावि सन्तति का भी उद्धार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करने में समर्थ हैं। सम्यक शिक्षा का सदाचार से सम्बन्ध जोड आपश्रीजीने भारत की प्राचीन सभ्यता के आदर्श की क्षमता सिद्ध कर दिखाई है।

हमारे रहबर! हमें गर्व है कि पञ्जाब प्रदेश स्वर्गीय गुरुदेव की अतःस्वभावतः आपश्रीजी की भी कृपा दृष्टि का पात्र रहा है। हमारी हार्दिक भावना है कि आपश्रीजी की छत्रछाया और आशीर्वाद हम पंजाबियों को पंजाब में ही चिरकाल तक प्राप्त होती रहे। इस लिये हमारी करबद्ध विनती है कि गुरुदेव पंजाब पधार कर हमें सन्मार्ग दिखाने की कृपा करें ताकि गुरुकुल, महासभा, स्वर्गीय गुरुदेव की अर्धशताब्दि की तय्यारी, स्यालकोट के प्रसिद्ध मन्दिर की प्रतिष्ठा आदि कार्य सुचारुरुपेण सम्पन्न हो सकें। शासनदेव से प्रार्थना है कि वे आपको दीर्घायु करें ताकि हमें आज का दिन आप ही की छत्रछाया में मनाने का युगान्तरों में भी अवसर मिलता रहे।

कार्तिक शुदि द्वीतीया, २००१ — आपश्रीजीका चरणोपासक,
१८-१०-१९४४ — श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१५)

प्रातःस्मरणीय, अज्ञानतिमिरतरणि, कलिकाल कल्पतरुः न्याया‍म्भोनिधि, स्वर्गीय जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरजी महाराज के वर्तमान पट्टालंकार, परम पूज्य पंजाब केसरी जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरजी के चरण कमलों में सविनयादर समर्पित

अभिनन्दन पत्रम्

परम प्रतापी गुरुदेव !

आपश्रीजी आज के शुभ दिन गुरुभक्ति, समाजसेवा, धर्म-आराधना, शिक्षा प्रचार और अहिंसा प्रचार के पुनीत कार्यों में पूर्णतः रत अपने जीवन के ७४ सफल वर्ष पूर्ण कर, ७५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं, इस सुसंवाद मात्र से ही प्रत्येक जैन आनन्द से गद्‌गद् हो उठा है। हमारे इस हार्दिक हर्ष का कोई पारावार नहीं रह जाता जब हम इस विशाल मण्डप में आपश्रीजी की ही छत्र-छाया तथा पवित्र चरण कमलों में इस शुभ दिन के उपलक्ष में आपका हीरकजयन्ती-महोत्सव मनाने के लिये भारत के भिन्न २ भागों से हजारों की संख्या में अपने भाइयों को एकत्रित देखते हैं। कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी की कथन है कि ' महात्मनां कीर्त्तनं हि श्रेयो निःश्रेयसास्पदम् ' अर्थात् महात्माओं का गुणगाथा गान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मोक्ष प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन है। हमारा सौभाग्य है कि हमें आपश्रीजी जैसे आदर्श महात्मा और ओजस्वी वक्ता के अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार न केवल गुणगान का प्रत्युत पुण्य दर्शन तथा उपदेश श्रवण का भी सुअवसर प्राप्त हुआ है ऐसी दशा में हमारे हृदय आनन्द से प्रफुल्लित तथा नेत्र आनन्दाश्रुओं से परिपूर्ण हो, यह स्वाभाविक ही है'

परोपकारिन् महात्मन्! आपने अपने जीवन का एक २ क्षण हमारे कल्याण अथवा जैन समाज के उत्थान के लिये व्यय किया है। स्थान २ पर पैदल विहार कर अपने मधुर, सरस उपदेशामृत का जनसाधारण को पान कराना, आत्म स्वरूपसिद्धि के साधनभूत जिन मन्दिरों को बनवाना, सच्ची शिक्षा, धर्म भावना व सदाचार सिखाने वाले गुरुकुल, विद्यालय, कालेज आदि की स्थापना करना, परपीडन, परशोषण और और परसंहार में प्रवृत्त संसार को अहिंसा और शान्ति का पाठ पढना, भूगर्भ में भण्डारों में पडे हुए ग्रन्थ रत्नों को प्रकाश में लाना आदि कार्य आपके सेवामय जीवन के विशिष्ठ अंग है। पंजाब जैन समाज को समुन्नत तथा सुसंगठित बनाने के लिये ही आपकी आशीर्वाद से श्री आत्मानन्द जैन महासभा पंजाब का आविर्भाव हुआ था। महासभा का उद्देश्य यह है कि पंजाब श्री संघ को एक प्लेटफोर्म पर एकत्रित कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसकी सांसारिक, आध्यात्मिक, धार्मिक और बौद्धिक उन्नति के लिये हम सतत् प्रयत्न करें और महासभा को पूर्णतः पंजाब श्रीसंघ की प्रतिनिधि संस्था बनाएं। आप श्रीजी की कृपा से हमें महासभा रूपी एक एसे विशाल वृक्ष की प्राप्ति हुई है जिसकी छाया में हम एकहृदय, एकस्वर और एजनिष्ठ होकर संसार की जीवित तथा विकासोन्मुख जातियों की श्रेणी में खडे होने में समर्थ है।

गुरुभक्त, भक्तवत्सल !

आपके अनन्त गुणों में सब से समुज्ज्वल गुण संसार के सन्मुख गुरुभक्ति का अनुपम आदर्श रखना है। स्वर्गीय गुरुदेव की प्रज्वलित की हुई ज्योति को अखण्ड एवं अमर बनाने में आपने अपने आपको विस्मृत ही कर दिया है। गुरुदेव का काम उनका नाम, उनका मान आपको प्राणों से भी प्रिय है। सभी संस्थाओं की स्थापना गुरुदेव के पवित्र नाम पर करना आपकी नम्रता, विनय और गुरुचरण में अनुराग का द्योतक है। अपने शिष्यों व भक्तों पर भी आपकी कृपादृष्टि सदैव अनुग्रह तथा उदारता पूर्ण रही है। सच है—' गुरुभक्ति में है पाया तुझे एक मर्द लासानी। अन्जामे फर्ज में अपने तेरी है सच्ची कुर्बानी॥

पंजाब केसरिन्! वैसे तो समस्त भारतवर्ष और समग्र जैन जाति आपके उपकार से उपकृत हुई है परन्तु हम पंजाबियों के तो आप हृदय सम्राट, आदर्श नेता, सच्चे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मार्ग प्रदर्शक और एक मात्र आधार हैं। आपश्री के प्रत्येक नेतृत्व के अभाव में हमारी अवस्था जलहीन मीन समान होगी। कई वर्षों की साधना, निरन्तर प्रार्थना और हमारे पुण्योदय के फलस्वरूप आपश्रीजी का पंजाब में चिरकाल उपरान्त आगमन हुआ था। स्यालकोट के मन्दिर का प्रतिष्ठा महोत्सव और स्वर्गीय गुरुदेव का अर्ध-शताब्दी महोत्सव आपश्रीजी की छत्रछाया में शोभा देंगे। अतः हे पंजाब केसरीन्, हमारी विनती को स्वीकार कर शीघ्र पंजाब प्रदेश की ओर पधारें और इस उक्ति को यथार्थ करने की कृपा करें कि पंजाब वल्लभ का है और वल्लभ पंजाब का है।

आचार्य भगवन्! यदि हमारी अन्तरात्मा के उदगार सम्यक है, हमारे पूजा, पाठ, धर्म ध्यान, जप, तप, का कोइ फल है, हमारे तन, मन, धन का कोइ बल है तो हमारी शासनदेव से यही प्रार्थना है कि हमारे रौशनी के मीनार गुरुवल्लभ चिरायु हों और हमें तथा हमारी सन्तान को आपका शुभ जन्म दिवस मनाने का सौभाग्य आप ही के श्री चरणों में और पंजाब की ही वीरभूमि में प्राप्त होता रहे और आपश्रीजी के उपकार से विश्व के समस्त प्राणी सदैव इसी प्रकार उपकृत होते रहें।

कार्तिक शुदि द्वितीया, २००१
१९-१०-१९४४

श्री जी की चरणाराधिका,
श्री आत्मानंद जैन महासभा पंजाब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१६)

। श्री आदीश्वर भगवान विजयतेतराम ।

श्रीमतां मतिमतां विद्वन्मान सहसानां, अशेषदेश शिक्षा दीक्षा दानभाव्यग्री कृतांसानां, शेमुषीमुषित चेतसां सुचेतसां, " तथा श्रीमन्महामान्यानां, स्वनामधन्यानां अञ्जनाभानामिव साभानां, पांचाल (पंजाव) मराल मानसरसां, विहित जगदानंदानां, श्री १००८ मद्विजयानन्दानां (महाभिरामाणां आत्मारामाणां) पट्टधरप्रौढान्तेवासिनां पन्यासीनां निजाशीर्वचनरचनां शमित शिवेतराणां, नराणां उद्धन्तृणां जगंनमंगल कर्तृणाम् , हतृणामशेषकल्मषाणां, दातृणां विद्यादानस्य, अनवरत सच्छास्त्रा लोचन चिंता चुम्बितचित्तानां विद्या वित्तानां निजपाद पद्मपराग रागच्छाराछु रणप्रशस्तित मानव चित्तानां, प्रत्येक प्राणाप्राण वल्लभानां, श्री १००८ मद् विजयवल्लभभानां चरण सरोजयोभ्रमरायतामस्मन्मनांसि ।

पूज्याचार्यजी ! हम बहुत समय से आशा किये हुए थे कि आपका वचनामृत पान कर अपने को पवित्र करें, आज आपके शुभागमन से हमारी आशा लता में फुलों के साथ ही साथ फल भी लग आये। हमारे मन में बहुतसी उलझने पडी हुई हैं, अब आपश्री के सदुपदेश से वह सभी सुलझ जायगी। आपके सदुपदेशमें वह निराली शक्ति भरी हुई है कि जिसे सुनकर अत्यन्त पापी भी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मोक्ष का अधिकारी बन जाता है. प्रभुवर? अवश्य आप में प्रभु की विशेष कला है, जिससे आपका पतलासा भी शरीर जो दिन रात तपस्या करने से भी थकावट को अनुभव नही करता। आपने इस पतित संसार का उद्धार करनेके लिये ही जन्म लीया है, जो कि आप बाल्यकाल से ही आत्मोन्नति की ओर झुक गये थे। श्री सूरीश्वरजी आप केवल विद्या के ही भंडार नहीं है किन्तु एसा कोइ भी श्रेष्ठ गुण नही है जो आपको भूले हुए हो। भाषण शैली के साथ २ आपका विशेष गुण निष्पक्षता है। आप अपने भाषण में किसी मत को भी छोटा बडा नही समझते। आपके इसी गुण में लुब्ध हुई सारी जनता आपको पूज्य मानती है। आपकी जन्मभूमि आप जैसे रत्नों से ही ऊँचे आसन वाली है। आचार्यजी आपके पवित्र चरण कमलों से ही बडौदा राज्य का बडा औहदा है। अवश्य आपमें पूज्य पिता दीपचंद्र की शीतल तथा चमकीली चमक दमक है। धन्य है आपकी माता इच्छा-देवीजी को जिन्हों ने आप जैसे मोतीयों को जन्म दिया किसी ने सच कहा है:—

जननी जने तो भक्त जन, या दाता या शूर।
नहीं को जननी वांझ भली, काहे गवावे नूर॥

आप प्रभु के सच्चे भक्त, पूरे अभय दानी, आन पर जान देने वाले शूरवीर हैं। श्री स्वामीजी हम आप के गुण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्या २ वर्णन करे आपकी कृपा का वर्णन कैसे किया जा सकता है। आपके आदेश का फलस्वरुप श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कोलिज अम्बाला, श्री आत्मानन्द जैन स्कूल मालेरकोटला, श्री आत्मानन्द जैन मिडल स्कूल लुधियाना, महा विद्यालय वरकाणा, बालाश्रम उमीदपुर तथा महावीर जैन विद्यालय बम्बइ हैं। इनके साथ एक अपूर्व कार्य रायकोट में अभी हुआ है। वहां कोइ कल्याणकारी जैन मन्दिर नही था, वहां के जैन ही नही किन्तु अन्य सभी पुरुषों को मिलाकर एक विशाल मन्दिर का निर्माण किया।

इसके अतिरिक्त जैन मन्दिर तथा सभाए तो अनगिन्त है। आप जैन समाज में एक अलौकिक शक्ति है जो गुरु महाराज के बचन को नस २ में लिये हुए हो। प्रभुजी! हम क्या कहें हमारी तुच्छ वाणी में इतनी शक्ति कहां जो एक छोटी सी किस्ती से अपार समुद्र में चक्कर लगा सकें। हमारे किसी जन्म के शुभ कर्म का ही यह फल है जो आपके चरण कमलों की धूळी को सिर पर रखने का समय मिला है।

विनीत निवेदकः—

अध्यापक गण

श्री आत्मानन्द जैन मिडल स्कूल, लुधियाना।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१७)

जैन समाज के परम उज्ज्वलरत्न
परमोपकारी गुरुदेव के
चरण कमलों में

❀ श्रद्धाञ्जलिः ❀

जैनाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज के पवित्र चरणों में हम शीश नवाते हैं।

आज हम नारोवाल निवासी अपने नगर में श्री बिजय वल्लभसूरीश्वर महाराज के शुभागमन पर अपने आप को धन्य तथा कृतकृत्य मानते हैं और आपके ४६ वर्ष उपरान्त इस भूमि को अपने चरण कमलों से पवित्र करने पर हम आप का हृदय से धन्यवाद करते हैं. यद्यपि जिह्वा तथा लेखनी आपकी स्तुती और गुणानुवाद करने में नितान्त ही असमर्थ है तथापि महापुरुषों तथा साधु-सन्तों को भक्ति से अर्पण किया हुआ पत्र पुष्प का उपहार ही सन्तोषजनक होता है अतः हम लोग श्रद्धारूपी कुछ पुष्प आपके चरण कमलों में विनय पूर्वक भेंट करते हैं और आशा करते हैं कि आप इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करके हमारा मान बढावेंगे।

श्रीमानजो ! आप के समान महान व्यक्तिने १७ वर्ष की अवस्था में ही सर्व ऐश्वर्य तथा धन सम्पत्ति का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परित्याग करके ईश्वर भक्ति, सर्व लोकोपकार तथा स्वतन्त्र देवी को अपना ध्येय बनाया और अपना बहुमूल्य जीवन का उत्तम और अधिकांशभाग धर्मनिष्ठामें प्रयुक्त करके जैनधर्म की मान प्रतिष्ठा को बढाया, आपने जीवन में आए सहस्त्रों कठिनाइयों और कष्टों का वीरता पूर्वक सामना किया। आपने बम्बई, बडोदा, राजपूताना इत्यादि में ही पैदल सहस्त्रों मील का सफर तै करके लाखों मनुष्यों को ईश्वर पूजा भक्ति का रसास्वादन कराया और उनको मनुष्यत्व के सच्चे मार्ग पर लाने की चेष्टा की। आचार्य जी। आत्म मार्ग में लीन रहते हूए भी सांसारिक भव्य जीवों के उपकारार्थ आपने भारतवर्ष के कोने २ में विद्या का प्रचार किया और विद्यालयों की स्थापना की तथा श्री आत्मावन्द जैन कौलेज अम्बाला, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द हाइस्कूल मलेरकोटला, श्री आत्मानन्द जैन हाइस्कूल लुधियाना, श्री पारसनाथ जैन विद्यालय वरकाना, श्री उमेदपुर बालाश्रम, श्री महावीर जैन महाविद्यालय बम्बइ इत्यादि अनेकों पाठशालायें आपके यत्नों का फल है जिनकी स्थापना आपने अपने गुरुजीके पवित्र नाम पर की।

हे धर्माचार्य! आपकी शिक्षा का एक २ अक्षर और एक २ वाक्य अमृत का घूंट है जिसे पीकर मनुष्य ईश्वर भक्ति में लीन हो जाते हैं और आपके पवित्र आदर्श

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

जीवन के श्रद्धालु होकर जीवन पर्यन्त आपके सेवक बन जाते हैं आपके उपदेश द्वारा सहस्रों अज्ञानी जन प्रकाश को प्राप्त कर सत्यमार्ग की पराकाष्ठा तक पहुंच चुके हैं। स्वामीजी ! हम आपके शुभागमन का हृदय से स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि आप जैसे महान और प्रतिष्ठित व्यक्ति के अनुयायी होकर हम लोगों के हृदय से परस्पर प्रेम और ईश्वर भक्तिका विचार उत्पन्न होगा और परस्पर द्वेष को छोडकर आपके उपदेश के अनुसार चल कर ईश्वर भक्ति के सच्चे मार्ग को प्राप्त होंगे और अपने जीवन को सुधारने में उत्तीर्ण होंगे।

आपके श्रद्धालु सेवक,
श्री आत्मानन्द जैन सभा, नारोवाल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१८)

ॐ

❀ अभिनन्दन–पत्र ❀

प्रातःस्मरणीय जैन धर्म दिवाकर, देशोद्धारक, स्वनाम धन्य न्याम्भोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरिजी महाराज के पट्टधर, जैन धर्म धुरेन्द्र, व्याख्यान वाचस्पति, आचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयवल्लभसूरीजी महाराजकी पवित्र सेवा में होशियारपुर निवासी श्वेताम्बर जैन संघने आचार्यश्रीजी के शुभागमन पर सादर समर्पण।

प्रभो !

आपने जो उपकार जैन समाज पर किये लेखनी लिखने में और जिह्वा बोलने में असमर्थ हैं। आपने श्री महावीर जैन महा विद्यालय बम्बइ, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाना, जैन बालाश्रम उमेदपुर, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कालिज

महावीर जैन महा विद्यालय बम्बइ, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाना, जैन बालाश्रम उमेदपुर, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कालिज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अम्बाला तथा श्री आत्मानन्द जैन महासभा पञ्जाब जैसी महान् संस्थायें स्थापित करके जैन जाति में विद्या का प्रचार किया। कइ नवीन जिन मन्दिर बनवाये तथा पुराने जिन मन्दिरों और प्राचीन पुस्तक भण्डारों का जीर्णोद्धार कराया।

कृपानिधे !

स्वर्गवासी गुरुदेव श्रीमद् विजयानन्दसूरि के अन्तिम आदेश के अनुसार पञ्जाब संघ की रक्षा का भार अपने सर पर लिया और जिस प्रकार इसे सम्पूर्ण कर रहे हैं वह सूर्य के प्रकाश कि तरह प्रकाशित है।

कृपालु !

आपकी आयु इस समय ७० वर्ष से अधिक है उस वृद्धावस्था में भी आप में नवयुवकों जैसा उत्साह प्रगट हो रहा है। आपकी समाज सेवा का कहां तक वर्णन किया जावे इस पत्र में तो क्या बडी पुस्तक में भी नहीं समा सकता। इस उपकार के लिये जैन समाज आपका ऋणी है।

अन्त में शासनदेव से प्रार्थना है कि आपश्रीजी की छत्रछाया हमारे सिरों पर चिरकाल तक बनी रहे। और हम आपकी आज्ञानुसार अपने जीवन को सार्थक बनाने व समाज सेवा करने का प्रयत्न करते रहें।

हम हैं आपके सच्चे सेवक,
श्वेताम्बर जैन श्रीसंघ, होशियारपुर.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१९)

ॐ

श्रीमान् पूज्य मान्यवर सन्त शिरोमणि श्री स्वामी १००८
जगत प्रकाश श्री सुरेश्वर स्वामी श्री विजयवल्लभ
जी की सेवा में

❀ मान-पत्र ❀

पूज्य स्वामी ईश्वर का रूप हो सन्देह नहीं,
दर्शनों से पूत होती कहो किस की देह नहीं ?
मूर्ति सत्य व्रत की और प्रेम का अवतार हो,
कान्ति शोभा क्यों न हो जब धर्म पर उपकार हो।
शांति के भंडार स्वामी सिद्धियों को क्या कहें,
हाथ बान्धे पहर आठों चरणों में सारी रहें।
दयालुता के देवता हो पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी प्रभु,
दाता सकल सम्पत्ति के जगत में मानी प्रभु।
जिस पे कृपा हो गई उस के मिटे सन्ताप सब,
दुःख द्वन्द्व रहे न कुछ भी और कट गये पाप सब।
लोक में मानित हुआ बहु यश को भी पालिया,
लोक यह संवार के परलोक का तोशा लिया।
कलि व्याल से पीडत प्राणी का सहारा आप हैं,
जो भी आता शरण में देते मिटा सन्ताप हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस लिए आये शरण में आप की स्वामी हैं हम,
हो कृपा हम दीनों पर दुःखी वडे स्वामी हैं हम।
श्री सनातन धर्म हाइ स्कूल इक जम्मू में हैं,
धर्म का प्रचार उस से हो रहा जम्मू में हैं।

बीस वर्षों से रहे कर सेवा जाति देश की,
है रही कृपा सदा इस संस्था पर सर्वेश की।
पर दिनों के फेर से है एड बन्द सरकार की,
आप के दर्शन हुए कृपा हुइ करतार की।

आप की दृष्टि दया से कष्ट दूर हो जायेंगे,
जो निरुत्साह हो चुके थे अब वे शूर हो जायेंगे।
जाति को सेवा में तत्पर हों कृपा हो आपकी,
गुण गायें जन्मान्तर तलक नैया डूबे अब पापकी।

माना चन्द भाइ हमारे हम से कुछ नाराज है,
देख कर इस कार्य को वे हो रहे नासाज हैं।
कार्य है यह धर्म का आओ सभी मिल कर करें,
रोडे अटकायें नहीं मिलकर चलो आगे बढें।
आर्थिक आपत्ति से बढ कर न आपत्ति और है,
संस्था को सरकार से न मिली अब तक ठौर है।
स्वामीजी इस संस्था की नैया पढी मंझधार में।
आप की हो कृपा तो आजाये झट इस पार में।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सारी हिन्दु जाति के बच्चे यहां आ पढते हैं,
चाहे सिक्ख क्षत्री ब्राह्मण जैनी वैश्य भी पढते हैं।

विद्या का कह स्रोत है बहता रहा बहता रहे,
आप से यह प्रार्थना है यह स्रोत नित चलता रहे।

आप हैं समरथ स्वामी प्रेम के अवतार हो,
प्रेम दीवाने पे कृपा संस्था का उद्धार हो।

निवेदक—

एस. आर. चोपडा प्रिन्सिपल,
श्री सनातन धर्म हाई स्कूल, जम्मू.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२०)

श्री संघ अभिनन्दन पत्र

वडोदरा

॥ वन्दे श्री वीरमानन्दम् ॥

दिष्टया वल्लभएषतारकपति सन्मङ्गलात्मास्फुटं ।
प्राक्चन्द्र प्रभवस्ततः परगुरोर्हर्षाद् गुरुत्वंगतः ॥
जाग्रत्काव्य तयाततः किलततो दुर्वादिशैलेऽशनी ।
भावं बिभ्रद् भूतपूर्वमधुना सूर्यासनं लब्धवान् ॥१॥

पूज्यपाद सद्गुणालंकृत शासनप्रभावक समाजोद्धारक आचार्येश १००८ श्रीमान् विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज
नी सेवामां, मु. बीकानेर.

पूज्य अनन्य एकनिष्ठ गुरुभक्त कर्मयोगीश्री !

आपश्री, नूतन वर्षना मांगलिक द्वितीयदिने वर्ष ७५ मां प्रवेश करो छो ते हीरक-महोत्सव प्रसंगे श्रीसंघ हार्दिक अभिनन्दन अने शुभेच्छा पाठवे छे.

रत्नकुक्षी माता इच्छानी अंतीम इच्छा—“ बेटा ! तुं ने तो श्री तीर्थंकरने चरणे सोंपुं छुं. तारूं कल्याण थशे.” ए आशिर्वाद शिरोधार्य करी यौवनवय प्रारंभेज सांसारीक मोहने तिलांजली आपी चारित्र धर्म अंगीकार करी श्री तीर्थंकरना चरणे जीवन समर्पी अपूर्व मातृशक्ति दाखवी

१०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छे. खरेखर ! महात्मन् ! आपश्री पिताजी दीपचन्दभाईना दीपक साथे जगतदीपक थया छो।

सत्यान्गवेषी नीडर क्रांतिकारी अद्वितीय गुरुदेव श्री आत्मारामजी उर्फे युगप्रधान आचार्येश १००८ श्रीमान् विजयानन्दसूरीश्वरजी महाराजश्रीना पगले पगले चाली सद्धर्मनी प्ररुपणा करी सन्मार्गी श्रावको बनावी जीर्ण जिनालयोना जीर्णोद्धार अने आवश्यक स्थळोए नूतन जिनालयो-अंजनशलाका प्रत्तिष्ठा करावी दर्शनोद्योत कर्यो छे। तेवीज रीते श्री गुरुदेवनी अन्तीम इच्छानुसार पंजाब, राजपूताना, मारवाड, सौराष्ट्र, गुजरात, मुंबइ, पुना वीगेरे स्थळोए वीकट विहारो करी श्रावक-श्राविका उभयना अभ्युदयार्थे श्री सरस्वती मन्दिरो-पाठशाळा, कन्याशाळा, लायब्रेरी, स्कूल, कोलेज, विद्यार्थीगृहो स्थापी ज्ञानज्योत प्रगटावीने श्री गुरुऋण अदा कर्युं छे।

विशेषमां "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः" ए सूत्रनुं रहस्य अनेक भव्य जीवोने समजावी देशविरति-सर्व विरतिना पंथे वाळी चारित्र धर्म दीपाव्यो छे।

" सवीजीव करुं शासनरसी " ए महामन्त्र आपश्रीना हृदयपटमां अंकित थयेल होवाथी भावोल्लासपूर्वक श्री महावीर भगवन्तनो सन्देश विश्वव्यापक बनाववा-जाहेर व्याख्यानो पुस्तक-प्रकाशन-आलेखननुं कार्य अवरतिपणे सतत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करी रह्या छो, तेथी अनेक राजवीओ, मुसळमान आदि-यवन जातिना लोको तथा जैनेतर समाज जिनशासन प्रत्ये सद्भाववाळा थवा पाम्यां छे। केटलाक तो दारु-मांसादि सप्त व्यसन वगेरे छोडी मार्गानुसारी धर्मने पाम्या छे, श्रावक व्रतधारी बन्या छे अने चारित्रधर्म पण अंगीकार कर्यो छे।

वसुधैवकुटुंबकम् ए विश्वबंधुत्व भावनाथी प्रेराइ जन-सेवाना कार्यो-रुग्ण माटे औषधालयो, दुष्काळग्रस्त माटे सदाव्रतो, निराधार माटे राहतकार्यो, बहेनो माटे वनिता-श्रम विगेरे संस्थाओ आपश्रीना सदुपदेशथी थवा पामी छे.

पर्यटन-विहारमां ज्यां ज्यां लोकोमां अज्ञान-व्हेम, कुसंप अने कुरीवाज कन्याविक्रयादिनुं साम्राज्य प्रसरेलुं आपश्रीने समजायेल छे त्यां त्यां ते दूर कर्या सिवाय आपश्री रह्या नथी।

धर्म अने राष्ट्र बन्नेनी सेवा करी आप श्रीसंघ-गुज-रातना गौरवरुप भूषण समान बन्या छो। श्री गुरुदेवने स्वात्मार्पण करी तदात्मभाव साधी आपश्री पण श्री आत्मा-नन्द स्वरुप बनी मानापमाननो परवाह वगर कर्मण्येवाधि-कारऽस्ते माफलेषु कदाचन ए महामूला मन्त्रने जीवनसूत्र समजी दीक्षा प्रारंभथी अद्यापि पर्यंत निष्काम प्रवृत्तिमय जीवन वीतावेल छे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खरेखर ! आपश्रीए अनन्य एकनिष्ठ गुरुभक्त कर्मयोगी बनी जन्मभूमि वडोदराना श्रीसंघने विशेष गौरववंत बनाव्यो छे, ते बदल श्रीसंघ हार्दिक अभिनन्दन अर्पे छे अने विनवे छे के–एक वखत गुजरात तरफ विहार करी जन्मभूमि वडोदराने पावन करो एज अभ्यर्थना ।

आपश्री, श्रीसंघ सेवा अने शासनोद्योत कार्यों विशेष करवा नीरामय नीराबाध दीर्घायु थाव एम वडोदरानो श्रीसंघ प्रार्थे छे—शतायुर्भव ।

श्री शासनदेव अने स्वर्गस्थ गुरुदेवश्री आत्म–कांति–हंस आप पर अमी वरसावो अने श्री जिनशासननी प्रभावना करवामां सहायभूत थाओ एज शुभेच्छा ॐ शांति ॥

सं. २००१ कार्तिक शुद २
गुरुवार

आपश्रीना आज्ञांकित,
श्रीसंघ–वडोदराना १००८ वार
विनम्र वंदन.

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

(२१)

पूज्यपादाचार्यश्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरजन्महिरकमहोत्सवे

॥ गुणकीर्तनात्मकं काव्याष्टकम् ॥

(रचयिता–हीरालालतनुजो मनःसुखलाल)

वसंततिलकावृत्तम्

देशे सुपश्चजलराशिविराजमाने,
जाता मुनीश्वरा विजयात्मरामाः ।
यस्य प्रभाववशतो जिनराजधर्मः,
प्रविस्तृतो दिनकरस्य यथा प्रकाशः ॥

शिष्यप्रशिष्यसमुदायविशालवृक्षो,
विभ्राजते जगति ज्ञानक्रियाभिरामः ॥
यस्योपदेशमनुलक्ष्य जनाः सुखेन,
कुर्वन्ति दूरमचिरान्निजपापतापान् ॥

मुख्योऽस्ति वै विजयवल्लभसूरिवर्य–
स्तारागणेषु रजनीपतिरेव श्रेष्ठ- ।
बोधं ददाति विहरन् बहुदूरदेशे,
दूरस्थभानुरपि पङ्कजबोधदाता ॥

विद्याप्रचारमथ जीवनकार्यमेषाम्,
तदर्थमेव सततं कुरुतेऽनुबोधम् ।
विद्यालयाश्च विशदा गुरुकूलवर्या–
स्तेषां प्रयासजनिता बहुशः प्रशस्ताः ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पञ्जाबदेशवनकेसरी विश्वख्यातो,
दूरं विहारमथ सः कुरुते सदैव ।
किंतु प्रशांतमुखकांतिसुशांतचित्त-
श्चंद्रस्य कांतिरनिशं किमु नैव शांता ॥

वक्तुं गुणांस्तव मुनीश्वर कः समर्थः,
स्वल्पः कृतस्तदपि स्वीयधिया प्रयासः ।
बालोऽपि किं करयुगं प्रविसार्य सद्यो,
नैवं करोति किमु वर्णनमम्बुराशेः ॥

जन्मस्य मे सफलतां गुरुदेव मन्ये,
दृष्टोऽद्य देव हिरकोत्सव एव धन्यः ।
प्राप्यन्त एव बहवो खलु रत्नजाता-
श्चिंतामणिर्ननु लभेत कदाचिदेव ॥

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्

सूरिः श्रीविजयादिवल्लभमुनिर्जीयात् सदा भूतले ।
येनोच्चैर्धृत एव भूमिशिखरे श्रीजैनधर्मध्वजः ॥

आत्मानंदसभा (मुंबइ) सदैव जयतां सम्प्राप्य छायां शिताम् ।
कुर्याच्च जिनशासनस्य महतीं सेवां मनःसौख्यतः ॥

संवत २००१
कार्तिक शुक्ल द्वितीया

श्री आत्मानन्द जैन महासभा-मुंबइ.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२२)

न्यायांभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराज के पट्टधर आचार्य श्रीमद् विजयवल्लभसूरिजी महाराज का

सन्देश

परम श्रद्धालु सज्जनो !

आप श्री आत्मानन्द जैन कालेज पंजाब अम्बाला शहर से भली भांति परिचित हैं, आप लोगों के त्याग और तपश्चर्या के बल पर ही यह आज तक इस उन्नत अवस्था को प्राप्त हुआ है।

दुर्भाग्यवश आज पंजाब की दुर्दशा हो गई। यही कारण है कि आज मुझे आप सज्जनों को आग्रह करना पड रहा है।

यह कालेज पूज्य स्वर्गवासी श्रीगुरुदेवका कीर्तिस्तंभ है। इस को पूर्व स्थिति में आर्थिक सहयोग देकर कायम रखना आपका धर्म है।

इस महान् संस्था को आप लोग पूरी २ आर्थिक मदद देकर अपनी उदारता का परिचय देंगे, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है। सुज्ञेषु किं बहूना

विजय वल्लभसूरि का धर्मलाभ

बीकानेर — वि० २००५ श्रावण पूर्णिमा

श्री रामपुरीया जैन भुवन — वीर सं० २४७४ आत्म सं० ५३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२३)

❀ मान-पत्र ❀

सेवामें श्री श्री श्री १००८ विजय वल्लभसूरीजी महाराज

यद्यपि आपका आगमन गुजरांवाला में १६ साल के बाद हुआ है लेकिन शहर निवासीयों में आपकी पुरानी याद अब तक ताजा है। आपके पवित्र चरणों की बदौलत गुजरांवाला आज एक स्वर्गका नमूना बना हुआ है। आप जैसे धर्मात्माओं के कारण ही हिन्दोस्तानियों की उमेदें बावस्ता हैं। आप एक अच्छे त्यागी और हितैषी हैं। हर हिन्दोस्तानी विला लिहाज मजहबो मिल्लत आपकी इज्जत करता है।

आप मुल्क के लिये भी सच्चे रहबर हैं, आपका खद्दरका संदेश मुल्क के लिये बेहतरी और बहबूदी का बायस है। आपकी संजीदगी बुर्दबारी और जफाकशी के लिये हमारे पास कोइ लफज नहीं जीनसे आपकी नेक आदत की तारीफ कर सकें। आप मुकम्मल तौर पर दुनियावी ख्वाहशातसे वालातर है।

आपके दर्शनोंसे पापीयों के पाप भी दूर हो जाते हैं और गुमराह भी सीधे रास्ते पर चल सकते हैं।

आपको इल्मसे इतनी महब्बत हैं कि आपने जाबजा गुरुकुल खुलवाये हैं जो कि लडकों के लिये उन्नति का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बायस हैं और आपकी याद ता–कियामत लोगों के दिलो में याद रहेगी। हम मेम्बरान कमेटी बजाजा गुजरांवाला आपका धन्यवाद करते हैं जो आपने हमारे पर महेरबानी करके हमको दर्शन देकर कृतार्थ किया है।

हम हैं आपके

३१ मई १९४० — धी पीस गुडस मर्चन्टस एसोसीएशन

गुजरांवाला — गुजरांवाला।

---

(२४)

❀ मान–पत्र ❀

बपेशे खिद्‌मत जनाब जैनाचार्य श्रीमद् विजयवल्लभस्वामीजी।

पेशवाये कौम व रहनमाये मिल्लत। हम मेम्बरान म्युनीसीपल कमीटी शहेर गुजरांवाला जो बाशिंदगान शहर गुजरांवाला की नमायिंदगी करते हैं। अपने तवारीखी शहर जो कि शेरे पंजाब महाराजा रणजीतसिंह साहब की जन्मभूमि हैं। और जिस भूमिने सरदार हरिसिंह नलवा जैसे बहादर जर्नेल को जन्म दिया उस भूमिमें आपकी आमद पर आपको खुशआमदेद करते हैं।

जनाब के तशरीफ लानेसे जो खुशी हमलोग अपने दिलोमें महसूस कर रहे हैं। जबान में उसके ब्यान की

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

ताकत नहीं, बल्कि दिलने भी यह समा इससे पहेले कम ही मालूम किया होगा।

हम नमायिंदगाने शहर बल्कि हर समजदार ईन्सान यकीन करता है कि दुनिया के सारे निजाम और जिंदगी के इस चक्रमें सबसे बडी चीज सिर्फ एक बलन्द कैरेकटर है जिसे दूसरे लफजों में बलन्दे एखलाक और मजहबी नुक्ता निगाह से दयानतदारी कहना चाहिये। यही एक चीज है कि जब किसी रहनमाये कौम को मिल जाये और कुदरत के बेबहा खजाने इस नेमत से उसे मालामाल करदें तो कौमकी नाव, जिन्दगी के मजधार से पार हो जाती है।

महोतरिम बुजुर्ग !

आज दुनिया का हर सही उलदमाग सखस इस हकीकत का कायल है कि इन्सानी जिन्दगी की कामयाबी के लिये अदूमतशदद का रास्ता ही सही व दुरस्त है।

आप अदूमतशदद के फलसफा के अलमबरदार हैं। और मुल्क के कोने कोनेमें इसकी सदा लगाते फिरते हैं। सिर्फ इसी आत्मिक खूबीकी वजहसे हमारे सर आपके सामने श्रद्धासे झुक जाते हैं।

हम मिम्बरान् इस निश्चय और यकीन के साथ पूरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अदब और गहरी अकीदतसे यह मानपत्र पेश करने की इज्जत हांसल कर रहे हैं।

हम जानते हैं कि आपमें वोह खूबियां मोजूद हैं जो एक सच्चे रहनमा के लिये जरुरी हैं।

रहनमाये कौम !

आपने छोटी उमरही से गृहस्थ और अरयाळदारी के जंजाळोंको त्याग दिया। गोया आपने वक्त की आवाज को उस वक्त कबूल किया जबकि हम जैसे लोक इस आवाज को सुनने के लिये त्यार न थे। जिन्दगी के मजे और गृहस्थ की एश परस्तियां कितनी भी सुल्ज कर वर्ती जायें वोह कौमी कुर्बानियों की राहमें कभी न कभी एक एसे पत्थरका काम देती हैं जिससे रास्ते में रोक और अटक पैदा हो जाती है। यह जानते के बावजूद कि आपकी जेबें माळो दोळत से खाली हैं हमे यकीन है कि आपको गनी और बेपरवाह दिल बखशा गया है।

सच है—" तवंगरी बदिळस्त ना बमाल " इस लिये आप उन उंचे लोगोंमें से हैं जिन पर दुनिया और दुनियादार कभी काबू नहीं पा सकते। आपकी सादा जिन्दगी और सारे हिन्दोंस्तान का पैदल सफर करना पता देता है कि आपको दुनिया के आराम से न महब्बत है और न उसके लिये दिल में ख्वाइश है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप की इल्मी खिदमात—

विद्यालयों और गुरुकुलों का एक मुंजम सिल-सिला आपकी इल्म दोस्ती का खुला हुआ सबूत है, जो हमें मजबूर करता है कि हम अकीदत के फूल आपकी खिदमत में पेश करें। और हमें यकीन है कि आंजनाब की बलन्द पाया नसीहतें हमें और अहले शहर के लिये सच्ची रह नमाइ का मूजब होंगी। हमें यह मालूम है कि जनाब एक खास मजहबी जमायत–यानि जैन मजहब से तालुक रखते हैं जो अपने अमल के लिहाजसे हिन्दोस्तान की सबसे बेजरर जमायत है। दर हकीकत मजहबकी रुह भी यही है कि इन्सान को दरिंदगी से दूर रखे और उसके इखलाक को रुहानियत के नुकताए निगाह से रोशन करे,

"मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना,
हिन्दी ही हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा।"

इस लिये हम पूरा यकीन रखते हैं कि जनाब के तशरीफ लाने से शहर के मुखतलिफ फिरकों में प्रेम की रुह फूंकी जायगी और सब लोग आपस में भाइयों की तरह रहना सीखेंगे। आप हमारी इज्जत व एहतराम के इस नजराना को कबूल फर्माइये।

हम हैं आपके खिदमत गुजार,
मिम्बरान् म्युनिसीपल कमीटी
गुजरांवाला

ता. ३१–५–४०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२५)

❀ मानपत्र ❀

पवित्र सेवामें पंजाब केशरी कलिकाल कल्पतरु परम उपकारी परम कृपालु परम दयालु महायोगीश्वर रेहबरे कौम, हमारे सरताज, हमारे शृंगार और हमारे प्राण परम पूज्य श्री जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद्-विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज साहिब !

गुरुदेव !

आप जैसी उच्च हस्ती का इस क्षेत्र कुशपुर (कसूर) जो कि श्री रामचन्द्जी के सुपुत्र महाराजा कुशका बसाया हुआ है कदम रंज फर्माना हम लोगों के लिये इतना बायसे खुशी व फखर है कि जैसे कुश जैसे सुपुत्र को अपने परम पूज्य पिताश्री रामचन्द्रजी के पावन करने से हो सकता है।

आपश्री के खुश आमदेद के लिये आज हर नर-नारी का चहेरा पूर्ण खुशी से खिल रहा है। एसी पवित्र हस्तीकी आमद जिन के दर्शन की खुआइश का समुन्दर मुदत से लोगों के दिलो में ठाठें मार रहा हो क्यों न बायसे मुसरत हो। फर्दों बशर का तो कहना ही क्या है आज तो कुर्रा हवाईने भी अपनी खुशीका सबूत इस बात में दे दिया है कि हर वृक्ष पर एक नई रंगत वा गुलजार हो रहा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूज्य पिता !

आज तो इस नगरी का एक एक जर्रा जानदार व बेजान मारे खुशी के फूला नहीं समाता है। हरे हरे पौदों का लहराना और सिजदा के लिये झुकना बुलबुलों का गाना और परिंदो का चहचहाना इस बातका अमली सबूत है। नगर निवासी चकोर दिलोंको आज साक्षात् चन्द्रमा के दर्शन नसीब हो रहे हैं।

परम पूज्य पिताजी।

आपके दर्शन और अमृतमय वाणी के लिये चिरकालसे दिल तडप रहा था। शायद यह हमारी कर्मरूपी गहर का सबब था या हमारी नगरी के प्रसिद्ध नाम (कसूर) के ही फल का नतीजा था कि आपने एक सच्चे पिता के लिये अपने कुशको सचमुच कुशाका ही बना हुआ समजे रखा जिसका कारण इस बात से भी जाहर हो रहा है कि आज पूरे सोलह साल के बाद यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मोहतरिन बजुर्गवार !

छोटे पुत्रकी तरफ निगाहे नाज रखना भी हमारी तुच्छ बुद्धि में अनुचित नहीं है। कृपानिधान ! इतना अरसा विसारे रखने पर भी जो खुशी आज इस नगर निवासीयों को हो रही है वह ब्यान करने से बाहर है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपके प्रवेश पर हमारे आनन्द का समुन्दर लहेरे मार रहा है।

श्री आचार्यवर !

हमारी जबान में इतनी ताकत और कलम में इतनी जुंबश नहीं कि अपने एसे सच्चे त्यागी वैरागी परम पिता के आगे चन्द टूटे फूटे इल्फाज के मानपत्र के सिवाय कोई और तोफा बतौर श्रद्धांजलि पेश कर सकें।

श्री मान्यवर, पंजाब केशरी और आनंदभूमि के आधार! आपश्रीजी के हम पर कमाल महेरबानी और नजरे अनायत का ही यह नतीजा है कि आज जैन जगत में इस पंजाबकी भूमिका भी गिनती में शुमार होने लगा है। आपने जो जो कष्ट अपने गुरुदेव की भूमि के लीये सहन किये हैं उनका आभार हम क्या हमारी आयंदा नसलें भी अहसानमन्दी की नजर से देखा करेंगी।

गुरुभक्त !

आप जिस गुरुदेव के पाट पर सुशोभित हैं उनके नामनामी (श्रीमद् विजयानन्दसूरी–आत्मारामजी महाराज) से कौनसा देश और कौनसा बशर वाकिफ नहीं है। आपने अपनी काबीलीयत व खुश इखलाकी से उनके नामको चार चान्द लगा दिये हैं। जिस मिशनको वे अधूरा छोड गये थे आपने आज उसको पूर्ण रुपमें करने में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोई दकीका फरोगुजाश्त नहीं किया। विद्याकी कमी के जिस तौर पर आप पूरा कर रहे हैं वोह काबले तहसीन है। इसका फलरुप आज हम समाज में मुखतलिफ विद्यालयों, स्कूलों, कोलिज, गुरुकुल आदि की शकल में देख रहे हैं। इस पर तुर्रा यह है कि यह सब संस्थायें आपके गुरुदेव के नामनामी परही स्थापित हैं। इस लिये गुरुदेव! आप सचमुच श्री राम जैसे आज्ञाकारी सुपुत्र साबित हुए हैं। जहां तक हम देख रहे हैं और जहां तक जैन जगतको ईस आपकी कृपा दृष्टि का नाज हासिल है शायद ही आज कीसी ओर भूषण का हो। जैन समाज *ही नहीं भारत वर्ष इस आपकी असीम कृपा का अति आभारी है।*

संगठन और त्याग के लासानी देवता! आपने बचपनसे ही इस संसार को असार जानते हुए दुनिया के तमाम बन्धनों को छोड दिया और आप एक बालब्रह्मचारी की सच्ची मूर्त्ति हैं। आपका दयामय सन्देश, अमृतरुपी वाणी, शीतल स्वभाव, इल्मी काबलीयत, तेजरुप मस्तक, हर फर्दो बशरको अपना गरवीदा बना लेता है। जैन मुनिसंमेलन अहमदाबाद (गूजरात) इसकी एक जीतीजागती मिशाल है।

आपकी तेज और अमृतरुपी वाणी में इतनी शक्ति है कि श्रोतागण आपके अनुयायी हो जाते हैं। इत्तहाद और संगठन उनकी रग रग और नस नस में भर जाता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। आप पैदल विचर कर और अजहद तकलीफें और मुसिबतें सहन करके 'अहिंसा परमो धर्म' और संगठन का नाद बजा रहे हैं। और हजारों आत्माओं के उनके विविध विषयों के त्याग कराने पर आपश्रीजी कल्याण दाता बन रहे हैं। इस लिये सूरिजी महाराज! हम कसूर शहर के निवासी आपकी यहां पर तशरिफ आवरी पर अजहद मशकूर व ममनून हैं और आपका तह दिलसे स्वागत करनेमें सरे तसलीम खम हैं और श्री शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि आपका शीतलसाया हम पर चिरकाल तक रहे और हम इस कल्पवृक्ष के साया तले आनन्द लेते रहें।

"या रब रहे सलामत वल्लभ गुरु हमारा"

हम हैं आपके चरण रज,
सकल श्रीसंघ कसूर शहर।
१९४२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२६)

श्री वीतरागाय नमः

'श्रद्धा के फूल'

श्री १००८ श्री विजयानन्दसूरीश्वरजी महाराज के पट्टधर पंजाब केसरी आचार्य श्री विजयवल्लभसूरिजी महाराज के कर कमलों में श्री आत्मवल्लभ सेवक मंडल की तर्फसे समर्पित—

जैसे बादलों की घटाओं को देखकर मोर नाचने लगजाता हैं, वसन्त ऋतुके आने पर कोयल अपना मीठा गाना शुरु करदेती है ऐसे ही पूर्ण श्रद्धासे भरेजाने पर हम कुछ टूटे-फूटे शब्द जबरदस्ती लिखने पर विवश हुए आपकी सेवामें भेट करते हैं।

आपश्रीजी का जन्म धर्मक्षेत्र बडोदा निवासी शेठ दीपचंदजी की धर्मपत्नी श्रीमती इच्छादेवी के उदरसे सं. १९२७ कार्तिक शुदि दूज आजके ही शुभ दिनको हुआ। बालपनसे ही माता-पिता का साया सिर परसे उठ गया। स्वभावसे ही आपका खानदान धर्मकार्यों के लिये प्रसिद्ध था। सौभाग्य से आपको जैन महात्माओं का सत्संग भी मिल गया जिसका प्रभाव यह हुआ कि आपका मन वैराग्य के रंगमें रंगजाने से सं. १९४४ में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपने दीक्षा लेली। थोडे ही दिनोंमें आपने कइ शास्त्रोंका अभ्यास कर लिया। आपकी इस योग्यता को देखकर आपके पर दादा गुरुश्री विजयानन्दसूरि आत्मारामजी महाराजने आपको अपनी सेवामें ही रखना स्वीकार कर लिया। गुरुदेव का सारा ही लिखने पढने का काम रहस्य मंत्री के रुपमें आप ही करते थे।

सर्वगुण सम्पन्न धर्मधुरन्धर गुरुश्री विजयानन्दसूरि श्री आत्मारामजी की सेवामें रहकर आपने जैन शास्त्रोंका बडी अच्छी तरहसे अभ्यास किया। और अपने जीवनको मुकम्मल बनाया, गुरुमहाराज श्री आत्मारामजी महाराजको पूरा विश्वास था कि जैन धर्म और जैन समाजकी उन्नति इस शिष्यसे होगी।

स्वर्गीय गुरुदेव श्री आत्मारामजी महाराजकी अन्तिम समय की इच्छा के अनुसार लाहोर शहेर में पंजाब वगेरह भारत वर्षके श्रीसंघने बडे बडे विद्वान महात्माओं की सम्मति से सं. १९८१ में आपको आचार्य पदवी प्रदान की गई।

आपश्रीजीने गुरुदेव की धर्मलगन, निर्मल चारित्र, प्रशस्य ज्ञान, तत्व दृष्टि, गम्भीरता, ब्रह्मतेज अपने जीवन में भर लिया।

आपकी शीतलता, अति नम्रता और साधारण स्वभाव भी तारिफ करने के योग्य हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपने मारवाड, मेवाड, गुजरात, मालवा वगेरा कइ देशोंको अपनी चरण धुली के स्पर्श से पवित्र किया लेकिन ज्यादातर आपका धर्म उपदेश गुरु आत्मारामजी महाराज की आखीरी समय की इच्छानुसार पंजाब ही रहा।

आपश्रीने गुरु महाराज श्री आत्मारामजी महाराज की आन्तरिक भावनाओंको मूर्तरुप दिया है। पंजाब में आपने स्वर्गीय गुरुदेव के नाम पर श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कोलेज अम्बाला, श्री पार्श्वनाथ विद्यालय वरकाणा, श्री आत्मानन्द जैन विद्यालय सादडी, श्री महावीर जैन विद्यालय बम्बई आदि कइ एक संस्थायें खुलवायी जिन में इस समय लाखों रुपये लग रहे हैं। इनके अतिरिक्त आपने कइ पाठशालायें खुलवाइ। अम्बाला और मालेरकोटला में आपने हाइस्कूल खुलवाये। लुधियाना, जंडियाला, होशियारपुर में मिडल स्कूल कायम किये। मेवाड और मारवाड में भी कइएक पाठशालायें स्थापित की।

आपकी कवित्व शक्ति भी अनूठी है। आपने कइएक पूजाओं की रचना करके हमारे पर बडा भारी उपकार किया है। आपका शिष्य समुदाय भी पूरी योग्यता वाला है। इससे आपके शिक्षण कार्यकी विशिष्टता साबीत होती है। आपके शिष्य श्री विवेकविजयजी महाराज बडे ही तपस्वी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैं और शास्त्रोंका स्वाध्याय करने वाले हैं। आपके शिष्य-रत्न आचार्य विजयललितसूरीजी मारवाड और गुजरात देशमें बडा उपकार कर रहे हैं।

आप जैन साधुके नियम पालने में पूरेपूरे समर्थ हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह साथ लोच करना यानि अपने हाथों से ही सिर के बाळ उखाडना सचमुच इतना त्याग कितना फळदायक होगा इसका अन्दाजा लगाना कठिन है।

आचार्य विजयवल्लभ पंजाब केशरी की कौन बराबरी करे जिन्होंने सैंकडो मुसलमान और सिख्खोंको मांस–शराब छुडाइ, कइ अजैनोंको भी सन्मार्ग पथ दिखाया। स्यालकोट जैसे शहर में भी जैन धर्मका झंडा बलन्द किया और प्रभुमन्दिर बनवाया। आप जैसे समर्थ महापुरुषका ही काम था कि स्यालकोट निवासी लाला कर्मचंद अग्र-वाल ओनररी मेजीस्ट्रेट और लाला दीवानचन्दजी खत्तरी जैसे आपके बडे भक्त बन गये।

सज्जनो! आचार्य भगवान की जिसमानी बनावट कुछ इतनी आकर्षक है। आपकी वाणी में इतना असर है कि मामूली ईन्सान तो क्या राजा–महाराजाओं तक भी आपके चरणोंके पूजारी बन बैठे हैं। महाराजा बडोदा,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराजा नाभा, महाराजा नान्दोद, महाराजा जेसलमेर, महाराजा उदयपुर, नवाब साहब पालणपुर, नवाब साहब मांगरोल आपके बडे भक्त हैं। जो एकवार आपका व्याख्यान सुन लेता है दूसरी वार सुनने की जरुर इच्छा रखता है।

असर बहाने का प्यारे तेरी कलाम में है।
किसीकी आंख में जादू तेरी जबान में है ॥

दिल तो चाहता है घंटो नहीं बल्कि सालों एसे महात्मा के–जो कि अपने खूनका हर एक कतरा अपने देश और कौम की अमानत समजते है, गुनगान करता रहुं।

लेकिन बस............इतना ही..............बाकी फिर कभी............

आचार्य भगवान बहतर (७२) वर्ष पूरे करके आजके शुभ दिन ७३ वें वर्ष में प्रविष्ट हुए हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि आपकी आयु दीर्घ हो।

तुम सलामत रहो हजार वरस।
हर वरसके हों दिन पचास हजार ॥

है शक्ति थोडी सब गुनोंको आपके कैसे कहूं।
होगा न जैनाचार्य दूजा आप मुनि जैसे रहे ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपके ७१ वें जन्मदिन की खुशी में आपश्रीजी की ही कृपासे और पं. श्री समुद्रविजयजी गणीके सद्उपदेश से पट्टी के विखरे हुए मोती रुपी नवयुवकोंको इकट्ठे करके एक मंडळ स्थापन किया है। मंडळ आप आचार्य महाराज से प्रार्थना करता है कि आप हमें एसा शुभ आशीर्वाद दें जिससे हम हर प्राणी मात्रकी सेवा करनेके योग्य बनें।

आपके तुच्छ सेवक,
मुलखराज जैन शराफ
प्रधान—श्री आत्मवल्लभ जैन सेवक मंडळ, पट्टी

---

(२७)

❀ मान—पत्र ❀

(पंजाबी भाषा में)

मैं अनजान नादान जहान अड्या।
लिखां मानपत्र तांडा मान कर के॥
तांडी जानतों जान कुर्बान साडी।
साडी जान जाणे अपणी जान करके॥
जैन कोमकी तुं साने जग मोहया।
नरम तबाते मिट्ठी जबान करके॥
मैं कुर्बान जावां सौ सौ वार तेतों।
बैठा तूं न कदी अभिमान करके॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन कौमतों आपेनूं वार के ते ।
तुसां दस्सिया दिल्ल कुर्बानियां दा ।
जिंद सोहल जही रोल के विच मिट्टी,
सोहना बीज बोया महेरबानियां दा ॥

तुसां असांदी रहबरी फर्ज जाता ।
खादिम असींता हियो महेरबान देहां ॥

साया आपदा कायम रहे हशर तिकन् ।
तेरे सांये हेठां मौजां मान देहां ॥
बाद रब्ब सहारा इस कौम ताइं ।
बस आपदा है असीं जान देहां ॥

जलवा रबदा आप बिच नजर औंदा ।
अक्खां खोलके जदों पिछान देहां ॥

लख्खां मंदिरने तुसां तामीर की ते,
सोहणे सुखन दे नाल माजून देनाल ।
जैन कौम दी खेतीनूं सिंज दित्ता,
इवज पानी दे अपने खून दे नाल ॥

नाहरा धर्मदा तुसीं बुलंद कीता ।
सुत्ती कौम मुडफेर जगावणे नूं ॥

उस कम्मनूं तोड चढा दित्ता ।
आये जिस दे तोड चढावणे नूं ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रब्ब भेजया खास हम दर्द करके।
साडी विगडी फेर बनावणे नूं ॥
तुसी बत्ती जुआनीदी वट्ट दित्ती।
सच्चे धर्मदी शमा जलावणे नूं ॥
जो वी आइयां मुसीबतां जल्ल लैयां,
चित्त तुसांदा प्रीतमा डोल याना।
रुख्खी मिस्सी खा शुकर गुजार कीता,
चंगा चोसडा कदे वीटोलया ना ॥
हर इक विच जानके राज इकदा।
हर इकनूं इक ही जान देओ ॥
बेशक धर्मदी बस्ती दे हो सूरज।
तुसीं चन्द पर साडे जहान देओ ॥
मेहरो माह दिआं खूबियां विच तांडे।
सिरर आप कोइ आसमान देओ ॥
रकख कौम दी रख्खके दस्स दित्ती।
हो इनसान ए पर उच्ची शान देओ ॥
सानू कैद जहालत विच देख केते,
कइ कोलेज ईस्कूल बना दित्ते।
सानुं गंदयों बन्दे बणो न दे लइ,
दम दमा दे तुसांने ला दित्ते ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सानूं प्रेम दे रंग विच रंग दित्ता।
तेरे प्रीतमा वे ! पीले चोलडेने ॥
दुःख दर्द असां दे दूर कीत्ते।
तेरे मुख डे आलडे भोलडेने।

कुल्लां वांग जहान विच मैंक देने।
शीरीं सुखन जो तुसांने बोलडेने ॥

तेरा कर्ज नहीं कदी चुका सकदे।
तेरी कौम वाले तेरे गोल डेने ॥

दर्दमंद बन वंडके दर्द सबदा,
सीना देशने कौमदा ठार दित्ता।
बेडा अपना सौंपके रब्ब लेखे,
बेडा डुबदी कौमदा तार दित्ता ॥

रक्षा देश ते कौमदी करण वाले।
आप रक्खया करे भगवान तेरी ॥

एह ओर कालब हुन धर्म ते जोश वाले,
जिन्हां कालबां विच ही जान तेरी ॥

पालन हार या सच्चया मालियावे।
हैं दुहाइ अंदर गुलिस्तान तेरी ॥
चहक रही ओसे गुलिस्तान अंदर।
है एह एक बुलबुल शना खुवान तेरी ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मेरी कलम की करे तारीफ तांडी,
सिफतां तांडियां जगतों न्यारियांने।
लिख लिख सिफत औसाफ जनाबसन्दी,
डी एम कलमां जहान दियां–हारियांने॥

डी. एम. जालन्धरी–लुधियाना

अर्पण करने वाले,
चरण सेवक वीरचंद व खजानचीलाल जैन, लुधियाना

---

(२८)

श्री वीतरागाय नमः

अभिनन्दन–पत्र

परम पूज्य प्रातःस्मरणीय अज्ञान तिमिर तरणी कलिकाल कल्पतरु पंजाब केशरी जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज के चरण कमलों में
'अभिनन्दन पत्र'

अहालियाने शहर गुजरांवाला बिल अमूम और गुजरांवाला निवासी जैनी, बिल खसूस जिस मुबारिक दिन और नेक सायतकी निहायत जरको शौकसे इन्तजार कर रहे थे वोह मुबारक दिन आ पहुंचा। गुजरांवाला शहर शेरे पंजाब श्री हजूर महाराणा रणजितसिंह बहादुर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की जन्मभूमि और परम पूज्य प्रातःस्मरणीय जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयानन्दसूरिश्वर (गुरु आत्मारामजी) महाराज के स्वर्गस्थान होने के सबब तीर्थभूमि है। एसे पवित्र नगर की जैन कौमका आज परम सौभाग्य है कि जिन चरण कमलों की बहुत देरसे इन्तजार कर रहे थे, जिस दर्शन रुप परम पवित्र जल सिंचन के विना गुजरांवाला जैन कौम रुपी चमन मुर्जाया जा रहा था, और जिन पवित्र चरण कमलों के विना धर्मके इस गुलशन की शोभा फीकी हो रही थी आज हम अपनी विशाल भक्ति रुपी चादरको बिछा कर प्रेम जल से अभिषेक करते हुए अपनी हृदय भूमिमें आचार्य विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज जैसी नेक सुरत व पाक हस्ती के चरणों का बहुत आनन्द और खुशी के साथ स्वागत कर रहे हैं।

वन्दनीय आचार्य भगवान् !

सोलां सालके तवील अरसे के बाद बम्बई, गुजरात, सौराष्ट्र, मेवाड, मारवाड वगैरह सूबों में पैदल सफर करते हुए और जैन समाजको एक आदर्श समाज बनाते हुए आज इस पवित्र स्थान में महब्बत, प्रेम, उल्फत, इत्तफाक इत्तहाद और यगानगतका पैगाम लेकर हम भक्तों के नम्र निवेदन को सन्मान देते हुए आपश्रीने जो यहां पधारने की कृपा की है उससे हमारे हृदय आनन्द से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गदगद हो रहे हैं। और परम प्रभावक श्री शासनदेव की कृपासे हमारी तमाम अभिलाषायें पूरी हो रही हैं।

आज यकीनन हमारे सौभाग्य सूर्य का उदय हुआ है। आज आपश्रीजी के इस प्रेमने जगत उद्धारक अहिंसा के पेगम्बर भगवान श्री महावीर स्वामीजी के चन्डकोशिक आदि जीवों के उद्धार करने, भगवान श्री रामचंद्रजी महाराज के भीलनी के भक्ति भरे बेर खाने और श्री कृष्णजी महाराज और सुदामाका प्रेम के उच्च आदर्श की हम सबको सचमुच याद दिलादी है।

धर्मोद्धारक !

यह आप जैसो पाकीजा और पवित्र हस्तीका ही काम था कि नौजवान उमर में सारे दुनियावी एशो-आराम पर लात मार कर फकीरी, फाकाकशी, कनायत और रियांजत को ही अपनी जिन्दगी का असूल बना लिया और अपने जीवनको सच्चे जैन धर्म के प्रकाश में कुर्बान कर दिया। जैन धर्मकी अजमत और पाकीजगी को बरकरार रखने के लिये हजारहा तकलीफ बर्दास्त की और बडे भारी कष्ठ उठाये मगर तबीयत पर किसी वख्त भी जरा मलाल नहीं आया। आपश्रीजीका चरित्र निहा-यत जब्रदस्त निहायत बलन्द और तर्जे अमल निहायत काबले तारीफ है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीजीका जीवन कौमका जीवन है, आपकी हर घडी और हर लहमा धर्म ओर समाज की नजर होता है। आपकी देशसेवा भी किसी बडी से बडी हस्तीसे कम नहीं है। आपका सत्य उपदेश जादुका सा असर रखता है। आपश्रीजी दरुस्त मान्हों में जैन समाज के सरताज हैं। जैनी आपश्रीजी के अहसानात का जितना भी शुकरिया गायें थोडा है। उनकी आंखों में आपश्रीजी की सूरत बसी हुइ हैं और उनके दिलों में आपश्री के लिये भक्ति और श्रद्धा कूटकूट कर भरी है।

आंख में सूरत तेरी लबपै अफसरना तेरा।
मैं भी दिवाना तेरा दिल भी दिवाना तेरा॥

वन्दनीय गुरुभक्त गुरुदेव !

हम पंजाबोयोंको इस बातका फखर है कि पंजाब की पवित्र भूमिने परम तपस्वी धर्म दिवाकर पूज्य मुनिश्री बूटेरायजी महाराज, गणिश्री मूलचन्दजी महाराज, शांत-मूर्ति श्री वृद्धिचंद्रजी महाराज और देशोद्धारक न्यायाम्भो-निधि जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयानन्दसूरीश्वरजी-आत्मारामजी महाराज जैसे अनमोल रत्न पैदा किये। इन रत्नोंने जैन धर्मका जो प्रकाश हिन्दोस्तान भरमें और ख़ास कर पंजाब प्रान्त में किया है उस प्रकाशको आप-श्रीजीने अपनी सेवाओंसे चार चान्द लगा दिये हैं और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अपने गुरुदेव की अन्तिम आज्ञानुसार पंजाबकी बागडोर अपने मुबारक हाथ में लेकर जो कुर्बानियां आपश्रीजीने हमारे लिये की हैं उनके लिये हम हमेशाह आभारी रहेंगे। गुरुदेव के चमत्कारी नाम पर जैन समाजमें इत-फाक और इत्तहाद पैदा करने और संगठन के जरीए सामाजिक बलको बढाने के लिये पंजाब में जगह जगह पर श्री आत्मानन्द जैन सभाअें खोलीं जिन सबका अल-हाक आपश्री के उपदेशसे पंजाब के जैनियोकी वाहद नमाइंदावाडी श्री आत्मानन्द जैन महासभा पंजाबसे हुआ। श्री आत्मानन्द जैन महासभा पंजाब एक एसी हस्ती है जिसने इस वख्त जैन संगठन को मजबूत करनेका बीडा उठाया है, और पंजाब के खफताह जैनियोंको बेदार किया है। बिखरी हुई ताकतोंको इकट्ठा करके बुराइयों की बेख-कनी करके आहिस्ता आहिस्ता लेकिन यकीनी तौर पर तरक्की की तरफ कदम उठाने के लिये हम जैनियोंको तैयार किया है। यह महासभा जैन समाज में सोश्यल और मजहबी असलाह करके हम सबकी इज्जत और वकार को बढानेका एक बहुत भारी जरीया है।

इसी तरह आपश्रीजीने अपने गुरुदेवके उपदेश के मुताबिक श्री पवित्र जैन धर्म की आराधना के लिये अनेक स्थानों पर आकाशसे बातें करनेवाले जैन मन्दिर बनवा कर अपने धर्म और गुरुप्रेम रुपी सूर्यको संसार में प्रकाशित किया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। गुरुदेव के ज्ञानप्रचार की दिली खुआइशको पूरा करनेके लिये आपश्रीजीने बम्बई, गुजरात, सौराष्ट, मेवाड, मारवाड, यूपी और पंजाब में अपने गुरुके नाम पर अनेक शिक्षण संस्थायें और तालीमी दर्सगाहें कायम करके इस बातका जिन्दा सबूत किया है कि अपने गुरुदेवके असूलोंकी सही तर्जमानी करते हुए आपश्रीजी जैन समाज में किसीको अनपढ देखना नहीं चाहते। पंजाबमें अलावा कइ मिडल और हाईस्कूलों के श्री आत्मानन्द जैन कोलेज अम्बाला और हिन्दोस्तानभर में अपने ढंगकी एक आझाद संस्था श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब-गुजरांवाला के कायम करने में आपश्रीजीने जो शानदार कुर्बानियां की हैं वोह किसीसे पौशिदा नहीं हैं। गुरुभक्ति की साक्षात् मूर्ति आपश्रीजी के भक्त होनेका सौभाग्य प्राप्त कर हम अपने आपको धन्य समजते हैं।

“ गुरुभक्ति में है पाया तुझे एक मर्द लासानी।
अंजामें फर्जमें अपने तेरी है सच्ची कुर्बानी॥ ”

परम उपकारी आचार्य भगवान्!

आपश्रीजी के चरणों का और आपश्री के परिवारका एकबार फिर हृदयसे स्वागत करते हैं। और श्री शासनदेवसे प्रार्थना करते हैं कि आपश्रीजी का साया हम सब पर वर्षों तक कायम रहे और आपश्रीजी की पवित्र छत्र-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छाया में हम अपनी आत्माओं का हमेशह कल्याण करते रहें। हम में सच्ची कुर्बानी की स्पिरिट पैदा हो और हम आप गुरुदेव के नाम पर सच्चे अहिंसा प्रधान जैन धर्मका झंडा लेकर मैदान में निकलें और धर्म-कौम और मुल्क की सेवा करने के काबिल बने।

हम हैं आपश्री के सच्चे सेवक,
श्वेताम्बर जैन संघ, गुजरांवाला।
३१ मई सन १९४०

---

(२९)

❁ मान-पत्र ❁

पवित्र सेवामें पूज्यपाद् देशसुधारक बालब्रह्मचारी जैनाचार्य
साधु शिरोमणी श्री १००८ श्रीमान
विजयवल्लभसूरिजी महाराज !

पूज्यश्री !

आपने ईस घोर गर्मीके मौसम में हमारी नगरी गुजरांवाला में पधार कर हमको अत्यन्त कृतार्थ किया है, जिसके लिये हम आपको धन्यवाद करते हुए आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। आप जैसे उच्च कोटिके विद्वान और भारत हितैषी त्यागमूर्ति के चरणकमल पडना हरएक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नगर व शहर के लिये बड़ा ही सौभाग्य है। आपकी मधुर वाणी और प्रेम भरे उपदेशों का चरचा भारत वर्ष के कोने कोने में है।

आपका जातीय हित सिर्फ जैन समाज के लिये ही नहीं बल्कि आपने एक सच्चे देश हितैषी की तरह सारी जनता ही को अपनाया हुआ है।

आपकी त्याग और कष्ट सहन की शक्ति ऐसी है कि जिसकी मिसाल ढूंढनेसे भी नहीं मिलती। आपके दिलमें अपने गुरुदेव स्वर्गीय श्रीमद् विजयानन्दसूरीजी महाराज के बताये हुए मार्ग पर चलने की लगन है। और आपने अपने जीवनसे संसार पर अच्छी तरह प्रगट कर दिया है कि मनुष्य मात्र किस तरह आदर्श जीवन व्यतीत कर सकता है।

मान्यवर आचार्य !

कइ साल हुए हमने आपके व्याख्यान सुने थे, उनके शब्द अब तक हमारे कोनों में गुंज रहे हैं और हमारी यह आशा रही है कि हम आपके बतलाये हुए धर्ममार्ग पर चलें। पूर्ण अहिंसा पालन करें और स्वदेशीका व्यापार और प्रचार करें। हम यह कहनेका साहस करते हैं कि अगर आपकी शिक्षा का पालन हर मनुष्य करे और आपके बतलाये हुए मार्ग पर चले तो न सिर्फ उसका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अपना ही जीवन सफल होगा, बल्कि भारत वर्ष का कल्याण हो जावेगा।

पूज्यश्रीजी !

आपकी स्थापित की हुइ संस्थाऐं महावीर जैन विद्यालय बम्बई, जैन कालिज अम्बाला, और हमारे शहरका जैन गुरुकुल आपके विद्याप्रेम का छोटासा नमूना हैं, सच तो यह है कि हम इस योग्य नहीं और हमारे पास शब्द नहीं कि हम आपके गुणोंका वर्णन कर सकें या आपके उन उपकारों को गिन सकें जो आपने भारतवर्ष के मनुष्य मात्र पर किये हैं और कर रहे हैं।

गुरुदेव !

वास्तव में आप त्याग और तपस्याका सूर्य है जिसकी ज्योतिसे लाखों दिलों में से अन्धकार दूर होता है और होता रहेगा। आशीर्वाद दीजीये कि हम आपके तुच्छ श्रद्धालु आपके बतलाये हुए मार्ग पर चलते हुए आपके चरण कमलों की धूल में बेठने के पात्र बन सकें।

प्रार्थना है कि हमारे श्रद्धा के यह टूटे फूटे शब्द स्वीकार करके हमको कृतार्थ किजीये।

श्रीजी ! हम हैं आपके श्रद्धालु मिम्बरान् जनरल
मर्चेन्टस, गुजरांवाला।
३१ मई १९४१

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(३०)

सपासनामा (मानपत्र)

बखिद्मते अक़्दस जनाब जैनाचार्य श्री
विजय वल्लभसूरिजी महाराज

आलिजाह !

हम मिम्बरान् हिन्दु पंचायत कसूर कोट रुकनदीनखां आपकी आमद पर आपको खुश आमदीद कहते हैं। मुद्दिते मदीद से आपकी इन्तेजारने व्याकुल कर दिया था, और सोलह सत्तरां सालकी तवील मुद्दितने आपकी याद मानिन्दे खुआब कर दी थी। नौजवानों की याद अयामे तिफलीकी तरह हो रही थी। अपने जैन भाइओंको वार हा इलतजा की जाती रही कि हजूर वल्लभसूरिजी कब जलवा नमा होंगे, और हमें उनके न्याज हासिल करनेका मौका कब नसीब होगा। परमात्मा का हजार वार शुकर है कि आखिर निराशा की घडियां आशा में नमूदार हूईं।

जनाब के तशरीफ लानेसे जो खुशी हम लोग अपने दिलों में महसूस कर रहे हैं वोह वह्म्द अजबयान है।

मोहतरिम बजुर्ग !

आपमें वोह खूबियां मौजूद हैं जो एक सच्चे रहनमा के लिए जरुरी हैं। दुनिया का हर समजदार और सही-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उल दमाग शख्स इस हकीकत से मुन्कर नहीं है कि ईन्सानी जिंदगी की कामयाबीका सही और दरुस्त अद्-मतशदद है। आप इस फलसफा के अलम बरदार हैं। और मुल्क के कोने कोने में इसका प्रचार कर रहे हैं। इस आत्मिक खूबीकी वजहसे हमारे सर आपके सामने झूके हुए हैं। और श्रद्धाके तौर पर यह सपासनामा पेश करनेकी इज्जत हासल कर रहे हैं।

रहनमाए कौम !

आपने जिन्दगी के मजे और गृहस्थ की अैश पर-स्तीयोंको अवायल उमरसे ही लात मार दी। आपकी सादा जिंदगी और शुद्ध आचार इस बातका अमली नमूना है " बडी मुशकिल कठन फकीरी ज्युं दियां ही मर जावनां " और आपका सारे हिन्दोस्तान का पैदल सफर करना इस बातका सबूत है कि आपको दुनियावी आरामसे कोइ महब्बत नही, और इसके लिये दिलमें कोइ ख्वाहिश नहीं।

" आपकी इल्मी खिदमात् "

मोहतरिम वजुर्गवार ! आप इल्मीकाबलीयत में शोह-राए आफाक हैं और भारत वर्ष में एक दरखशां सितारे हैं। विद्यालय गुरुकुल और कोलिज वगेरह इस बातके शाहद हैं कि आपको इल्मसे कितनी उन्नस है। वर्दीबजह हम मजबूर हैं कि हम आपकी खिदमत में अकीदतके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फूल पेश करें। हमें यह मालुम है कि जनाब एक खास मजहबी जमायत (जैन मजहब) से ताल्लुक रखते हैं। और हमारे ख्याल में आप जैसे मजहबी बजुर्ग हर फर्दोबशर के लिए यकसां काबले ताजीम हैं। इस लिये हम पूरा यकीन रखते हैं कि आं जनाबकी बलंद पाया नसीहतें हमें और अहले शहर के लिये सची रहन्माइका मूजब होंगी, और जनाब के तशरिफ लानेसे शहर के मुख्तलिफ फिरकों में प्रेम और इत्तहाद की रूह फूंकी जायगी। और सब लोग आपस में भाइओं की तरह रहना सीखेंगे। इस लिये हम परमात्मा के हजूर में दुआगो हैं कि आपकी हयात अरसादराज तक रहे।

तुम रहो सलामत हजार वरस,
हर वरसके हों दिन पचास हजार।

हिंदु पंचायत कसूर कोट रुकदीनखां

अनन्तराम महता बी. ए. सैक्रेटरी।
२०-२-४२

(३१)

"ऐड्रस" (मानपत्र)

सेवामें परम पूज्य पंजाब केसरी जैनाचार्य १००८ श्रीमद् विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज आपकी आमद पर हम कसूर निवासी जिस कदर भी फखर करें कम है। आप इस नगरी में १६ साल के तवील अर्सेके बाद बमये अपने मुनिमंडल के पधार रहे हैं। आप त्याग और भक्ति की जिन्दा मिसाल हैं, आपके उपदेश से हजारों नरनारी फैजयाब हो रहे हैं। आपने पैदल सफर करते हुए सारे भारतवर्ष के कोने कोनेमें अहिंसाका प्रचार करके भगवान महावीर के पैगामको हर फर्दो बशर तक पहुंचाया, आप श्रीजी की जिन्दगी का हरएक लहमा कौमकी बेहतरी और बहबूदीमें सर्फ हो रहा है। आप कौमके हकीकी रहनुमा हैं। और तारीकी दुनिया में रोशनी के मीनार हैं। आपने मखलूक की निष्काम सेवाके लिए जो घोर तपस्या की है और अयामे जवानी में दुनियावी ऐशो आरामको लात मार कर त्यागकी जिन्दगी अखत्यार की और कौम के लिए तरह तरह की तकलीफ बरदास्त करके कौमको जाग्रत किया है, और जो जो उपकार अपने जैन समाज पर किये हैं उसका अहसान हम तो क्या आइन्दा आने वाली नसलें भी न भूल सकेंगी। आपश्रीजी के कारनामे आइन्दा तारीख में सुनहरी हर्फों में लिखे जायेंगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुरुभक्त गुरुवर !

आपकी हमेशांह यह नेक ख्वाहिश रही है कि परम गुरुदेव जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्री विजयानन्द सूरीश्वर (अलमारुफ आत्मारामजी) महाराज के मिशनको पूरा किया जाये। चुनांचे आपके ही उपदेश का असर है कि आज हम जगह व जगह जैन मन्दिर और पाठशालायें देख रहे हैं। जिससे हजारों जैन अजैन इल्म रुपी खजानेसे फैजयाब हो रहे हैं। आपश्रीजी के पवित्र उपदेशका ही नतीजा है कि आज श्री महावीर जैन विद्यालय बम्बई, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला, श्री आत्मानन्द जैन कोलिज अम्बाला, श्री आत्मानन्द जैन हाई व मिडल स्कूल अम्बाला व मालेरकोटला, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा, श्री आत्मानन्द जैन मिडल स्कूल, लुधियाना, व जंडीयाला व होशियारपुर, श्री आत्मानन्द जैन विद्यालय सादडी, श्री आत्मानन्द जैन लाइब्रेरी पूना ब जूनागढ वगैरह और आप ही के मुबारिक कदम के सबबसे हम जगह व जगह पाठशालायें व रीडींग रुम देख रहे हैं, जिससे आम पबलिक फायदा उठा रही है। आप इतने अनथक काम करने वाले रहबर होते हुए अपने नामको रोशन करनेकी पर्वाह नहीं करते। आपने जितनी भी संस्थायें अपने दस्ते मुबारिकसे जारी की अपने गुरु जैनाचार्य श्री विजयानन्द (अलमारुफ आत्मारामजी) महाराज के नामसे जारी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की हैं। आपश्रीजीने सच्चे मान्हों में गुरूदेवकी आशाको पूर्ण कर दिखलाया है। जैन कोमको फखर है कि जिस तरह आपके गुरुदेव विद्वान थे और जिन मुश्कलात में पंजाब में उन्होंने धर्मका बीज बोया था सो वाकई आपने उसी तरह सही मान्हों में एक जिन्दा मिशाल कायम कर दी है।

पंजाब केसरी जैनाचार्य !

पंजाब श्री संघ पर जब कभी संकट आये आपश्री-जीने हमारी रक्षा की। आपके उपदेश में वोह जादू है जिससे बडे बडे विद्वान ओर हठ धर्मी भी आपके सामने सरे तसलीम खम करने पर मजबूर हो जाते हैं। आपश्री-जीके उपदेशसे हजारों मांसाहारी भाइयोंने मांस का त्याग कर दिया जिनमें हिन्दुओंके अलावा मुसलमान और सिक्ख भाई भी सामिल हैं। खम्भात, रायकोट और गुजरांवाला वगैरह में जब आप उपदेश दे रहे थे तो आपके उपदेशसे छमच्छरी के दिन कस्साबोंने दुकानें बन्द रक्खीं।

प्यारे गुरुदेव !

हमारी हार्दिक भावना है कि जिस तरह आपके उप-देशसे हजारों नरनारी फैजयाब हुए हैं कसूर निवासी भी उसी तरह इच्छा रखते हैं कि आप अपने उपदेश और अमृत वाणीसे हमें मुस्तफीद फर्मावेंगे। ताकि हम भी लाभ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उठा सकें। और हम हाथ जोड कर शासनदेवसे प्रार्थना करते हैं कि आपका साया चिरकाल तक रहे।

अहिंसाके पूजारी आचार्यश्रीजी !

हम आपका खैर मुकद्दम आपकी शानके मुताबिक नहीं कर सके इस लिये हम मुआफोके खुआस्तगार है और तशरीफ आवरी पर मुकर्रर शुक्रिया अदा करते हैं।

हम हैं आपके चरणोंके सेवक,

मिम्बरान् श्री जैन नवयुवक मंडल। कसूर–पंजाब.

२० फर्वरी सन १९४२

---

(३२)

वल्लभ–कहानी

[आओ बच्चों तुम्हें बताएँ झाँकी हिन्दुस्तानकी–जागृति]

आतम–वल्लभ की सुनो कहानी जो जिन–सेवक प्राण की
नमन करो रे वीरजनों की गाई महिमा ज्ञान की
वंदे वल्लभम्–वंदे वल्लभम्

[१]

रथी महारथी औ संतो का गुजरात देश विराट है
कुमारपाल–विमल मंत्री की भूमि यह विशाल है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उदयन रे मुंजाल महान् का कण कण गाता गीत
हेमचंद्र औ यशोविजय की बिछी चहुं ओर प्रीत है
कहना पर्वराज अरवली कथा संस्कृति-शान की
अिस भूमिका कवन करो यह साधन है कल्याण की
वंदे वल्लभम्-वद वल्लभम्

[२]

वटप्रद नगरों में सुंदर नाज अिसे निज आन पे
शेठ दीप और बाई अिच्छा जीवन बिताये मान से
छगनलाल बन गुरूवरने रे कुल दीपाया शान से
पुत्रधर्म का पालन करते लगन लगाई जिन-नाम से
धर्म ध्यान पूजन अर्चनमें बाजी लगाई जानकी
नमन करो रे वीर-जनो को गाई महिमा ज्ञान की
वंदे वल्लभम्-वंदे वल्लभम्

[३]

आतमके अद्भुत प्रभावसे बाल छगन मन डोला था
जिनवर नामके महामंत्रसे रात-दिन रस-घोला था
रे विषमता लख कदम कदम पर उठा त्यागका शोला था
मुनि हर्ष के चरणों में गिर बदला जो निज चोला था
बन वल्लभ फिर सेवा-कार्यसे की रक्षा लक्ष्मी-आन की
नमन करो रे वीरजनों को गाई महिमा ज्ञान की
वंदे वल्लभम्-वंदे वल्लभम्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

[४]

महावीर जैन विद्यालय देखो भरे ज्ञान की झोलियाँ
अंबाला–वरकाणा गावें गुरूवर–गुनकी लोरियाँ
ज्ञानदाता ओ जैनोद्धारक ! हर–जन बोले बोलियाँ
शासन–पालक, पंजाब केसरी बने धर्म के पोरियाँ
ललित–कस्तुर–समुद्र महान् रे शिष्य परंपरा आपकी
नमन करो रे विरजनो जो गाई महिमा ज्ञानकी
वंदे वल्लभम्–वंदे वल्लभम्

[५]

आतम–पट्टधर युगवीर ओ ! हर पल मनमें भाते हो
आर्य–संस्कृति चाहक वल्लभ ! अहिंसा–नाद गूंजाते हो
विश्वहितैषी, जिनविचारक यश–गाथा तव गाते हैं
अलख लगा कर तेरे नामकी पूर्णानन्द फिर पाते हैं
पुण्यविजयजी विवेक विशुद्ध रे करते वृद्धि तेरे काम की
नमन करो रे वीरजनों को गाई महिमा ज्ञानकी
वंदे वल्लभम्–वंदे वल्लभम्

—रंजन परमार

समाप्त

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संगठन

यदि क्रियाकांड विविध हों, गच्छ जुदे जुदे हों, जुदे जुदे प्रांत के हों, आचार्य भी जुदे जुदे हों, विचारों में थोडा सा अंतर हो, फिर भी भगवान महावीर के पुत्र के नाते हमें संगठन साधना चाहिये।

संगठन द्वारा जैन समाज का उद्योत करना चाहिये, संगठन के सिवा जैन धर्म का ह्रास हो रहा है। संगठन से चमत्कार होगा, समाज बलिष्ट होगा, संगठन के सिवा हमारा उद्धार और उत्कर्ष का कोई रास्ता नहीं. भगवान महावीर के पुत्रों को संगठित होकर जैन धर्म को विश्वधर्म बनाना होगा।

वल्लभ-वाणी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय का संदेश

—— × ——

आज मध्यम वर्ग की दशा का विचार करो ! पेटपूर खाने को रोटी नहीं, पहनने को कपडे नहीं, रोगी को दवा नहीं, युवानों को रहने, खाने-पीने का कोइ स्थान नहीं, रोटी-रोजी नहीं। बालको कों ज्ञान देने के लिये कोडी भी नहीं। दिन-प्रतिदिन समाज का मध्यम वर्ग खोखला हो रहा है।

जैन समाज के प्राण आचार्य प्रवरादि और समाज के अग्रगण्य धुरंधर कार्यकर्तागण समय का संदेश सुन कर समाज उत्कर्ष का रचनात्मक कार्य कब करेंगे ?

वल्लभ वाणी

× × ×

स्वामी भाई की सेवा

कम खाना पडे तो कम खा कर, कपडों में थोड़ी करकसर करके, मोजशोख कम करके, खर्चा भी घटा कर, संग्रहवृत्ति का त्याग कर, पेसा-पेसा, रुपीया-रुपीया बचा कर-एकत्रित कर, स्वामी भाईओं को काम, रोजी, रोटी, ज्ञान देकर सहायता करो, जैन समाज के मध्यमवर्ग को बलवान बना कर जैन धर्म की शक्ति बढाओ। एक एक कुटुंब दूसरे का ख्याल रखे। लाखों के दानेश्वरी अपने स्वामी भाईओं को कैसे भूलें।

वल्लभ वाणी

બી. પી. પ્રેસ : પાલીતાણા.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust